मপड़ी नाहेक।



প্রেখন কার্য :

ভামিদার

जीवृष्ठ वांतु अवक्रक मृत्याशायात्र रत्हावत्वत

आदमरन

প্রতারকচন্দ্র চূড়াসণি

প্ৰশীত :

कविषाचा।

काकत यरक जीशंशनहत्र हजार्याई बात्री

मृक्षिक।

मद्दंद ३७३८ ।

तुनकी माष्ट्रस्य व्यवम खान, व्यनीख, मुख्यिक व क्षेत्राविक इरेन । উন্দুর্লীড়া-নগরনিবাদি মহাসম্ভাত জমিলার আলার প্রসঙ্গর জীলজীযুত বাবু জয়কুক মুখোপাধ্যায় মহোদয়, এই নটিক রচিতে ্পামাকৈ অনুমতি করেন, ভরতুলারে আমি ইয়া এখড করিবাছি : 🕽 •বর্জুমানকালে, বাঙ্গালেশে যে দক্তা কলাচার ও কুরার্চার ठींनाफटक, विरमयणः, दह्यविवाह मध्याख व्य मक्न अन्ताहात परि-े एक इ. नोवाकरण सिर्वे मनल क्षानील कराहे, बरे मले ही नोवेर सुन • महलात्न्त्रः । किन्तु, छविवद्य व्यापि क्षत्रभूत भयान्त कृतकारी। र्हेटल প্রীরিমাছি, বলিংত পারিনা। আমি, অতি সামাঝ্য মনুষ্ট আবি ं कि ? महाक्दि कानिनामहै, डाँहांत्र अख्यित मक्छन पाँगेटक साब-भारतत अदे डेकि कतिवारकृत।

শ্লাপরিতোতিত্বাং, ন সাধু মনো প্রবোগ বিজ্ঞানম্। বলবদ্ধি; শিক্ষিতান। মাখন্যপ্রতায়ং চেতঃ॥ ,,

পরিতু পাঁচক মহাশয়গণের সভোষ্ট রাজপ্রণেতার নৈপুণ্ Ward !

याहा इडेक, अकरन, आधात अहेगाता रक्ता,लनशहि लाधिक मही-च्यायतन, व्यस्थार महकारत अरे नाष्ट्रिक अरु अक्रवात मुक्शास कति (यह नम्स पहिल्यम मस्न र्म।

কুডজ্ঞচিতে অশীকার করিডেছি " ভাষর সম্পাদক প্রীযুত গৌরী-भक्कत छर्कदात्रीम ভर्णाहार्यः महामन्न अहे भूखक, विश्वित नित्राह्म । 🗥

এই মাটক আমার সম্পত্তি বিশেষঃ অতএর সাধারণ নমীপে নিবে-सम हैंहा ,त्कृष्ट मूखांकिक कतिरवन ना, कतिरक हास्त्रवादत नसनीत रहेरवन ।

आयात कुछ, त्रवायमी अवः माहिक मर्शन वि दर परम विकास हहे-खाइ, वहे शुक्रक काहे काहे क्रण अव^द खखाख मजाल काहाति निकीण रहेद्दक, मुना ३ माछ।

Sea () रेड (भीष र्

मण्डी नाहक।

প্ৰথম ভাষ্ট

a | 14 |

ত্রিপদী।

জয় জয় দখাসয়ৣ!, বিশ্বয় দুশা নয়,
কে বিহ্নিবে তোমার স্বরূপ।
নয়ঃ প্রভু লগদীশ , তুমি সুধা তুমি বিষ,
বেদে বলে তোমারে অসুপ॥
তন্ত চিন্তা পরতন্ত্র, করে কত বড়যন্ত্র,
মন্ত্রণ। যন্ত্রণ। পাল ভাবি।
ব্যস্ত হয়ের দরশন, করে সুক্ষা দরশন,
তথাপি ও ভাবে নয় ভাবী॥
ন্যায় পাগলের ন্যায়, কত করে ন্যায়ান্যায়,
সাংখ্য করে অসংখ্য সন্ধান।
বিনি পুণ্য পাতঞ্জনী, হইলেন কুডাঞ্জলি,
তব্য তব না পান সন্ধানা

बिनिदेन त्य किन्नु क्षेत्र, छाइटिंछ भीगारना नह रेवरमधिक मा आत्म विरम्ध । ভার কার ঠাই, বল তব তত্ত্ব পাই, সত্তা যাত্র মানি অবশেষ। এক। চতুমুখ হয়ে। ভোমার মহিমা কয়ে। ন। পারিলা করিবারে শেষ। কি ক্ব সুধালো জীব, এই ভাবি সদাশিব, লইলেন পাগলের বেশ N অনস্থ না অন্ত পেয়ে, পাতালে পলান থেয়ে, মাখায় করিল বিশ্পুর। नरलम "ज्ञान भिन, अह विश्व स्थ चीद!, ্তাহার মহিমা ক্তু দূরণ। সামরা কি করি বেদ, বৈদ নাহি জানে ভেদ, পুরাণেতে ফুরাণ না খায়। তাই বলি দ্য়াময়!, - দীনে যদি দ্য়া হয়, তবে তরি এ যোর মায়ার॥ তান্ লয় রাগ ভূমি, নটের নাগর তুমি, ু প্রবাও ভাগর আশা ভোর। ু ্ ছুর হর বিছ হয়, ওছে প্রভূ সার হরঃ ্ ভাগরে বাসর কর ভোর॥

अन्य स्थापना ।

मानी शार्ठ नवाशन स्ट्रेंटन गुजशात चित्रन "अडि अनत्य अपन्यान सहै उस्ति गणितम तित्रम स्वः ॥।

গণতী নাটক।

্রভার চারিদিকে দৃষ্টিপাত করিতে করিতে। হো সভাস্থগণের অক্তংকরণাকর্মণ ক্ইয়াছে।। ("হাঃ হাঃ হাঃ" শীর্ম হান্য করিয়া। না হুইবে কেন ।।

পয়ার।

বৈষ্যা চন্তা, স্কবি কেশরী যাঁর নাম।

বৈশের বাসের স্থান ঘাঁর চিন্ত ধাম।

করিলেন অত্মতি সেই গুণাকর।

রচিলেন সভাসদ স্কবি প্রবর ।

রচিলেন সভাসদ স্কবি প্রবর ।

সপত্নীর বিবরণ অতি মনোহর ।

ক্রান্তান্ত নই নটের অধ্যা।

কেন্দ্রা সফল হবে এ সকল প্রমা।

যাই, একাণে গৃহিনীকে ডাকিরা নাটা আরম্ভ করি।

(নেপণ্যের দিকে দৃষ্টিশাত করিয়া।

প্রিয়ে । यहथाপরুক্ত সজ্জা সমাপন করিয়। হরায় আইম।
(নগীর প্রবেশ)

নটা। আর্যাপুত্র ! এই এলোম, বলুন কি কর্মো।

হল। (হালা বদনে)। প্রিরে, এলো এলো, অহহ !

কি আশ্চর্যা শোভা হইয়াছে, প্রিরত্যে। ঐ দেখা দেখা

"ভোষার অপুর্বন সজ্জা দেখিয়া মৌদামিনী লক্ষায় ভাড়া

ভাড়ী মেঘাদ্রে সর্বাদ্ধ ঢাকিভেছে, মলয়াচল, মন্দ মন্দ্র গ্রহ

হল হারা ভোষার অল সোগজোর নিমিত্ত প্রিছ্ক চন্দন গ্রন্দ

উপহার দিতেছে। প্রভ্রু বিহ্ন চন্দ্র ক্রেনি বেশানা

मशंकी नाउँक।

শাধানা সভা নহে, মহা সভা। শানিয়াছ "স্তাতা নদীরু পারপারস্ত্রী স্থান্য নগরে সারলা দেশের নিরোভ্রণ সরুপ মহারাজ থৈয় চক্ত বসতি করেন "। তিনিই এই মহাসভার ভাষীশার, এ তাঁহারি নাট্যালয়।

निष्ण । (विश्विष्ठ इरेश)। हैं। हैं। तिरु तिरु !। योहात्क कार्यात्मत हें कराइन हाकाता दक साना करतन ! जासात्मत तिरामत क्रिविमा स्वरकता गाँकात नाथ श्रमिरत এककारन भूताकिक इन ;।

(कर्नभास अहिता को पूर्ण)

ভার পর ! ভার পর !।

খত। ঐ দেশ "ভারকারলী বিরাজিত পূর্ণশশ্বর সদৃশ শ্রীল শ্রীযুত অধিরাজ গণ্ডিত মণ্ডলী বিরাজিত হ**ইরাবিরা**জ করিতেছেন।

नमि। (वांकरभीत आख्नानिका रहेशा, क्षेत्रम योगरेन)।

প্রার।

হার রে সারলা দেশ কি সুথের দেশ।।
দেখি নাই শুনি নাই এমন সুদেশ।
সুখামর সুখামর নগর এখান।
হৈরিলে হরিব চিত্ত ভুড়ার পরান।
সভাতা সুখোর মদী নির্মালতা বারি।

मर्गकी माहिक्।

जिल्लाहरू **स्टेश्शानील देशक ग्रहांसाल ।** ' प्तिवडांक किनि चिनि करतन विताक ॥ गामनिदक शांचेतांनी त्रतियः समिक्षा 💛 🔻 रेटा रेटा ने किन यात एर क्या जिल्ल रैक्ट्रा इस किन्नती इंड्रेस करि। मित्रा । यात यादव **कां जिल्ला** या स्मृक द्वता । স্বামি, কর কিন্তর হুইর। পদ সার। পৌড়া ভারতের মুখ না হেরিব আর। কি কাম কি লাম খার কিবা লোম ভয়। रकक् त एन क्वि अतरवत सह। এদেশের প্রতি দ্বেদ ছেए করি ভূমি। বাস করি নাশ কর ভারতের ভূমি ! । गर्वेद्याः । गतक्षण कृतिशा श्रेकान । করিভেচ এদেশেতে বারোমাস বাস ? ॥ হিংসে! কেন এনেশেছে এড হিংনা ভোর।। কেবল করিলি বঙ্গে এ বন্ন ভোর ? ॥ গাৎস্থ্য । মাৎস্থ্য তে:.. ভারতের প্রতি ।। এই হেডু করিলিনা দারলো বদন্তি ! ৪ ভোদের ন। দেখি হেখা। রাজ্য পুশ সভে। মদ : ভোর মন্ত ভাৰ কেশল ভারতে ! : দূর হোক সে বৰ কথায় কাৰ নাই। পেড়েছি স্থখের দেশ ছাড়া ছাড়ী নাইৰ এদেশ ছাড়িয়া আর নাহি বাব দেবা। এদেশে করিব বাস ভিখারীর বেশেশ

সগড়ী সাটক।

अप्तरमें विकास क्या महास्त्र कि ।
भा इसे अशास शिया कतिन वर्गाठ ॥
भा इसे अशास शिया कतिन वर्गाठ ॥
भाइति कि जल नाई गाएह नाई পाछ। !।
साई वही छेशधारन चारक ना कि माछ। ?॥
योग कि शिति छहा हत कल छ्क्।
क्षिति कि नाहि इस जानत्मत सुग ?॥
जाराभुख ! जात शत ? जात शत !।

ভাষার সভাসদ কবি প্রবর প্রণীত সপত্নী নাটক যাত্র। দেখিতে উথেক ভাত এব তুমি জনায় সভাকে সম্ভবী করিতে মত্র বতী হও। আরু সংপ্রতি মুখমর বসন্ত সময় সমাগত। জুত এব ইনার। তোমার মুখে একটা বসন্ত সংক্তির শুনিতে বাস্না করেন। তুমি বসন্ত বিষয়ে একটু আলাপ রুর। নটা। যে আজ্ঞা আর্যপুত্র।।

ত্রিপদী।
কালের প্রধান কাল, সিয়া বসন্ত কাল,
ধরাপাল হইল ধরার।
ক্তাবের তাব যত, হয়ো তার। অনুগত,
অবিরত রাজগুণ গার॥
কোকিল নকীব বেশে, চরিয়া গগণ দেশে,
দেশে দেশে করিছে প্রচার।
এই সমাগরা ধরা, হলো এবে কুখতরা,
বসন্ত রাজার অধিকার।

मश्री ना हेक ।

আর কারে করি ভয়, অরি চর পরাজন, সুখ্মর ভরতের দেশ। হিল হিম ভীম বেদী, শিলির তাহার ছেবী, धताश्व करवार्ड अर्टम !! नत एक हिल यक, कात रहन करत यन, इंड यन करन शकांत्रन। रिशंक शाहेरल कुषा- जुशान हरेरल जुषा, रमनागंप रकाशी करत तप 🕻 ॥ দিনকর মহাতেজা, দেখিয়। নুভন রাজা, करत्न विश्वन कत मान। স্বংশ সম্ভব থারা: অভিমানী বড় ভারা; व्याप्तित रागान (नर्थ मानः। ক্লভান্ত বৃত্তান্ত শুনি, চিন্তাৰে অন্তবে স্তনি, লভিতে হাঙ্গার পুরস্থার। হায়ে তার আত্তাবহ, গল বহু গল বহু अङ्दर (मह उपन्ति। কি আর বর্তিন শেদ, স্থামর হলে। দেশ, কাৰেৰ ক্ট্ল দেশময়। করে সবে কুড়ুহল, ত্যাজি হিংসা হলাহল, मुःथ भन रेक्न भताकत। জাপনি জানক আসি, নাুনিল ক্রেশের রাশি, श्रि शिति खरम निश्क्त। ুকি ভাব হইল ভবে, গণ্ড গন্ধী আদি কৰে, 🐃 ৃহ্ইল রাজার জাজ্ঞাবশা।

ह आदछ टकर नात्र, शाह नारि किट्डा छात्र, म्बालियात ज्ञाहरू वानी।

मिनित बन्ने के निश्की जिस समार्थन ना हरेए हरेए छहे।

ছত । প্রিয়ে। সাধু সাধু; অতি উত্তম সংগীত করিয়াছ। अश्राक्त । जाहा ! अ दम्य तम्य । त्यामात विश्व वनन विश्व विश्व मर्गीक स्था अर्व कतिया मङादर्भव मकत्यारे श्वाविक रूह তেছেন; ভাবতেই নিজন; চিত্র পুতৃলিকার নাায় বসিয়া জাছেন! যাহ। হউক, প্রবয়িতি। চল চল ; একবে কানার। विनास इहें , बे (मर्थ, क्रिशी सरवंदा कामश्विनी, निजिन्नेनीत छ চঞ্চলার বেশ ধারণ করিয়। জাসিতেছে।

উভয়ের প্রস্থান।

(अन्न मकत तरमानानामास्त्र अखः थहः) ())

(कांगचिनी, निरुचिनी ७ हक्कांत्र खाद्य) (२) ष्टमणा। (अक रहाका छात्र हाटक कतिया, हाना वहरत)। কোথা লোবড় নৌ! আজ বড় যে তোকে আর দেখতে পাই দা ! হোক্না ভাই; আব কাছ কি কেউ কণ্ন চাক্রী करता राष्ट्री बाटन गां! छ। इत्लाई कि अब धूमुर्फ इह न।! निर्छ (शालाई कि जाँ ही एक शिल्ड इस ! महता हता (य, ছবে আৰু আর কথন খেল্ৰি !।

⁽३) वश्यक अध्यत्।

⁽२) धिकि वानिनी कूणीन कंछान्।, मत्वा, कांत्रविनी कांडा, निष्धिमी मधामा, हक्ला कनिहा, जिन मरहामहा, निष्ठ शिष्ट् कूल

मशकी माइसा।

कामित्रकी। कित्रकरमें। कि कि खीं। अमें खोशा यांक में। एएशा मरशा रि बात वीक्रिम ! की मानून, मिरनत दिना। अब मूम कि लो। जोत्र खावात नामा कान वांकी अरक्ष कम । किन्न खराह ना! अमें। नारक उन्हा दन्द कि ला। कि कान, निक्कि कृष्या निक्क एवं कराव वींक्रिया वींक्रिया की निका, कि खात को है कराव कीं।।

শিত্রিনী। (হাসিতে হারিতে)। রোন্টোই। রোন্ত, শুর্তিপু ফিরো যাওয়া হবে না বোনা আর আমর। সকলেই গিয়া ওর ঘরের ভেতর গোলমাল করি, দেনি, বৌ দুম ভেঙ্গো উঠো আযাদের দেখো কড়সড় হয় কি না !।

খনের কথা বল্তে কি ভাই। আল খেলা হোল্বা না হোক্, ভূধর দাদা কি এনো বৈশিক লেখেছে, ত. বিজ্ঞ সকল দেখ্তে হবে বোন।।

व्यक्ता । (गृह्णात्तर निकटि निहा गृहनाथ मृष्टि कामश्रिमी } विनिध्यभिष कतिप्राई मनिष्याहा) निव्यक्ति

अमा थे या पांपा तरगाएँ तो। कथा करक नहा । (जिन काषित्रा, शमित्व शमित्व निश्मुण यह मुखाद वाष्ट्रांचाकी ननाक निकरि अक्षान।)

मপতी नाहेरे।

(गग्ननाभाद्र)

(१) / कृषण ६ (मोहाभिमीत छारवण)। ः

তুপর। (লেলিমিনীর হত বাবে পূর্বাক বাল্পকণ্ঠ)।
প্রিরেণ উঠ উঠি, শান্ত হও লোদন সূহরণ করে আমার হৃদয়
নিনীর্গ কইরা ঘাইতোড়ে, জামি জার লোগার এ ছংখ দেখিতৈ পাদি না, শিরীষ কুসুমাপেশা ভোষার কোমল কলেবর ধুনি শ্রাল কি এ কট সহিতে পালে । চল জল, শ্রালার চলং বল বল, কি কারণ এত ক্লেল্য করিছেন। –কি কারণ ধরা শহন জনক্ষয় করিছেন।

ভিষতমে। তুমি তিলাদ্ধ আনাকে বিরস বদন দেখিকে

নককালে দশনিক গুনা দেখা আহার নিছে। পরিজ্ঞাগ কর,

কিন্তু এখন জানি ভোমার বোদন দেখিয়া এত ব্যাকুল ইই
পাতি, চন্দের জলে বক্ষাপথিত ভাষিয়া ঘাইতেছে, অভ্যক্রন
গ্রন্থিত ইইয়াছে, তথাপি তুমি কথা করিতেছ না কেন । হে
গ্রন্থিয়ানিক। কে ভোমাকে কি বলিরাছে, বক্ ভোমার কি

অবমাননা করিয়াছে। কি জনাই বা ভোমার এ অভিযান
ভাষ্যিছে। বল ভো গুনি।

হে মৃত্তাবিদি। এই মাত্র প্রতিংকালে হথন জাগি শ্যা। হইতে উঠিয়া বাহিবে ঘাই, তুমি হাস্য পরিপূর্ণ বদনে প্রথম বৈচনে বলিলে, "নাথ। জনেক দিনের পর তোমার চরণ ব্রোজ সন্দর্শন করিয়া আমার চিত্ত ভ্রমর চরিতার্থ হইয়াছে,"

अगणकत वर्ष्णामारम्य (कार्र भूख ७ (कार्र भूखत अभग की

मथही नाहेंकी

কারি ভোমাকে তিলান্ধ চজের আচাল করিতে ইন্ছ। ২৭ মান প্রাথিনি। আমিও লোমাল মত লাগৈছা ও বিহল কর্মাছি, এই মান্ধ বাছিরে বিনিলা কানেক দিলের পর প্রিল নাম্ব বাছির বিনিলা করে কুত্র নুত্র প্রভাগ কাইবা, আমোন প্রেটিত হুইয়া, কত নুত্র নুত্র প্রভাগ কাইবা, আমোন প্রিটিলাম্ব হুটাং গেলন তুলি আমান ক্রিক্স বিহিলাস্ব হুটাং কোন কাম্ব জানি লোমকল ক্রেত্হল পরিত্যাল পুর্বাক আন্ত কোন কাম্ব জ্বেল ভোমার বলন মুখানকর রন্দর্শন করিতে আসিলাম।

ংক জীবিতেশ্বরি: কোথায় তোশার অধর স্থান পান করিবা দুর্জান্ত প্রদূদ্দের বিধাক্ত বিসম শর্জালা পরিহার করিব, কোথায় ভোমার শারদীর জোৎফাজোকে বিশ্ব সংসার এককালে স্থাসন হেরিব, কোথায় জোমান বসন্ত কোকিলা লাপ বিনিজ্জিত মৃদুমধুর ব্য়ন প্রস্পান্ত পরিভূপ্ত হ্ইতে থাকিব, না, ভতোধিক কউ পাইতে লাণিজান ? হার হার । কি করি; এখন কিছুল্ব তোমাকে সাস্থ্য করি? বল্লাতা।

হে প্রণয় প্রিয়ে ' এই নেখ, প্রজ্ঞানিত ত্তাশন পিশাবলী সদৃশ, প্রদীপ্ত নিষপরের দশন বিগলিত বিষ্ঠিন্দুর ন্যার, তৌ-মার বাষ্পতিন্দু আমার শরীর দগ্ধ করিতেছে।

(दकारण जहेमां भगात अक भारत वनाहेगा)

ক্ মিতভাগিনি । বল বল, কেন এ বিষম বিষ দহ্ম জুলি । য়াছে ?। এ সময়ে এখানে আর আমার অদিকক্ষণ বিলম্ব কর। ভাল দেখায় না, বন্ধু বান্ধবের। লক্ষ্যা দিবেন, গুরু খনের নিকট নিশিত হইব, মৃত্যি, ভগিনী প্রভৃতি গুরু লমও সূহ-

শপতী নাটক।

জনের। চারিদিকে রহিয়াছেন। (শণকাল হিরভাবে দঙাম্থান্
ধাকিন।), ঐ বুনি, প্রিয় বর্ষতের। রহস্ত করিতেছেন, শীয় বিয়া প্রিল সভাবন করি, কিন্ত প্রিয়ে। তোমার জাতা না শীক্ষাে ঘাইতে পারি না, বল বল, আর ঘাতনা দিওন।

मिल्लिमी (देशक रावधार में डिह्मा कार्य करत) हिन, तर्रति छहि क्रिकेट त्यन लेखा त्यांत करते। खाड़ा यामी त्यम नामलिति एति एति एति त्यन आजन ना स्टलिक धन सत्यम करता करता कर्य लाग ना लिखि त्या नाथ त्या है । सह क्रिकेट लेखा नाथ त्या है । सह क्रिकेट क्रिकेट त्या त्यांडा क्रिकेट त्या कर्या कर्या नाथ त्या विका विका क्रिकेट क्रिकेट त्या है । ति त्यम विका लाज क्रिकेट माता ति त्या है क्रिकेट क्रिकेट माता ति त्या है । हो क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट विका त्या है । विका क्रिकेट क्रिके

निनि । जात तम् ता कि १ अभूमि अभूता अमृता भद्धाः याक्षि

জানিশতে। ভাই: স্কাইকেবি তো এই এক দশা।
পোড়া জ্লম্ মন্ত, কি বলে গা, বলেন, না, দুর হোক্
(ক্বেৰ চিন্তা করিয়া) না ভাই! নামটা ভাল মনেহছে না, এ
বে পুরুষ গুলো কি বলে, কি একটা সেন পুরো বাঙাল
থলীবরা মন্ত্র জাবার রাজা হ্যোছিল ঐ বোদ্যীটা না,
মরত্রে জানাদের না এ যুৱা হুরে বল্বো কি বোন। যেন
টাড় বল্নের মতন মুরো মুরো দ্বে গেলোন! মেরো মাহ্দের পাবে কি এক সম্বা

মর্ তথুনকার পব্যেশরও, কি এত্কান। ছিল লাল ্যে अनुग (भाषात हेक् तिक्ता श्रोक्षक तिशोकात अननहोत्क লাহা। এত বন্ধ এক লেখের রাজ। করে। দেছিল। মন্ বিশ্বে নজ্ঞা পায়। যাব কোথা মাণ পোড়। রাজারও কি ক্ষুদু এম্ন ত্রুম বেরু হয় গং । যে একটা প্রবের পঞ্চাশ টা, ৰটে ই, একুশটা মান, পার ফেউ কোপ্রা মার আপনি, লোটা স্থার সোটা নিয়ে পুরেন খুরে মরুক । এমন পোড়া রাজান সাধার সম্ভাতাক পাড়ুক, সর, হাসিও পাড ছ:বও পরে। ্ ু নারাকে আর নল্বো কি: একটা প্র্যায়চাটা নেশা-र्षात शाहान्द्र रततं शास्त्र शास्त्र मच कावते विष्ण नर्के कर्रकाम रदाम ! रेक्कान भारत्याचा मुट्टा कानारे च्यासाटनम् । ब्राह्म नक्कीकी ना शास्त्र, तम कि कथन छी कमन नामश्रिती ए हित्का भारत है। कार्रों देनस्कि देन छाई। नानाह गुर्थनानी अक्लार्टन खन जुलानी शोकंत इत्या शिता था, त्या क्लीरमा नंद्रस्थ (भटनन ।

एकता । (श्रांति क्रांति क्रिं। क्रिंग क्रिंग निजू राम अक्कारण रणाणा छेर्रामा सा, अत कांश्रम क्रिंग छर्टिंग है। अ क्रांत थाक्र शास्त्र मा, असी। रुमा नाम। निज्ञा मा-मामी स्माम मह। असी कि तन्छ कि येरा, मा क्रांमि, क्रांबात क्रक कि क्रक्ष कि क्रता रूप रम्थ क्रिं।।

ছি ছি ! ওমা ! যাব কোথ মা । কি পোড়া । আ মর । ওছুঁড়ি ! ওলো ! ও বে দাদ। হয় লো । ও কি বলিন্ দিনে কেন নিম, না, খেচকা ছারী, এ বে তুই তাই কলি লা । । নিভিমিনী। (কি কিং রামে কি নী হইনা)। যা ভাই ? ভোদের।
কেনে কেমন রোগ, কেবল ছল বভেই শিকোছিল, ভোদের
ভালার যে কথা কওয়াই দার হকে।। জামি কি বন্ধুম, ভা
কোক না দাদা। কথা বল্ভেও কি এত দোদ। ভোরা বড়
মুখ্ছ মেয়ো ভাই যাঃ।।

कानिश्मी। (मरकार, बार्ड बार्ड)। जाः, চूश कत् गी, छत्त्व तमा हा । कूँ की करना तम अक्कारन त्यका छर्टाएह।

জভিপ্রায়। চৌগদী।

शृथिवीत सूर्य, आंगांट विष्यूष, कहिए ते छ्रथ, भौकांमरम खुरम वुक । विषयत यदि, विषयान कहि, आंहा ! यदि महि, स्टेंगा तरग्रि मूके। स्वात आन्यः यूटकं स्वाभवः क्वाइंत हतः वाद्यः स्थानी विद्धाेणः। काइः स्थानं स्थाः, भिवादित क्वाः, किनिन वस्थाः, काइः द्वाः कथात्त विष्णः कित्र आना मरभः, समी इव घरमः, श्रितं शिवः मरमः स्रव तव मिनावाछि। धृतित म नदः, इत्रेताय नदः, तिन क्त्रवः, धृतित विद्यात् विष्णः।

(এই ভাবিমা অধোবদনে রোদন।) ভূদর।(লাস্ত নমত চ্ইমা শৃতি ধরিয়া।)

কো। কোন ? কি ছংখাছে। কি ছংখাছে। হর বুরি অক্তা-কারেছে। মা কি কিছু বাক্যেছেন। বল না। সব ভেজাে বল না। যাছু শুনি। ছিল। শুখন করিয়া কি কান লিতে হাছে।

সোদামিনী। (ছিল অভিযাননী হইয়া, এক গৈছিল টানিয়া, রোদন ক বৈতে করিতে)। কাঁদ্বো কিলে ভাই। আমার কো
আছে, তা কার কাছে কাঁদ্বো। বক্ড়া কেন হবে। যেমন
তপুষ্ণা করে। এফেছি, বাক্ড়া কলে আর কি হবে বল।
কার ভালতেও থাকিনে, কার মান্তেও থাকিনে, তা ঝক্ড়া
হবে, পর দেখার খানন রেখেছেন, তেম্নি আছি, কার জান্যে
বাক্ড়া কর বো বল, রক্ড়ার মে স্ব্যুবিয়ো গোছে, বিগ্রাতা
সৈতে করোছেন, যাছি, তা আর বল্লো কি, সেক্ষো অত

मश्की मार्टका

करता छेठेटछ है। स्थान स्व सम्बि सावने तम १५ शृष्ट् करता छेठेटछ है। स्वात पूर्ण करता शोक्ष्य शोस्य मा, छाई वर्ष्य नेर्का है स्वा । छाई विन, विन हि निषा । खार्यान महा कि बहे हिस्सा ।

পোড়াকপাল! কে আছে ভাই! কোলা যাত, কাকে বল্বো, বড় মান্তব্য ঘরে জন্মোচিলুম বটে, বাপ বড় মান্তব্য এক জন মানা গণা নোক ছিলেন, তা নিখাা নয় কিন্তু জামার নিভান্ত পোড়া কপাল! পর মেশ্বর তাঙ সত্র কি রেখো-ছেন! মা নেই! বাপ নেই! তেমন একটা বোন নেই! যে সেখানেগাে পাঁচ দিন জুতুয়াে জানি! শত্রুয়র মুখে ছাই দিতে ভাই বড় মান্তব্য ভাগামন্ত নোক বটেন, তা কি লভা গীর! সেখানেও মুখ আছে । এখনকার বৌ্যেরা কি ভাই! ভাই রাখে।

তোমরা পুরুষ মার্ম, নিষ্কুর জাত, সূব্ কত্তে পার, আক্ষ্
আমাকে ফাঁকী দিতে বস্তেই, তা বোদ, কিন্তু তোমার সম্প্রতা আর আমার আজকার এক দিনের জালাপ নয়, সকলি জান, ভাই! ভিনি কি এনাগাদ এক দিন একটা কাগের মুখেও তত্ত্ব করেয় পেঠোছেন ? যে কথা থাক্বে!।

ত্বর। কেন ? কেন ? এছ হাড়ভাজা খেন কেন ? তুনি কার মুখে কি জনোছ ?।

भाग विने । सन्दर्श कि बाद हाई । से सम्बूग, छ। कि स्रोत पूरि जान ने ? यात्र दता छात गत माहे, शाए। १ ज्योत कालेगा कामाहे, अब कि क्यन हट्या थाटक ? छ।

मण्डी मार्ठक ।

खात कि वन्ता ह जूमि सूर्य थाक्टाई छाता, छाई आगत इस् । उत्व पनते। त्रथन त्रथम कटत, निज्ञहें अट्वाद मारन ना, जाई नकक पिक् अकतात्र जातर इस प्रवृतकर है (प्रथ्र इस :

ি একটা দীর্ঘ নিশ্বাস পরিজ্ঞান্য পৃত্তকৈ অধোনদতে । রাদদ করিতে ক্রিছে মধ্যে মধ্যে মধ্যে হয়।

ং বিধাতা। ভোষাত লগে কি এই ছিল। এই নিরাঝার হতভারিনীকে সংসার আশ্রমের স্থান হোলা চইনে এক কালে বঞ্চিত কবিলে। হাল চার। পুন্ধ লথে তেইই ছম্বৃতি করিলাছিলাম, ওলিতে পারি বা, তাহাতেই এই গ্রেপরো-নান্থি মনস্তাপ পাইতে হইল। ই নলামর। এ অভারিনীর প্রচি দরা করিছা ভাষা কি মাক্ষানা করিছে নাই। এমন কলপের মত পতিরত নিরাপ গুন্দাত্ত গাহার নিয়ারিনী করিলে। হাল হাল। বে শহার দুর্দার কালস্বাপ ব্যন্ন বিস্তার করিলেটে। দোপলে হুন্দা নির্দাণ হইল, যার। হে বিশ্বনাথ। ভোষার অপাধ সহিনা, বুলিতে পালে, সালা

> महिशोर। गण

হইয়া সদত, ওছে দ্যাদত, হইলে নির্দ্ধর, কেন ব: এবে। অবলার গতি, দিয়া হেন্ পৃতি, কবিলে দুগতি, মরিস্থ কেনে।

मण्डी नाहेक।

পিত। বাতা ভাই, জন্য কেহ নাই, বল কোথ। যাই, করুণাময়।

শুনিতেছি যভ, হই জ্ঞান হত, সব, বল কভ দেহে না সয়॥

নন্দিনী কুড়ী, করি দুড়াদুড়ী মারিতেছে ভুড়ী, এখনি হেন।

१.८त के क्या क्षेत्र। विश्वतः कविरायम पुनः निष्ठित किस्तानः

যত প্রতিকাদী, জনলেব রাশি, সব সর্কনাশী, বসিবে নেলি।

হাসিতে বখন, জীব কি তখন, বসিবে কেমন, ভাতাব পেলি ।।

ছেন শোড়। দেশে, রম্বীর বেশে, ক্ষেছিল্ল এলে. মরিলু স্কলো।

एक अविनातः मः (क्ति ताकातः (काम (क्राम आतः खुड़ाई गटना ॥

अर्न्सिन गरत ६**७ गरन ४**एन, ७७ विरशः करत्न,

ভাল বাবে যারে, তোবে শুগু তারে, অন্য বনিভারে, বাসে বালাই॥

রমণীর বেলা, সকলের হেলা, নাছি সেই খেলা, সবাই কাল।

শরিলেও পতি, তবু নাছি গতি, ভূগিবে দুর্গতিন জীবন কাল।

শপত্নী নাটক।

श्रम काठांत, रिवार कि छात, (काम क्राय कात, मा क्षमि कारम। ब्राक्षांकित ठीडे, इस्ता स्ट्रेकार्ड, माप्रैयाय गाँहे, मा नग्न क्षांत्य।

ভূষির। (মনে মনে) কি ছাশ্চর্যা। বি আশ্চর্যা। শাদ্র কর্ত্তারা যথার্থ ছাজ্জা করিয়াছেল "মতলা বটুকর্ন ছইলে জার ভাষ্ঠা কোন ক্রেই গোপানে পাকে দা। ' জামার বিদীয় দারপরিপ্রতিহের আপার ইতোমনোই ইছার কর্নগাচর ছইলাই এক বাদ্রা । হাছা ছউক, একবে রহন্য বাক্য বারা ইহাকে এক রূপ সাজুনা ক্রিয়া বাহিরে ঘাইতে পারিকাই বাঁচি। । "হাল হাল হাল" একটা হালা করিয়া প্রকাশ)। ভাই। একবে বুলিভে পারিকাম, ভাই কেন ভোজা বল লা যানু। । বাব। আমার জার একটা বিবাহের নিমিত্ত উন্যোগ করিতিছেন, তুমি বুলি ভাই গুনিরা এক নুম্ব ক্রিভেচ। ('হাল ছাল হাল' ছালিয়া।

হইবেইতে। না হইবে কেন ? তা না হইকে মেয়ে মানুষ দশহাত কাপড়ে উলন্দ বলিবে কেন ? হাবে পাগল। বাবা বেন
সম্বন্ধই করিলেন, তিনি তো আর আমার হয়ে বিবাদ করিতে
পারিবেন নাও তা তো আমাকেই করিতে হইবে নি শিহাত হাত
হাংশ হাবা করিয়া)। যাও, যাও, এখন গুহুত্তনীর কর্মকার
দেখ, বানককণ বিলম হইয়াছে, আমিও এখন বাহিরে
চলিকাম।

मश्लीमारिक।

🏸 । পুতি ধরিন। হাসিতে হাসিছে।)

叶杨 |

हिहि हिछि मिछामिछि (खंदा) ना (त. (खंदा) ना ।

जन्म जर्भ नाम (नाया) ना (त. (नंदा) ना ॥

मिछाइद्या (यामाखंदन (भंदा) ना (त. (भंदा) ना ॥

दिक्क दिएक भीन (कंदा) ना (त. (कंदा) ना ॥

दिएक कनेक राम (यंद्र) ना (त. (यंद्र) ना ॥

खिन्ना भरतायत (मंद्र) ना (त. (यंद्र) ना ॥

छिन्ना भरतायत (मंद्र) ना (त. (यंद्र) ना ॥

मेदी अध्यात क्या (यंद्र) ना (त. (यंद्र) ना ॥

विद्राध विषय छित (यंद्र) ना (त. (यंद्र) ना ॥

दिह्म कृष्णं जान (यंद्र) ना (त. (यंद्र) ना ॥

दिहम कृष्णं जान (यंद्र) ना (त. (यंद्र) ना ॥

विद्राध विषय छित (यंद्र) ना (त. (यंद्र) ना ॥

(পুনকার খুতি ধনিয়া, থালিতে ধালিতে।) কাই সভা। কালে এখন বাজিলে ঘাট ? আমাৰ

যাই নায়। তবে এখন বাহিত্তে যাই? আমার খেলানা শতরঞ্জ যোড়াটা কোখা। দেও তো, যাইয়া একটু গেলি। (গতর্জ লইয়া বাহিত্তে এস্থান)

্রাছবিনী, নিভাষনী ও চঞ্চলী গৃহ প্রবেশ করিতে করিতে)

চঞ্চলা। (হাদিতে হাগিতে)। কোথা লোবড় বৌ! কি

নিভানিনা । কেওং, না ব্ৰং । ভাজ খেল্টি না ?।

কান্ত্ৰিনা । (হাসিডে হাসিডে)। ওর বুকি কিছু কার্থণ
কান্তেদ্ধে ভাই উয়ে। রয়েছে।

(বলিডে বলিডে গছ, প্রবেশ)

्तोगिविनी। (वास मनस क्षेत्रा)। अरता पितिः अरता। अरता। अरता। विता । कार्त गान करण्डिल्य विता विता ना कार्य माछ। शिक्षि । शिक्षा कथाल छाई। पिकिसी गुरा छाई कि प्रमुख । स्वाति। कि पिन पिन गाई पोई शिम विद्यानी। विद्यानी।

्रक्षणः (क्षांनदण क्षांतिष्ठः)। १४न तमः करतः पूर्वा बोहा क्रोगाञ्च रणः ।

্নিত্রিনী (হাসাকানে)। আনেক চিন দেশ শোনা ন। থাকুলে কি আর ভাই। ও সকল পরিছার থাকে। ও সব ২কো তাক্ চ্ছিতির যামগ্গরী, তা, না দেশ্লে এক হাঁট্ হয়ে থাক্তে বৈ আব কি!

কাদ পিনী হালা বছ বৌ। আড় বড় ে ভোর বন্ট।

হন্দ বেসন ভার ভার দেশ্নি, একবার ৪ শ্রিণ লে ভাল

করো কথা কোন নে, খেন আন্মনা আন্মনা হয়ে রয়োভিন্, শরীরে ভার ভেমন ফুর্তি নেই, ভুই ভো এমন মেরো
লোক লা। ভোর কাছে বায়ে, ভাল দেখার না, আহা। ভোকে
দেশ্লে চক্ষের্মহাপাহক পালায়, ভাবনা চিন্দা দূর হ্য়, পুত্র
শোক পালিযো খায়, ভা, বোন। আছ্ বড় বে ভোর কেমনং
রক্ষ দেখ্টি লা।। ওমা। হোক ছটো দেন পাকা করঞ্জার
মতন করোছিন, ফুলো ফুলো হয়ে উঠিছে, জাহা। ভোর
মুখের পানে ভাকাবার যো নাই। কেন লা। কি হুগোছে বল
দেখি ? বক্ডা করোছিন্না কি ?।

ক্লোবে না, ও, সারারাত মড়ার মতন নর বৈ ওর রেভ্যে বুদ কুলোবে না, ও, সারারাত মড়ার মতন পড়ো কেবল ঘুনোই তো? কাল্ই বেন দাদা বাড়ী এক্ডেছেন, তা, ছোক্ ন^গ । ভামন করো কি বৌ সাত্রকে নজনা দিতে হয় গা। ভারে। মেনে বড় গুরস্ত মেয়ো ভাই।

निक्किनी। (शांक इंक विश्वा मिन्सिक । अभा । इत्ती विक कि ला। चामता चांनात इंद्रेक (भएत इनुम कि करता नां) उत काई। अहें अकड़े। वर्ष (थांस म्हर्फि, बिएइनिड़ि शहत कथा हिंसा बिरास काश्मात गांदर प्रथम ककड़ों करत, अभा । चामता कि काक बाच्चां भएन वांत्र क कूब मोकि ला। ° द कूड़े या मूर्थ (बरु ला। इष् वष्ट्र क्रिक्त कक्ष्य मोकि ला। क्रिक्त कथा वर्ता किति, यम हास्तिसात महम चांकां मार्य कि अवहें अन्धात केठ तिला सेहित। इत्या वांका मार्य कि अवहें अन्धात कर्कृता ला। कुड़े वष्ट्र कांक्रम स्रोग। (सर्या इत्याहिन्।)

চঞ্চলা । লকোনে আদ্বিদীকে সংঘানন কৰিব। । দিদি ।
কেখলি, গুনলি ভাই দেখলি, নিতৃত রক্ষা দেখলি তো,
ওর কাছে কথা বলাই বিষয় দায় । ও, কথায় কথান এক্
কালে যেন ঢাল খাড়া ধরে। উঠে, অমন আঁতে ছুরী মেরে।
কথা বলতে কি আর কেউ পার্বে, আমার মুখ্টো যেন
বাধু বাধু কতেছে, কিন্তু না বল্লেও থাক্তে পারিনে, নিতী
রড় বেড়ো উঠেছে বোন! ওর আর সওয়া যায় না, হালা।
আমিই কি এত রাজ্ঞানি! ভোরা কেবল আমারি কি এত
রাজ্ঞানা রোগ দেখছিন্। অক্লেশে অতগুনো কথা শুনিয়ো
দিলি, মুখে এক্কালে যেন থৈ ফুটো উঠ্লো, একট্কুও কি

मन्दी नार्षेक।

জাগঢ়াগ, চকু মজ্জা রাখতে নেই লা। রাগে সব বেরেয়ে পড়ে, কিছু ঘরের কথা বের কতে গেলেই প্রাচি--।

শাদ্দিনী। (চঞ্চলার কথা শেষ না হইছে চইছেই)। থাক্
থাক্, আর কঁদোলে কাম নেই, আর নদানী কতে হবে না,
ভোবাই মেনে দব বছ বুজ্দার নেমে হথেছিপ্ বাজে জানি।
ভা শর চুইছিলো। কাদে রবে মাদলে কি আর জান গোচয় থাকে না লা। কি বল্ভ কি বলিদ, কি কতে কি করিদ,
ভার বি আর আগাও দেখুতে নেই গছেতলও ভার্তে নেই।
আনমর, পুর্ছে। হতে হলি, ছোল রাগ্লে— বগক) মর।
রাহো কি বেছে কি বলে। কেলি, চারি দিকে শত্র।
(কেলিনিনির সুখের প্রতি হাক্রাহারিদিনে প্রশান্ত জার্গা
ভাতারনে বর ক্লা কলে, জালাকে ছেলে বাগ্তে জার্গা
কুলুছে। না

নালকে আর কি বোল্বে: , পোড়া রূপালো কটা মেয়ে,
আছা। সব্ মেলেতে। নয় রেল চালের ছাট, চেয়ে দেখলে
লভ ব কেটো নরে, লাপ্না আপ্নি রূপের গৈরব কতে নজ্জা
হয় বোন। তব্ও কথার অভাসে বের য়েল পড়লো, তা মা
হোক, সব্ওনোরি ঐ এক দশা করেল রেপেছেন বৈ তো
নয়, কারুই তো আর ভাফি রাখেন নেই। তোদেরি বা আর
বল্বো কি । একে বয়েদ কম, কাঁচা মেয়ে, তায় আবার
বয়েদে তো কখন শশুর বাড়ীর মুখ্ দেশ্তে হলো না, ভালার
তার কেমন সামিগ্রী তা ভো জান্দিনা। যে ধীর হবি জ্ঞান
লেশ্বি, সব্দিক্ভালো দেখাবে, ধদা কলে মন পড়বে।

वाश्वत-वेही, निन बांछ छा बाह नाहे, नाता विना छ वाड़ी ७ बाड़ी करां विड़ान, क्वल तल निरां थाकिन देव छी , मत १। नव हरां मण्णेकक छांत, शीखांत मव शुरुष कर्मां, क्वड हरां माना, क्वड हरां। छोटे, क्वड हरां। क्वडी, क्वडें हरां। थूट्या, क्वडें हरां। छत्तीशांड, क्वडें हरां। शिक्तमांना, क्वडें हरां। माना, क्वडें हरां। छत्तीशांड, क्वडें हरां। शिक्तमांना, क्वडें हरां। यकत वाश, किडें हरां। शृष्टा माना, क्वडिक्ट वयादा, खेटें तकम हरां। नकत, शिखांद महता होंड़ांश्वरमां क हरां। बेटें तकम हरां। नकत, शिखांद महता होंड़ांश्वरमां क हरां। के तकम मान कथा किटंड छा मतम करां हरां ना ह मारक मिथ्रव वरता, शारांख भारता, का श्वल श्वल (धेन) हरां छोत खांद कि खांग् छांग शांदक, ना, छांकि खांदह।

জা-মব, ছুড়ীগুনেকে নিয়ে এত দিন দিবেনিশি দেন পাথী পড়ান কলোম, হাদে হতভাগীনা তবুও কি মানুষ হলো না গা । মন বলুকে নজ্জা, একটুকুও কি ভাবতে দেই লা । বুলীনের হাতে পড়ো হিদ্, তাম আলর পোড়া কপাল। দেটা এক দশগ্রা, তার, এক নটা, এখানে ও খানে করে, এ দেশ ও দেশ নিয়ে, সব শুদ্ধ এতগুনো নো করে মন্যেছে, পুমা বলুতে নজ্জা। মর, তাতেও ভাবার সেটার মদ ভাবার রাঁড়ের থরচ কুলানি বলো, ওমা। শেষ্কালে আবার একটা ভাবারে ধরাপড়ো ভালদাকালটা ই কি বলে। সরকারী শুভর বাজীতে (কারাগারে) গেটো মন্তেছে, ভাতার কেমন সামি-গ্রিনী ভালখন চোকে দেখ্তেও পেলি নে, ভ্রনোকের संदित (मराग, राष्ट्री श्वरका रिकार काला, वारणात वाष्ट्री जन्म , कीलों हरता अत मिराग विकार, अत निराग कातवात, कारक अब भूष जालगा हरता कि कमा प्रत्य का ना, अब प्रते। अब बागान हरता आदि तेकि विकार कार्य कार्य का

তা বেলি! প্রদের গত বলং টোনা না শোনে নামের কাহিনী, সকলি নামির নাগ: তুই চুপ্ করে পাক্ ভাই। এর
কথায় কাব দিস্নে, ও, ধা শালে বল্ক, আনি প্রক্ ভার
ব্জুতে পারি নৈ বোল!। ও, ভাল বাল দল বেকে, থেতো
বল্লে যেন মাত্রে গাল কেমন রাগ করে, দেখিল্ লেখি লোন।
না, শন্লে এখন শপ্তথালা কাব্রিন, তিনি লো এমন হেজী
লোলী লিলী নন তা চুপ্কলো খালেনে, তে যা কর সৈবেন।
কি কর বো যোন। ভোষরা সন হলে শ্যান, কাকে কি বলা
বো বল, ভামি ভার পারি নে।

ি নিক্ষিৎ বাগত চ্ইনা া কে লা। । । অভিনার :

MA !

যত বলি, ধীর হ, তবু বোহ, হয় না ।।
কারু কথা কারু গায়ে, কোন্ধা হয়, সয় না ?।
আকে বলো, ভাল করো, দিতে দিব, গায় না ।
সেলো গুলো, হইভেছ, শতমুগ, ময় না ?।

वांवा थाहै, मानी त्माक, लातक किছू, कर्र्म।
त्काम पिरक, रकाम कार्य, किहू छाइँ, वश्ना॥
तमारक खरमा, करन किला, मरम खर, इस्मा।
होन्की हरम, कूजीरमत, जाठिकून, तर्मा॥
तमेपिनी। (१००१ मार्कन। कहिर्छ कहिरछ, नरिवास।)

কার ভাই । ওদের ওক্ধা মিছে বল, ওরা জভান ও সহ তো বুজ্বে না নোন । তা ওদের বলো কেবল জকবেল মুজেন ছড়ান, জরনে রোদন মুখ নাট করা হয় বৈ তো জার কিছু নয়। তা, ওদের মিছে বল, ওদের এ কান্দ্য বল ও কান্দ্য বেরলো পতে, জান হলে কি এচ করো বুলুঁতে হয় নোন । ও সব যে যার কাপ্নি বোদে।

বাবাকেই বা আর বকলে কি হতে বলা, তিনি কি করবেন! বৈনি ও বন বে খার অনুটের নেখা, তা কি কেউ
ন্য কন্তে পারে। তা কা কে খিছে বকা। এই বোজ দিরি
বোন। তোমরা তো সব যেন কুলানের দরে জন্মেছিলে,
ভার আবার অমন রক্ম একটা বাউজুরে পোড়াকপালাে
হাড়হাবাতাের হাতে পড়াছিলে ভাই। তাই দিবে নিশি এত
জ্বো মক্ষ, এত খেদ কচ্ছ, আমার বাবারা তা আর তেমন
নন, আমাকে তা আর অমন রক্ম কুলীনে কতে যান নি,
কেবল ভাল ঘর আর ভাল বর দেখাে বংশকে করােছিল
লেন, তা বোন। তবে আবার আমার কেন ভামন রক্ম
কপাল মন্দ হতে চল্লো, আমি আবার কেন ভবে ভামানের
মতন ঐ বিষয় পোড়ায় পুড়তে চল্লম।।

সপত্নী নাটকর

छोरे अत्म अकि आविष्ठा त्यम क्ष्मन द्वान ख्राता ख्राता छैरे (क्ष्म, किडू जांत जान नाग्रकाइ मा त्यान । कि कत्र (का क्षा) हो विष्य कार्याहिन्स ।

দশলা। (বিশিতা হইয়া) সে কি লোণ তোর আবার ও কি বুলিস্। ভূষর দাদ। আবার কো কর্বেন নাকি লোণ ওমা যাব কোণা মা। শুনো গুনো গে আর বাঁচিনে।।

• নিত্রিনী। বিন্ধিতা হবল। সে কি সে:। তাই বুনি ছৈখন লত কবো কক্ছা কতে ছিলি। ওলা। তবে যে ভোর এখুনি মরা ভাবা। জানিব নে সোনা মে পোড়া বি সামানী পোড়া। বিনম পোড়ার পোড়া। ভা কি তুই মৈতে পরেবি লা। জন্বি আখাদাতী হলো মরো যাবি। বেঁলাছি বোনা আজমকালটা বাপের বাড়ী যা ইক্ষা করো কাটাকি। অমন ভাতার সুশে কায় নেই দিনি। বেশ জাছি, মহিন থেকোও নেই, সে

বাদ্ধিনী। (গবিশয়ে) । সে কি লো নত বৌ । সন্তি বল ছিস্ নাকি ? তৃইও কি আলার আমাদের মতন হলি নাকি লো। কেন বল্ দিগি। তোর ভাতারের তো ভাই আমাদের মতন অমন লাভের থাে নর, নোক্সানের বাে, তথে কেন বল নির্গী এমন ছলো। তোকে বুলি মনে মনে ভূধর দাদা দেখ্তে পারেন না, তাই বুলি মনের মতন আবার একটা ভাল দেখাে বাে কর্বেন, কল্কাতার চাক্রে ভাতারের মেগেদের ভাই। এই একটা বদ্ধিম পােছা। গােড়া শান্কীগুনাে ভাই। শবার শন খারাপ করে। দেয়, হাজারও ভাল হও ভাল লাগে শা, এটা, ওটা চেয়ে বেড়াতে ইচ্ছা করে।

শোলামিনী। ('বিশং বছৰে)। তা কেমন করে। জান্বো কল বোন। ওড়ে পাছি নাকি কোথা সম্পদ্ধ ছচ্ছেন শীলিগার । করে। ব্যে কর্বেন। পোড়া পাড়া পড়া সী বোন। সব্নাকি এক্কালে ভেক্ষো পড়োছে, শুশুর শাশুড়ী ননদ এরা তো সকল যে। পেরোছে বোন। তা নেচো উট্রে না কেন বল।

আমাকে তে। ওরা কেউ ছুচকে দেখতে পারে না, এক্কালে বিষ নহনে দেখোছে, খলে কি: বলে, নোটো বড়
ছরন্ত মেয়ো মা, কি ওমুধ করো ফল্নাকে কি আর বৈখোছে, এক্কালে সেরো স্যেছে,। তা বোন। আমি তোও
সব কিছু মনে জ্ঞানেও জানি নে, কে জানে দিদি। কাকে
বলে ওমুধ, তা আবার কেমন করো কত্তে হয়।।

- · (১) (রমাকান্ত বিভাবাদীশের অভঃপুর)।
- (২) (হরমোছনী। (উল্লেখ্য । কোথা লো কাদস্থিন। নিত্মিনি। চঞ্চলা। তোলা সব কোথা গোল লো। কি কচ্ছিন্। বাড়ী কি আন্তে হবে না। অমন করো পাড়া বেড়ালে কি পেট ভর্বেলা। সন্ধ্যা হলো যে। নীপিগর আয়।

(अप्र मकत दत्मां श्रीतात्मत अश्वः श्रेत). कानियनी। (वाल ममल हहेगा, मीनामिगीत अलि)। याहे छाई।

^{(&}gt;) কুলীন ব্রাহ্মণ পশ্চিত, নিকট প্রতিবাদী।

⁽২) রমাকান্ত বিভাবাগীশের জী।

পাজ আদি বোন। কাল্ সকাল্ সকাল্ করো আদ্যোত তখন, এখন চল্লুম, মা আবার বেজার হবে। জাম লো নিতৃ। আম লো চলি। বাড়ী বাই জায়, সন্ধা হলো।

(सम्बद्धाः खंड्यः)

(রস্কাল বিভাবানীপের অভ্যপ্তর:) (বাসলিনী, নিত্সিনী ও চঞ্চলার প্রবেশ।)

্শাশবিদী। বেন গ্লা । ব্যাবে এছ**্ডাড়াডাড়ী করে**। ভিটায়ে ডাজেছিলি । কেন মাণ।

• ইন্টোইনী: ভাক্রো না গা: সারাদিন কি তোর। অধন রক্ষ করে কেবল খেল্ডো খেল্ডো নেড়াবি, আমি হলুম বুজোমানুখ, সংসাতের ছটো আলে আত্রে দেখ্লৈ হ্য না কি গা: । বি ভোব পড়ো দাদ। এয়েছে, কি বলে শোন্গো যা।

কাদবিনী। (আহলাদিক হট্যা। কোথা পড়ো দাদা মা। কোথা গা। কথন এগেছে। দেনা বাজী গোছলো?।

র্মমাহিনী। না যাওলা হল মাই, পথ গোকো কিরের এন্ডেছে, ঐ উপরে গোছে, যা ডোরা, পান জল কি চায়, নোনা গো।

কাশতিনী । আজ্ঞানে আইখানা হইগা। আয় কো নিতি! আয় লো চলি। উপরে হাই আর, পড়ো নানা বাড়ী যায় নি লো!।

ভিপরে সকলের প্রস্থান।

ক্রমোহিনী। (কন্তাগরকে উপরে পাঠাইয়া দিয়া, ননে মনে।)

मश्ली नार्रेक ।

অভিপ্রায় ৷

P(B)

हा एक एवं दझाल च्हारत याहे विल स्रोति। कुष्टिमीत कारङ जुई मामाहेकि हार्तिन ভার। সব পর দিয়া করে কারবার। कूलीरमत भू कि गाउ। निक गतिवाद ॥ এরে হৈতে আর কি রে শাভক অধিক। क्साद कुरियों कहे निक् माल विक्ष अकारत त्यभाव भए कमारक मा छाई। এনন পবিত্র কুল মালাভ ন। চাই। क राज स्थान त्वाद्व नत्वावय नत्। মনুবা ঔরদে জমে এমন বানর ॥ ভোর যে খচর কুল সব কুল বাছা। তাই তোরে সঞ্জিগাছে হেন কুল বাছা। তুই ছিলি রাজা মহাভারত ভারত। তোর পাপে অণবিত্র তাই সে ভারত॥ কুলীন কন্যারা যত কেলিতেছে বেদ। (১) দিন দিন অপবিত্র ভাছাতেই বেদ॥ এই মত ভোর যত কৌশল আদেশ। তাহাতেই অপবিত্ত হয়েছে এদেশ।

(5) कातक शर्ज।

কত দিনে ভোর নাম ভূলো যাবে লোক।
কত দিনে সুপদিরে হইবে ভূলোক।
কত দিনে কুলীনের দর্প হবে চুর।
কবৈ হবে এডেশোর মজল প্রচুর।
কবে হবে এডেশোর মজল প্রচুর।
কবে হবে দুর বহু বিনাহ ব্যাপার।
ওবে রে জবোধ হিন্দু আর কত সবে।
দুচাইতে কুল বল দল নাথ সবে।
কত দিন ববে জার আশা পথ চেরো।
আর কেন কাল হর মুখ চেরো চেয়ো।
কত অকরান দেখ বহু পরিনয়।
দিতেতে যন্ত্রণা কত কুল প্রিনয়।
বৃক্ কেটো যায় দেখো আহ্বা মরি মনি।
চারের মাধের সত গুনুরিরা মরি।

পূব হোক, এচিতায় জাব ফল কি : । যাই, এখন সাঁজ সল্ভোর কমা কাম দেখি গোন সন্ধ্যা হলো :

শ্ভিমোন :

প छ

জন্ত ছলে যান বুবি, জিনিয়া জবার ছবি,
জন্মকার ঘেরিল সংসার।
স্বভাবের ভাব কি বা, কোথা সুকাইল দিবা,
নিশার হইল অধিকার।

থন্য ধন্য দিবা সভি, ধন্য ভোর ধর্ম্মে মতি, হেরিয়া পতির প্লায়ন। অম্বকার দেখি ধরা, অসনি করিয়া ত্রা, পাছ পাছ করিলি সমন॥ কোথা ছিল ভগোৱাশি, ভুবন ঢাকিল আসি, স্থল খল লেপিল শরীর: আকাশ মধল ভারে, জ্ঞান বর্ষণ করে, चरत राम दहरात मीदा कारत दर दर दर्तत वरक, ताथान शिर्करण हरका निष्ठ भिक्त लहेशः (श्राधन। দিবালর পাথী সহ, করি কিচি মিচি রবং गीए भूग कतिल शक्ता ভাগাবতা নারী যার, স্বশে তরা হয়ো ভারা, থানোমত কাবে কড সাজা। মুপে মত মৃত্যু হাধি, সন্তোপ সাগ্ৰে ভামি, अस्तिह गाहि गरह वर्गान ॥ त्कवल निव्ही गावी, आंटन गांवा इश छाता, হেরিয়া নিশার আগমন। আসিয়া ভোগের ভবে, সুখ ভুঞ্জে আর সংবে, যে যেমন যাহার যেমন ৮

याँहै, कंखाणि के दुकि श्रमाञीत (थरका मन्ना। करता ताड़ी जाम्हान, किंकु जनावेन था बतात पिर्शा:

मन्डी नाहिक।

(রবাকান্ড বিভাবারীলের প্রবেশ) 🔻 🕝 🦠

स्थान । (मृष्ट्र) इति (वील! इति (वील! ताम -ताम! खीताम! अस ताम। 'इति! मृतादा। मत्रिकेटेखात् । त्राम! खीताम! अस ताम। 'इति! मृतादा। मत्रिकेटेखात् । त्राम! (शिविल! मूकुम्म। त्मीरता। मत्रिक्षा! मातास्था! कृष्ण! विक्या। निर्ताखाः भार लगानीन। तकः इति (वाल! इति (वाल!। त्माखा (शा कालिशिम। निर्ध्यमि। प्रकंशा।! द्वि (वाल!) इति (वाल! ताम। (प्राविभित्त मृष्टिभाष किस्मा) इति (वाल! इति (वाल! ताम। ताम। आः! कि आश्रम् इति (वाल! इति (वाल! ताम। ताम। आः! कि आश्रम् इति (वाल! क्ति (वाल! ताम। ताम। कार्या किसी (प्राव्यक्षा) श्रीक शाहाल मुकाति श्री (प्राव्यक्षा) कार्या किसी (श्रीक्र-भागात (मिलिलाक क्रिमा) (कार्या, क्रांत्र) कार्य कि? श्रीक्र कि? कि क्रिष्ट्रिक्ष क्रिमा जेश्र प्रक्रिक डेक्ड इहेक्स)!

इत्रप्तिनी। १ वाड्डाव) जावात अम्रिक याष्ट्र कांशा ? जा मत् ' त्र्या म्हा ए हांस कांनी हत्ताः कृत्ना प्रत्ना मत्मभ, जात वाँकि ति । श्राका शिक्षिक त्माक ह्रान्ते कि अहे अकि। तक्ष हादा शांतां इत्त शां। । त्तां त्र तां नहें कि अहे अके शांका, क्षितां कि जान न। शां। ना वत्ना ना कर्ताः अकि। ए कृत्ता उश्रेष्ट वाष्ट्र किन ? अहे अमिरक अस्ता, प्रद्वाः पत्रक्ता कर्त्व शिक्ष स्व मिरक अक्ट्रेक क्रक् वांथकात्र करता व्याक्त हत्। विरम्प कांभाष्ट्र कृतीत्नत पत्र। (ক্রডগতি নিকটে বিয়া কাবে?)। উপয়ে বে কামদেব। । (১)
রমাকার। (মৃদুখরে বিয়াবে)। রাম। রাম। হরি বোল।

হরি বোল। ক্রফ হে তোমার ইচ্ছা।। থাকুক্, তবে আরজবা খাব না, এখন হাহিবে চলিলাম। কামদেব না বাড়ী
গিরাছিল?।

হর্মেট্রী। তার জি আর বাড়ীগেওলার যে। লীছে, এমন রামনীলে আর ফোলা গাবে বল ।

क्रमाकान्य । (मृषु मृषु)। छ। य । व्याचित वाहिएत वाहि ।

্বাহিতে সাইতে শইতে দীর্ঘ নিখাস পরিভাগ পুর্বক সংস্মনে:)

ভার তে পার কর। যান কোল নিন রাজি ইইবেক, বছ নিন পর্যান্ত চন্দ্র সূর্যা থাকি দেশ, দরাপ্রয় সন্ধান, পোন ভাত কাল পর্যান্ত আনহা নারক ভোগ করে। গাপিন্ঠ, দেশটাকে একভালে স্থান্ত পার করিয়া গিয়াছে। হারা এ যাকল গাপের বি প্রায়ণ্ডিত আছে। তে জগদীপর। ভোনার কি ইছো কিছুই স্থিতি গারি লা।

2.00

প্রধান ভোনাং বিভূ। প্রধান ভোনায়।
কুপাকর। হৃপ। কর শেহিত নারায়
বিভূ। মোহিত নারায়।
হ্র হর তাপ হর ভ্রমের মহিত।
কর কর হিত কর যা হর বিহিত।

⁽१) इति।

मण्डी माहेका।

ना कानि छोषात छक् विस्वक हिन्छ।
ना हिनि यूर्णण श्रथ मांधू निगरिङ।
ना वार्ट सूर्णत कार्छ ना ह है मलाह।
हतरमञ्ज शोर्ट स्वन शतमार्थ शह ॥
विश्वहर श्रीक्ष इव स्वन मार्व।
ज्यांत स्वन ना आनिएड इस करें छहन।
खात स्वन कर्य कर्छ ना इन स्वाय।

শ্রুণাদ তোমার বিজু: প্রথাম তোমার র কুশাকর কুশা কর মেছিত মানার বিজু: মোজিত মারাম ব

নিশ্বরণ নাটাশাল সুকা মানাহর।
জানিতাম তা ভূমি নার্ম স্থানারব।
লা নাং তা নাং বিভা তা নাং বা নাং।
লংগার শ্বশান লাং ত্তের আলান।
জিলি কাল ভেজঃ আন ভাকাশ মরুজু।
নুড়া কারে এই পাচ ভাকার ভূড়।
এই আছে এক ভাবে এই জানা রূপ।
কংন না নিলাকার কপন স্কুপ।
এই আছে পাঁচে এক এই পাঁচ ধার।

প্রণাম তোমার বিভূ প্রশাম তোমার।
কুপাকর হিলা কর মোহিত মারার
বিভূ থাহিত মারার।
নিজ দোষ, করি তোষ, রথা কাল ছরি।
রং দেখাবার তরে সং সেজো মরি।

জানি না যে জামি নই জামার জামি।

রবে না এ ভবে বাস ফুরাইলে দিন।

কে জামার পরিবার জামি হই কার।

বলা সার বার বার জামার জামার।
জানি না যে মিছা কাষে কেন হই হড।

জুরার জলের মড আর্ঃ হ্র গাড।

কবে নাথ। জামি রব্ না রবে আমার।

প্রধান তোমার বিভূ। প্রধাম তোমার।

রূপাকর। রূপা কর মোহিত মারার।

বিভূ। মোহিত মারার।

(সকলের প্রহান।)

প্রথম জাক্ষ প্রাপ্ত।

ৰিতীয় শক্ষ।

(জন্ম শক্ষ বন্দ্যোপাধানের বহিবাদী) (ভ্ৰন্ত বাৰুত্র বৈচকথানা) ে (ভ্ৰ্যুকান্ত একাচার্যের প্রবেশ)

ভূষাকাত। পঞ্জিক। হতে এন্থন্ ভরে বচন পার করিতে ক্রিতে)।

"गांघरव वा विनरभ वा, रव शृहाविष्ठरभावनः। शृत्ररश्चान् अव-भिन शृत्रिकः मूम क्लावहाः।"

(पूर्व रोवूरक गामाधन भूकित)

কি গো বাবুজী মহাশয় । কবে বাড়ী জাসা হইয়াছে ? শরীরগতিক ভাস আছেন ডো ? বিষয় কন্মের সমস্ত কুশন ?।

ভূষণ ভাসন্ গ্রহানার্য মহাশার : আসিতে জাল্ডা হ্র ! আজি নারি দিন হইল বাড়ী আসিয়াছি; শারীরিক ভাল আছি। বিষয় কর্মের কথা কি জিল্ডাসা করেন ? চাক্রী বাক্রীতে আর তখনকার মত সূব নাই! বিশেষতঃ সাহে-বেরা বড় সতর্ক হইয়া উঠিয়াছেন ? কালেজেই আমাদের দেশ হারখার হইল।

ছর্যকান্ত। (বৈছি লাছিতে লাছিতে)। সত্য কথা বলিয়া-ছেন বাবু । গুহ্দেবভা আপনকার মঙ্গল করুন। মহাশর সহংশে জন্মিয়াছেন, অভএব, যথার্থ কথা কহিবেদ না কেন? ("কালেজে" এই শক্ষী রূপান্তর বুকিনা) কালে যে আমাদের দেশ ছারখার হইবে, ধর্মা কর্মা সকলই লোপাপত্ত পাইবে, শুনিয়াছি একথাটা আযাদের কান্কপুরোণেও নেখা আছে বাবু! আমরা সব হইলাম কো)তিষ ব্যাবদাঈ মাত্ত্ব আমাছের জো)তিষ মইয়াই হইল বিষয়, ও সকল শাস্ত্র বড়. বুকি সুজি না, বড় দেখা শোনাও নাই।

प्रता (यत यत)। हैनि "कारमाख" এই मक्ति शत यार्थ तृक्षित्व शांतिरमा ना ; श्राकुछ 'विशतीक वृक्षित : (मध्यक विष्ठा कतिया) है। इहें एक शांति दरि, हैनि क्रूक्ट्रे श्रीशियात लाक, काहारक खातात श्रीतीम, अनकन मक्त ना जानिएक शारतन। (श्रकाम)। जानिर्ध महामग्र! जानि अकथा विम नाहे, शार्ठभानात कथा कहिरकहि; मारहबर्दनत शार्ठभानात लाक राजीक अथम जात जना काहारता श्रीत

স্থাকাত। ই। নাবু একনে বুঝিতে পারিলান ; তা যা বল, কিন্তু চিরদিনই ঐ প্রকার পদ্ধুতিটা চল্যে আসিতেছে। তবে, সে কালের স্ব রাজাদের পাঠরানী ছিলেন ভাঁহাদের উপরোদ অন্থ্রোদই অধিক খাটিত ; তেমনি এখনকার রাজ। ইন্ধরেজদের পাঠশালা ; তা বাবু! ও কেমন সম্পক; না চলিরা যায় না ?।

ছ্ধর। (মনে মনে)। বিজ্ঞা । ইনি তো পাঠশালা শক্টাও আবার গিলিয়া ফেলিলেন। (প্রকাশ) না, না, আটার্ঘ্য মহাশয়। তা নার, দেখিতেহেন না ? এই যে স্থানে স্থানে কোম্পানি হইতে পড়োশাল সকল স্থিয়াছে, আমি নেই কথা কহিতেছি।

मश्डी माउँके।

ছর্গকান্ত। (সবিষয়ে)। ব্লাম ! রাম ! কি পাপ ! আজি এত ভ্রম ইইতেছে হে, সম্পুন্ন বাব ব্যালাটায় বাহির ইওরাই অকর্ত্বা কর্ম ইইরাছে।

(श्वांभत शाहिष्कित व्याद्वण)।. (३)

শদাধর। এই মে গণক মহাশয় এখানে; ভালই হইমাছে; আনি এই আপনকার বাড়ী যাইতেছিলাম। যাক্
অন্য কথা দূর হোক (কণেক চিন্তা করিয়া) সে সব কথা পরে
ইইবে এখন; গণক মহাশয়: আজি বার নেলাটা কতকন?।

স্থাকার। (কিঞ্চিৎ রাণানিত দ্ইয়া, নদতে)। কি হে ভূমি এত বড় নোকের সন্তান। ভোমার বাপ দশগানা গ্রামের মাথ। ছিলেন। আমি ভোমার পিতামহকে উনজ ব্যাড়াইতে দেখিয়াছি, ভূমি জামাকে উপহাস কর হে।

সংস্কার পুরু টা যখন ছেলে পিলে গুনো সব ভাত খায়,
যখন ঝিজে ফুল সশা ফুল গুনো সকল কোটে, চিরকালই
সেই কালটাকে বারবালা বলা যার! বারবালা কি আর
প্রহর ছই প্রহর হইখা থাকে? ডাকের বচনই পড়িয়া রহিয়াছে, দেখনা কেন; 'ভরসদ্ধার বারবেলা কোন কর্মাই
করিতে নাই"। আর, যখন যে কর্মো বাহির হওয়া যায়,
যদি তা সফল না হয়, ভবে সেই সময়টাকেও আর একটা
নারবালা বলে। এ ভিম্ন আর বারবালা কি আছে?।

⁽১) प्रभत बातून सर्वत ।

ा । । । । । विमुक्त । इनिक् जातात जागारमञ् मिट्नेत अक अन अविशासका विश्वाणा भूक्ष । गाहा यहनेन अयार्थ (लाएकत कि खम । । (धकान) त यात्काक, उठी-রহন্য করিতেছিলাম; ভাল, গণক মহাশয়! আজ তো হইল ৰিভীয়া, মদা নক্ষত্ৰটা কতক্ষৰ আছে?।

ভূম কান্ত। আঃ! কি পাপ! ভূমি যে বড়ই ছলাতন করিলে হে ! দিতীয়ার দিনেও কি আবার কখন মধা হইরা থাকে? তোমার কথায় কি শান্ত উলটো হইবে, না, তুমি বেদ পুরোণ, বচন, প্রমাণ, সবগুনোই নোপ করিতে বসিয়াছ, वल कि ? नगांश वलः स्थिष्टि वलः शूरतान वलः, जन्न वलः জ্যৌতিব বল, ইহার কোন্ ব্যাকণ্টা **জামার কণ্ঠস্ত নাই** যে এত উপহাস করিতেছ? অধিক বলিব কি, কাকর্ণে গো প্রাচিত্তি খণ্ডে এই বচনটা পট্ট নেখা আছে, "আমাবস্থার মঘা সামাল্বি ক হা, দেখদেখি আমাৰ্ফার দিন বৈ আর कि कथन यश इह !

্তিবৈ আর এক দিন মহা হইয়া পড়িয়াছিল বটে কিছ মানুষের কথা কি? তাতে দেবতারা ওদে৷ বিপোদে পড়িয়া-ছিলেন। সে আর কোন্দিন হে। বলিলে কি আর বুরিতে श्रीतिद्व मा ? ता पिन समुक रेमथन इत । छाईएइ दिन छैटर्ड-किन ।

্ গদাধর। (হারিতে হারিতে)। দেখুন দেখি গধক মহাশর ! জাপনকাকে না ঘাঁটাইলে কি এত জ্ঞান পাইতাম ; লোকে

मण्डी नार्षे ।

ক্ষার বলিয়াই খানে "রাড় ঘাঁটাইয়া টাকর খায়, ওর শাঁটাইয়া বিদ্যা পার, ।

স্থাকার। (প্রকৃষ্ণ বদলৈ)। বটে তো বাপু: তোমর। যদি ধন্মপান্তের এমন পাঁচট। প্রসন্ধা জিজেন। না করিবে, তবে এ সকল বেদ বিদি কি আমাদের চালনা থাকে? আর মামুব নাই ধাবু: এখনকাব কেক্ই আমাদিগকে আর তেমন ছেদা ভুক্তি করে না, কাষে কাথেই সব ভুলিয়া গোলাম।

(जीक्छ त्यांगारमात्र क्षारवण)। (১)

• এ কথা (হাদিতে হাদিতে)। কি হে। তোমর। গণক মহাশানে লইরা এত কি আমোদ করিতেছ ? গণক মহা-শায়। আমি একটা বড় বিপদে পড়িয়াছি, আমান কন্যাটীর শাতু হইয়াছে, দেখুন তো দিন টা কেমন ।

ভূষ্যকান্ত। (গভীর ভাবে পঞ্জিকা কৈ বিয়া); ই। তা বড় শক্ত কথা দেখিতেছি। বিশেষতঃ মেয়ো মানুষের রিভু এ যে বড় শক্ত কথা, বর করিতে গেলে পুরুষের তানা সচরা-চর মইরাই থাকে; তাহাতে এত ভর নর। (কাণক চিন্তা করিয়া) ভাল; ইনিয়া এই যে শক্তেটা ইইয়াতে বলিভেছ সেটা ব্রী কি পুরুষ বল দেখি?।

জীকণ। সে কি গণক মহাশর। শক্তে কি ? আদি রিপু বলি নাই : রিজু রিজু ?।

⁽३) कृषदत्रत सङ्ग्रहत ।

স্থানাত। ই ই। বটে বটে। তা বাপু। ওছ তেমির কন্যার বলিরা কেন্দ্র তাঁছারা ভো সব ব্রীনোক। থোলা গাঁচে রক্টাই পাটকাট করিয়া বেড়ান, যে দুরান্ত শীত পড়িন রাছে, আমরাই কাঁপিয়া হরি; নময় অসমর নাই; এনফ্র বারো মাসই শীত।

শ্রীকণ। (মনে মনে)। কি আপদ্। ভাল লোকের সংগ্ কথা কহিতেছি, এটা পাগল নাকি? (প্রকাশ) সে আবাদ্য কি গণক মহালয়। ও কি স্বিজেছেন, আপনি কিনে কি বুরিলেন, ও সকল নয়। আখার নেয়েটার পুজোধনন উপন্তিত।

অর্থকাত। (আহ্বাদিত হইয়া)। হা। ভাল ভাল। তা বাবু! ভোমাদের বাড়ীর ব্যাভারই প্রতন্ত্র, কোমরা বিল-কর্ম ক্রিয়াবান্বটে, জাবার ভোমাদের বাড়ীব মেয়েরাও সেই রূপ, তুল্যোভ্রন, পুল্পে, চ্ছিত্র, নক্ষীপুজা, সরেস্বতীপুজা, শামা পুজা এ সকল কোন কমে ভাঁছাদের কামাই নাই; তা বা হউক, বাপু! গুহু দেবতা ভোমাদের মঙ্কল করুন, সুখে রাখুন, কলে আগার নবপ্রহেন নৈধিদি ও কাপড চোপড়েব

শীকণ। দূর হৃষ্টক, আজ মহাশয় এ সৰ কিসে কি বৃকি-ভেছেন, আৰি তা বলি নাই; ও নকল নয়, জামার কন্যানী ফুল দেখিয়াছে।

অধ্যকান্ত। (বিভিত ভাবে)। রাম। রাম। আজিকি কু বা-ত্রায় বাড়ী হইতে বাহির হইয়াছি। ভাই এত ভ্রম হইতেছে।

गर्भाष्ट्री नार्वेषु ।

শ্রীকণ্ঠ। (মনে মনে)। বিজ্ঞান বিদ্যা হে' ভারা, খেওঁড় আরম্ভ করিন, দূর ছউক, আন কাম নাই, (প্রকাশ)। চা ইয় কি গণক মহাশ্য। লোগনি তো কামাইই আছেন, জাবার করিব কি?।

मर्थानाथ हाटहार छोटवमा: (३)

সর্বনাথ। (ভ্ধরকে সংখাধন করিরা)। ভূধন সাবু। এই যে গাণক মহাশয়! সকল কথা এলা ছইয়াছে কি ।।
(ভ্র্যুকান্তকে সংখাধন ক্রিয়া)। গাণক মহাশব। জাজ
'মাসের কর্মই?।

^{, (}১) ভূধরের লক্চর।

শাহানত। (বিশক্ষা করিয়া পঞ্জিকা দেবিয়া)। আৰু জীখন পাঁচানত কান্তম মানের ১৩ই, ছিল ; পারে এই কচকণ হইল ১৭ই, পড়িয়াতে। (পুনর্বার ভালরপে, পঞ্জিকা দেবিয়া)। ই। ই। এই বে বটে বটে। "বান বিদ্ধি বস্তু করে" জাবার আকই ভোরস্পান, ১৭ই, কর হইনা ২৬ শে, পড়িবে, বটে বটে, বটে তো, তবেই আৰু মাসদকা হইল, জন্য কোন কুমাই করিতে নাই। বিশেষতঃ আন্য ফ্রাদটো নিতাত্তই নিমুক্ষ।

সর্কনাথ। (হাদিতে হাদিতে)। ভূষর বাবু! জার কেন বিল্য ?' গণক মহাশয়কে বলিব। কহিয়া কর্মটা গোচাল ক্রিবার চেকা কর; কড় উত্তম লোক পাওয়া গিয়াটে; এমনটা আর নাই।

ভূষর। (হাসিতে হাসিতে)। ই) জার বিলম্ব কি ? বলুন না ? জাপনিই ৺লিতে জার্জ করুন। (কাণে কাণে) জামাদের তো রুধির নিয়াই বিষয়; ইনিই এ কার্য্যের উপস্কুতা।

(द्रामगिक मिटकरम्ब ध्रांसमि)। (३)

রামণতি। কি গো। ভূষর বাবু যে। তবে! কবে বাড়া আসা হইরাছে? ভাল জাছেন তো? করিতেছেন কি? এখনও নেই চীনা বাজারেই থাকা হইতেছে ছো? (মনে মনে)। এই মে দৈবজা পূর্ব্যকান্ত বুড়া এখানে, ভাল। ইছাকে লইরা জানেক রহন্ত করা বাউক। (প্রকাশ)। কি গো গণক মহা-শয়। বড় যে বকালকী করিতেছেন? এভ বিচার কিলের?।

^{े ()} ज्यदन अप्तिष्ठि बारमत कून अखिष ।

गर्गकी नाउंका

বিকার। (মনে মনে) আ: । দুর হউক, জাবার এই । বিকারটা জাসিল। বিরক্ত করিবে ।। (প্রকাশ)। কিসের । বিচার করিব বল ? দেশে জার কি বিচার আছে ? না। আচাল আছে ? দেশটা এককালে থিকান হইয়া উঠিক বৈ তো মর?।

ন্নমণতি। (হানিতে হানিতে)। কেন মহাশয়! দেশ খ্রীজীয়ান কিলে হইল ।

ইংক্তিয়। (সদক্ষে)। আবার দিজ্যেশ করিতেছ হে। রাঁড়ের বিবাই হইতে চলিল? যাহা কখন কর্ণেও শুনি নাই। বেদে নেই; পুরোণে নেই; কোরাণেও খুঁজিয়া পাওয়া যায় কি না? আরও কি দেশে মাহুণ আছে বল?।

রামণতি। কেন মহাশয়। এই যে বিদ্যাসাগর মহা --।
স্থাকান্ত। (রামণতির কথা শেষ না হইতে হইতেই নজোধে)।
সাং! যাও যাও! ওটার আর নাম করিও না। শুনিলে
রাগ ক্ষেয়া।

রামগতি। সে কি মহাশয় । এ কি বলেন । বিদাসাগর
মহাশয় প্রতিঃসারণীয় লোক, তাঁহার নাম ওনিলে আবার
আপনকার রাগ হয় ? সর্বান্ধ পুলকিত হয় না । আর, দেশে
লোক নাই বলেন কি । তিনি যথন বিধবা বিবাহ বিদরে
প্রথম ব্যবস্থা বাহির করেন, তখন নবদীপ প্রভৃতি ঘারতীয়
সমাজের ব্রাহ্মণ পণ্ডিত মহাশয়ের। তাঁহার বিপক্ষ হইয়াছিলেন এবং কত শত আপত্তি উপস্থিত করিয়াছিলেন,
একথা সভা কি না ।।

কি পৰ মংগাদানী দোক ? রাজা রাধাকান্ত বালাছর এবং ঐ ।
সকল স্থানহাপাদ্যা নহাশারেরাই তে। জামাদের দেশের
অধান লোক, ঐ সকল মহাখাদিগের পুনি প্রতাপেই তো
এখনও দিবারাত্র হইতেছে, চক্র স্থাটি উঠিতেছেন, গলার
জোরার ভাটা খেলিতেছে, এখনও এনেশে আ মাত্র জাছেন
তা তাহারাই : জার সকল কি তাদৃশ মন্বোর মধ্যে গণাটা

নারবার জিলার করেক জন জমীদার, কয়েক জন জন্য প্রকার সন্থান্ত নোক ও রাজ। কমলক্ষম বাহাছর পৃত্তিতি কভগুনিও মধার্থ হিন্দু আছেন বটে; তত্তিম আর কি তাদুশ হিন্দু দেখিতে পাই!।

রামগতি। ভাল সহাশধ। আর কেইই খেন ছিন্দু নন্; যাউক, এবিবাদে কাম নাই। এক্ষণে বলুন দেখি আপনি মাহাদিগকে মাতুম ও হিন্দু স্থির করিয়াছেন, ইহাদের প্রতি স্থাপনকার বিলক্ষণ প্রাক্ষা স্থাছে কি না?।

स्वर्गकात्र। (मस्त्र, अक्ष नम्दन)। हैं। आस्त्रिक आसा स्वाह्य दिन कि ।

নামগতি। আছে। মহাশর ! এখন বলুন দেখি, বিদ্যাদাগর
মহাশদের প্রকাশিত প্রথম ব্যবস্থা পত্রে ইহার। যে দোবোলাস করিরাছিলেন, ছিতীয় ব্যবস্থা পত্র ছার। তিনি তাহা
তর তর ৰূপে শুধুন করিয়া দিলে তাহাতে আর কি কেউ
কোন উত্তর করিতে পারিরাছিলেন ?

সপতী নাটক।

विश्वांत । (विश्वांत)। निष्ठ याँछ। जोत । क्षिप्तिनित्र उनकल विकासी कथा एकिएक होई सा ।

নামগতি। (হানিতে হানিতে)। সে কি মহানার এ গ্রুক্স আবার কিনে বিউনি কথা হইন। আপনি শাত্র বিচারকৈও কি থিকানী কথা বলেন।

র্ঘর্শকান্ত। (কোনে)। এ সকল কি থিকানী কথা নয়। প্রাবার ওলিতে পাইতেছি, কুলীন মৌলিক নাকি থাকিবেক না, সব এক্সা হইবে। তবেই বলিতে হইনা, আর কি দেশে মানুৰ আছে? এ সকল কথা কি শুনা বায়?।

রামনতি। সে কি নহাশাং! আবার গোল করেন কেন?
দিশে মানুষ নাই বলেন কি? আপনি নাহাদিগকে দহাত্মা
বলেন, আগনকার সেই সকল মহাত্মারাও বে কুলানদিগের
বহু বিবাহ নিয়েরনের চেইনাং আছেন।

হর্ঘকাত। (বিরাগে)। হাও হাও, তোমার সঙ্গে আর পারা যায় না বেনে, স্পান্ত হও বাবু, মিছে বিবাদে কাম নাহ্য ভূমি হিদেশী নোক; তোমার সঙ্গে অমনি রামরামী বাকে: তাই ভালা

রামগতি। কাষে কাষেই সহাশন: আজ আমারও বেলাট। হইরাছে: ছুলে বাইতে হইবে: চলিলান, নম্মার, ব্রাক্ত্র-ভায় নমঃ

(हामग्डिब ख्यांग)

ত্বর। আচারী মহাশর ! মিছা কেন উ হাদের সলে বাকু বিভগু। করিভেছেন ইহাতে ফলকি ? উ হাদের নেকান ्रिस्थिएक्टिंग ना 💲 केँ हाता यन मार्ट्यस्ति होना ; बारमन म् कि ? तास्तरमत यक नम, ज्यानि छँशासत यक आर्भः ভাগেই আমাদের দেশ বাহেব হইয়া যায়; বামুন, গুজ, কর্ত্তী: देवना, अ तकन बाछि एक मे। शास्तुः कूनीन सोनितकतः প্রথা এককালে উঠিয়া যায়; স্ত্রী পুরুষ সকলেই সেখা পড়া শিশে; বিধনার বিবাহ হয়, একটা মাফুদে এককালে **ছটী ভিনটা জী**র পতি না হইতে পারে; জ্রীলোকের, এ**ত**° চাকাচুকী ভাবে না খাকে: স্বয়মরের কাগুটা চল্যে যায়: डें शास्त्र मान कि जालिन लातिश डि र्राटन ए, अन नका वकी कतिराज्यान ?। उँ हाता यद, मध्यु ज कारनास्तत होत, "ঘরের টেকী -- পেটের ছুরী -- রাবনের ভাই 'পিগু গ্রাং গছে" -- "অপরম্বা কিং ভবিশাতি" "নুষলং কুলনাশনং" আমরা কলিকাভার পাকি: চীনা বাজারের ভূত: সকলি জানি। ও সব দেখিয়া শুনিয়া আমাদের কাণ ঝালা পাল। হইয়া গিয়াছে; এখন আর ও সব শুনি না। যদি শুনি, তো, এ কাণ দিয়া শুনি, অমনি ও কাণ দিয়া জনা খরচ ক্লোজ যত জ্বসা, তত্তই খরচ: মজুদে 🤫 নীরেলির বৈদ্য 🔏 🕹 বন্ধ্যার প্রথান্ত।

বিদ্যা সাধ্যের সক্ষে আমাদের দলদেনী, কিন্তু কাষের সঙ্গে গলাগলী ভাব। প্রস্পার সকলের সঙ্গেই আমাদের খলাখলী আছে, কলভ: চলাচলী করিতেও ছাড়িনা, আমর। পোড়ামাটী। মহাশয়। এত বকাবকীতে আয়শ্যক কি? বৃদ্ধির রঙ্গ দেখুন না কেন ? বোরার শক্ত নাই। ব্স্তভঃ থা করিব ত। মনে মনেই আছে।

এই শুন্ধ না কেন মহাশয়! সে দিন ঐ উনি আহার
নিকটে আসিরাছিলেন, ফিনি এখন গেলেন। ঐ গাঁর শামে
মন্মতে বুট দেশিলেন। উনি বলিলেন "ভূপর বানু!
তোয়াদের প্রাম এখন আর সে ছেটি প্রাম নাই, এথানে
সরকারী ইছুল হইয়াছে; ভোষরা সম্ব এখন আন খুর্ফের
মত পাড়া গেঁয়ো লোক মত, সভা হইয়াছ, এই লই বানায়
একটা নাম লিখিয়া দেও, এ বই গ্রন্র কৌন্মেলে ঘাইবে;
বড় সাহেব হাতে করিয়া দেখিবেন; আর কুলীন মৌলিক
থাকিবে না, সর এক্সা হলো।

বাবু! বলিলে না বিশ্বাস ঘাইতেন, ছাক্রবননে বইণান।
তাঁর হাত হইতে টানিলা লইর। অথনি চছর করিয়, সহতে
নামটা লিখিয়া দিলাম। উনি অয়নি শুনী হইল। আমার কভ
প্রশংসা করিতে করিতে চলিলা গেলেন। চুপ করিল খাতুন
না কেন মহাশয়! সভা সভাই কি ও সন কর্ম ভামাদের
দেশে চলিবে; একবার একবার ত্যন হুজুক উঠে।

তবে যথার্থ কথা বলিতে লোব কি মহাশর ! যদি আমা-দেব দেশে স্বয়মরের কাগুটা চলিত হয়, তাহা হইলে ভাল হয় বটে; ও কটার মধ্যে ঐ টাই ভাল কথা; পোড়া দেশে তা কি চলিবে?।

্ল (রাজরাম বাচম্পাতির প্রবেশ) (১)

ভূষর। (বান্ত সমন্ত গাত্রোখান)। আসুন ভট্টাচার্য্য মহাল শয়। আস্তে আজ্ঞা হয়। প্রধান। (উচ্চিঃখয়ে ভূক্তদিগের প্রতি) কে আড় রে। আসন ? আসন ? --তংপ্র।

(আসন প্রধান ও ভট্টাচার্য্যের উপবেশন)

ক্ষরাম। কি গ্রে। ভূধর বাবু। স্থম্বরের কথা কি হইছে ছিল, বড় জাত্মর শুনিতে ছিলাম যে ?।

ন্থাকাত : (বাজ সমত হইয়া)। ই। ই। বেশ হইরাছে।
আছে। বলুন তে। বাচ্পোত মহাশন : অয়ম্বটা চলা ভাল কি
মন্দ :।

ক্রার্থ। (ক্ষণেক চিন্তা করিয়া)। হাঁ। ধর্ম্মশান্তে তে। ক্রি যুগে ক্যম্রট। নিবিদ্ধ মধ্যেই গ্রানীয়। নিবিদ্ধ মধ্যে গ্রানীয় হুউক অথবা বিধের বলিয়াই প্রতিপন্ন থাকুক। বস্তুতঃ জামার বোগে স্বয়য়র এদেশে বড় ওভকর নয়।

ভূষর। (উপ্রভাবে)। কেন । কেন । কেন বিলালন মহাশার। কলিকাতায় একানে অনেকেই তো এ মত সুমত জ্ঞান করেন।

⁽১) প্রামন্থ মুস্থাবি অধ্যাপক ভটাচার্ক্ত, বড় বিজ্ঞালৈক, শাজে অহিতীয় প্রায়।

मन्डी मार्छक ।

ক্তরাদ। নুন্ধাংশ)। বার্। সে'সম কথা স্বতন্ত । তাহারা নব বড় লোক । বড় পশ্চিত । তাঁহাদের বৃদ্ধি বড় বুদ্ধি ।
দানি অনেক চিন্তা করিয়া। দেখিয়াটি ইহাতে এই এই দোষ
দর্শন হয়, স্বয়ধর কেবল আভ্সার মাত্র । তাহাতে উদ্দেশ্য
সিম্ম হইতে পারে না । সভা মধ্যে নিমেন্থ মাত্র দাকাতে কি
কখন, যারজনীবদোর প্রথম পরীকা হটতে পারে-- কদাচ
হয় না ? । আরে--

(अफ्रजारमत रूपा ध्याय ना रुष्ट्रिक हरेटड्रे)

কুষর। (বিরক্ত ভাবে)। দুর হোচ্ মহাশর। জাপনার ও সকল কথা ভাল সাগ্রেনা, শান্ত হউন। জাপনাদের তো অই দোষ।

ক্ষাণ। (খনে মনে)। রাম রাম! কি বিশ্ব ভি। ইছা।
দের নিকটে ও কথা কছাই অন্যাধ হইলছে। যা হউক,
আজ বড় কুষাত্রা, একটা মিলালাপ করিয়া বিদায় হই,
কালি তখন আসা ঘাইবে, ঘদিই কিছু হয়। প্রকাশ)।
ভূষর বাবু! আছো, আজ বেলাটাও অনেক হইয়াছে,
মধ্যাহ্ন সন্ধ্যাদি কিছুই নারা হল নাই। ভোমার উত্তরোত্তর
প্রীহন্ধি হউক, কমলা বিরাজ করুন। ভোমার উত্তরোত্তর
প্রিহন্ধি হউক, কমলা বিরাজ করুন। ভোমার উত্তরোত্তর
প্রবিংশর নইন্থাপের করেকটা ছাত্রকে বাড়ীতে অম দিয়া।
রাখিয়াছি, এখন চলিলাম। যাও ভোমরাও। বেলাটা অধিক
হইল, ভোমরা সব, সকাল খেকো লোক, সান কর গোঁ, গরুষ
জলেই স্থান হয় ভোন।

্রভূষ্য। ইন মহানার ভিতাক্তা, তবে আজ অস্ত্রনা প্রথমি।। আমি ক্লারও ছই এক দিন বাড়ী আছি।

क्रकान । चारा चारा । (धरान)

ভার। ১। - কি বলিতেছিলার আচার্য্য মহাশ্র। (কণ ।

চিন্তা) হা ! -- মনে হইল। (সনর্বার কণকাক চিন্তা করিছা কর্মি

নাথ রায়ের প্রতি দৃষ্টিপাত)। রায় মহাশ্র। আর বিলম্ব কৈন?

বন্ধ র কার্য্য করুন।

न्यनाथः है। छोड़े। जात विलक्ष अधाक्त नारे रहि, रामाने जिस्क रहेर्डिंड, उर्द कि बागाकर योगाल हरें-राकः।

(सर्काडरक मध्यायन शूर्याक)

গণক মহাশয় ৷ ভূমর নাবু আপানাকে একটা কথা বলিতে

প্রকাত । বিসাক্ষণ । আমি তে। আপনকারদেরই প্রতি পালা !

নর্কনাথ। তেমন নয় মহাশয়। তুধর বারু এবার আপ-নাকে বড় একটা শক্ত কথা বলিকেন। আমরা নিশ্চিত আনি বটো এপ্রদেশে আপনকার সঙ্গে কথা কর এমন মুমু বাই মাই; আপনি দিনকে রাত, রাতকে দিন করিতে পা ক্রেন্ট্রক্ত এবার বোকাপড়া।

वाबाजी। जाना (व जा हरा!)

नर्जनाथ। ना, ना, ना भहानग्रा (क्यन गंक कथा नग्न ,

नगड़ी नाउँक।

একটা ছংগাধ্য বিষদ সাদন করিছে ক্রতাধ করিবেন । ভারতেই শক্ত কথা বিলাম।

হুৰ্যকান্ত। (কিনিএ বন্ধ কৰিছা) গুলান্ত বাপু । সূৰ্যকান্ত । শৰ্মীর আবার অসাধ। কি আছে : "হাঃ হাঃ হাঃ" হাঞ করিব। ।

DI DI

চবাচর খ্যাতল, জ্যান কবি কর জল, আকাশ পাতাল ব্রিভান। নাহি কিছু ভবিদিত, হিডাহিত সুবিদিত, वाला (मह धन्य पदन॥ द्धांश इत्या सभी कांत्रे, रेनमी इत्या शंनी धनि, गव कार्य क्टें स्मिश्व। শে প্রকার নেকি বারা, বিশেষ জানেন তাঁরা, আর জার আচে ধত গুণ ॥ यक्षित्र हरहारह गाँगे, कान कर्त्य नाहि याति, · জাটা জাটা কাদি ভাল ৰূপ। পবিচর নাই খাই, বিশেষ দান বা তাই, দেহ্যকান্ত নিজে বছৰূপ। रव कमा कितिएक वल, यथा हेम्हा ख्या हन, कान कारंच ना रहें कर। জানি কত কেরফার, নাথ্য জাছে রোবে কার, ्र नूर्यकार्ड खन्न करत राम 💎 🛒 👯 এই শ্রেনিল বাপু! যা বলিলাম বুঝিতে পারিলে কি
না? "হাই হাঃ হাঃ ' বাপু! ইহা ব্যতীত স্থাকান্তে আরং এ
কত গুল আছে তা শুনিবে? তবে বলি শোন, বাল্যকালে।
বিদ্যা শিক্ষায় কত মনযোগ ছিল এবং কেমন সুশিক্ষে
করিয়াছি, আগে তাই বলি।

어덩 |

বাধার জোটিখ গ্রন্থ ছিল ঝুড়ী বুড়ী। পড়িতে দিতেন চিঁড়ে করিতান মুড়ী। তিনি বড় ছিলেন পেটুক পাঁঠা খোর। চুরী বিদ্যা শিখে আমি খাভি পাঁঠ। চোর। অদ্যাপি বাছি না বাপু! পাঁঠা আর পাঁঠী हाड़ी পाड़ा पुकित्स गातित्व सात्र नारी॥ ক্ষোতিবেতে নেখা আছে সীতার হর**।** আকরণে শিখিয়াছি বারণের রণ ম দ্রৌপদী বসিয়। কাদে অশোকের বনে। ना वृत्य कतिहा। त्थम त्वस्ताह मृत्न ॥ - । कीइक दिनाम कति हाँ मामाशत । ুরাজন্ব কাড়িয়া নিল দোণার লাছোর 🛊 😁 -শক্তি শেলে পড়িলেন অব্দুন সার্থি। इन्गान् जानित्वन शकां जातीत्रथी। भीतां के महारम यान् ठाँकेश काहाक । ें दूषी श्रुंत्वा कैं। एक जानि नकत इंश्तांन ॥

সপত্নী নাটকৰ

কেমন বাবু! শুনিলে ? সর বুকিলে জো ? কবিত্ব শক্তিই পৃথিবীর সার পদার্থ। ইশ্বরের ইক্ষায় তার অপ্রভুজ নাই। শারেও নাকি কবিত্ব শক্তির বিশুর প্রশংসা করিয়াছেন, বাকের শুনে এ কথা শুনিয়াছিলাম। ছেলো ব্যালা ধরাধরী করিয়। বাবা আমাকে এই ২চনটি শিখাইয়। দিয়। রিয়াছেন, তা। এখনও ভুলি নাই, কড়াম সঞ্জাম মনে আছে, যথা শবরং দুর্নভা নোকে, ছাবাব বিদ্যা তত্ত্ব সূদ্র্নভং। গুরুপার কপিত ক্রিত দুর্নভা তরে, স্থেরশ্রক্ষি তত্ত্ব সূদ্র্নভং। গুরুপার কিলা করি সূদ্র্নভং। গুরুপার কিলা করি সূদ্র্নভং। গ

শ্মানি বাচ পিতিষ্ঠান্ত, মগম শাস্ত**ী সমে,** মংক্রিঞিং বিশ্*লা দেকা*। মধ্যি কাম মোইনিং ॥ শ

কেমন বাস্। ঠিক্ রাশিরাছি কি না । এ তো কাঁচা সমস্কার নয় ? আবার এ কিন্ন আপনি পত্যে পড়ো আর একটা ভাল প্রেমান পেয়েছি ভা শুনিবে । এই শোন বলি, দেশ দেখি নালে কি না।

"নক্ষায় রাবণ হাজো, ুর্টেলে। কেঁদে রাঁছ হলো, ও শিকা তোর মাতায় বাপাঃ॥ গ

সে যা হোক, এখন বল দেখি বাপ । বিষয়টাই কি শুনি।

শর্মনায়। (চতুর্দ্ধিক্নিটীকণ ক্রিয়া)। আমুন, এদিকে

শরো আমুন, একটু গোপনে বলিব।

(সকলের সম্ব নিকটে উপবেশন)
কর্মনাথ! (নাৰু মূদু)৷ কোথা ? লাহিড়ি মহাশায় কোথা ?

পেলাদিকে দৃষ্টিপাত করিয়া) কোথা হে প্রীকণ্ঠ ভায়া। এখা-নে আছ কি না ।। গুলাম্বর ট প্রকরে। (মৃদু মৃদু)। ই। এই যে আল্রা সকলেই

গদাধর । একরে। (মৃদু মৃদু)। ই। এই শে আলরা সকলেই. ব্রিকণ্ঠ । আড়ি (ভ্ধরকে সম্বোধন করিয়া)। যাল, কিছু ভাগ্রস্ব ইউন, ''গুভস্ত দীয়াং''।

कृषत्र। (मृष् कटर)। এই य इहेशोइह , वनून मा "तीत सहामरा । कात जीव कि ?।

শর্মণ । তারিদিক চাহ্মা, মৃদু মৃদু)। কথাটা কি মহা শয়। আঃ। আশনি তো ১কলই জানেন; ভূষব বাবুর অতি অংশ বয়সে বিবাহ ক্ইয়াছিল, স্করাং এ ব্রীটা ঙোর বড় মনোনীতা নয়; কিছা কি করেন, অগত্যা তথাপি তান ভাহাকেই অনুলম্বন দিরিয়া এক প্রকার কর্মপ্রেক্টে কাল ক্ষেপ করিতেছিলেন। এফানে উহার সেই অপাত্রে অফুচিত সম্বিধ্ অনুরাগই নঙ্গলের বীজ স্বর্গা হইয়া উঠিয়াছে; উহার মাতা ভলিনী প্রভৃতি গুরুজন ও গুইজনেরা মনে করিয়াছেন ভূষর ঐ স্তীর বনীভূত হইয়া ক্রমে ক্রমে তাহানিদের মতের বহির্মাত পারেন না এই নিমিত্ত সকলে একবাকা ক্রমা মনস্থ করিয়াছেন ভ্রমের আর একটা বিবাহ দিয়া, স্বন্ধে আনিবেন; ফলতং ভূষর বাবু কিছু ভাহাদের মতের বহির্মত নন্।

ে ঘাহ। হউক, যে পাত্রীটার সহিত একবে সম্বন্ধ নিক্ষা হুইতেছে: সেটা ইঁছার জাতান্ত মনোনীতা, ইনি তাভাকে

সশস্থী সাটক

ইত পুর্বে বীরংবার দেখিরাছেন, এবং তদর্গ ব্যাকুল নাছেন অত এব ইহার বাসনা, খাড়া ভালনী প্রভৃতি, বৈ উল্লোক করিতেছেন, সে কার্যটি রাপার হইলা যায়। কিন্তু ভূবা কি আন্দেন প্রবিষয়ে কন্তাটির একান্তই মত নাই; অত্তব যদাপি অসা কলা কোন সমতে আপান একবার আর্দিলা, গণনা করিলা ভালরূপে বলিলা গান্ এ বেলির সন্তান সন্ততি ইত্রেক না; ভালের প্রকলকার এক মত হল এদং বিষয়েটা বাপার হইলা নাম।

শত কথা কি । কাছা । আপনারা নিজিপী থানুরা পারুল ।
করা আছেন, আনি আছি । এলনে উজ্জানপ্তা করুল ।
গো। । কণেক চিন্তা করিলা)। তথে আমার কথাটা কি বাপু আনেন । আনরা সর, হইলাম ছালি দারিত্রী যান্ত্য । ছ দও ছাপু স্কু না করিলে সংসার চলে না, আবার স্মুখে পোড়া কিভিটা পড়িয়াছে, যে ছরাত্ত জনীদার । টাকা কাছায় বাছিয়া নিজা যাইতে হয় । ছাই বলিভেছি । থাজনার ও টাটাকার এ পর্যান্ত ভারী অসমস্থান রহিবাছে, অভএব এ মানের এ কটা দিন চুপ্ করিয়া থাজুন, পরে আমি কায়া শেষ করিব।

मर्सनाथ। (यदन यदन)। (वाकि शिहाट्ह; हेहात। त्य-किट्डा चाजी : कथात नहीं: कारमह- । ए प्रदेशन नगरक हेहेटड ह में मेका महेबा, खनाय)। में मा जनक महानहीं छो स्ट् नो ; कामर नकाल (वेला जानिएड रहेर्ट ; अ जाननात ग्राम् जानुक, अर्हे थाजना धतन । (संख्य संख्य समान)।

ক্রাকান্ত। (অর্থ পাইরা পরিভোবে)। আছে। বুলুপু! ভবে আজ অসি।

(मकरणह व्यक्ति).

स्र्यांकाछ। পথে वाहेष्ठ वाहेष्ठ উद्धान्ति कवित्रा, यग्छ)। आः। वालाहेः এত हहेश शिश्राष्ट्रं। या इंडेक, आक्रकाब स्थान्य वर्षे, ६ हातिहै। होक। हांड इहेल, तिश्रीत मरलत मारस मिकिसी इहेलांस। छै:-! कि द्यांकः!

(क्टीम क्षर्त रर्नेन)

অভিশ্ৰোয়। শুক্ত

প্রথর গগনে দিনকর, দিবা হৈল দিতীয় প্রকর। জিনিয়া জ্বান চ্নি, উপরে উদিত রবি-উত্তাপে ধরণী খরতর।

সন্তাদের হুক্তি জালারধরা বুকি ধরীতল যায়।
ভাইতে সহত্র করে, প্রসারি সহজ্ঞ করে,
রাখে বুকি ধরিক। ধরার ম

সপত্তী নাটক্

মরীচিকা নিকি মিকি জ্বনে, ভূঁভাগ ছুবিল যেন দলে। বিলোল কলোল মালা, ভক্ত মক করে খেলা, ভ্রম হয় জলে জার জ্বনে।

অথব। এরপে মনে লাগ,
ভূষাম ক্ইনে বুলি লাগ।
শাগর ভাগর ক্লেয়, দুবাব আপান বায়ে,
শংসার করিল জলসভা।

জীব লস্তু আকুল অন্তরে; আতপে ভাপিত কলেবরে। কি বিপত্তি রাম রাম, তার কর করে দায়, তবু দাহ, দেহ দাহ করে।

শুকাইল তর্মলত। দল, ধরে ছিল নব নব দল। পথে না চরণ চলে, সবে বলে ঘাই দলে, প্রাণ করে সদা জল জল॥

বৈকাল সুথের কাল বটে। কবিরা এরপে ভাব রটে। কিন্তু ছপুরের বেলা, যমে আর দীবে পেলা, যদি রয় এ জীবন ঘটে॥

नश्रही नाउंकः

আহ। একি স্বভাবের ধারা।
একি দেখি বিপায়তি ধারা।
এইশাত ছিল যাহা, আর আহি হেরি তাহা.
থাই। মলি চভোৱা হই সারা।

নিশি মাই শনী নাই জায়, কোথা সেই বাডাস উথার। এখন ভাত্তর কর, দগ্ধ কবে কলেয়ত্ত সংসাদ করিল ছাতথার॥

পশ্ব পশ্বী ভূচর খেচর, উত্তাপে ইইনা দ্বর দ্বর। গাছের ঢাঘাল দিলা, রহে সবে ঘুমাইলা, নিজাবেশে ক্ইনা কাতর।

मक्त रक महा। शदन, विश्व हार्ड अञ्चलन ! किंड बार्डरेन कर्ना, दूरहे डाट्ड बननना, हे स्यानीन किंत्रिल कीवन ॥

পথিকেরা শ্রমিয়া ছামায়,
চাদর পাতিয়া নিজ্ঞা বায়।
কারু **সাহে** বোচ্কা সাতে, কেহু দেয় হাত মাতে,
কেহু কেহু কুঠিত ধুলায়।।

नेशकी नाउका

পিছে পিছু পাশিষার হব:

শঞ্জন শঞ্জনী নাচে শব।

দারা পেয়েঃ খোলে ভালে, নাচে গাঁল কালে কালে,
কবে সদনের মহোধসত।

कुछ कुछ - त्यां किरतात १६ कि. चेट् पेक करत दिर्ताक्षी । त्यां किरतात कुट २४८ (इस छात घरत सथ.) इंग्रंग त्यां करत चेट् त्यां ।

বানর বানরী কুছুম্নী, শাখার বনিয়া গলাগ্রী। শতিহা, মদন বাবে, মত মুখ মধুপানে, দলাহলি আর বলাগ্রী।

जगत जगती हिंगार्क लिनि। वाकत खनक भारण (किनि। हेकाहेक् करत तन, श्राप्त शहर धन पन, स्मार्थ (अन्तर्स हमाहती॥

হোই হোই রাখালের দলে।
গোকুলে গোকুল কল্যে চলে।
কবলে ভূগের শুদ্ধ, উচ্চদিকে উত্ত পুদ্ধ।
হয়। রব ধেয় বংস দলে।

मण्डी नाउँक।

& # ___

ধবলি । শামলি । বলি মুখে, রাখাল চলিল গোষ্ঠ মুখে। হারে রেরে রেরে রব, বলে চল ভাই সব, গোঞ বান্ধি নিগ্রা হাই সুখে।

ঐ ভাই। গেল ভোর (উড়ে)। ফিরালে মারিতে ধার তেড়ো। শ্যামল শন্যের ক্ষেত্রে, হামুড়ো পড়িল শেত্যে। শেতো চাও চল ভাই। হেড়ো॥

ক্ষকেরা ছাড়িয়া লাজন। ঘবে যায় হইয়া পাগল। গুছিনী লইয়া তেল, পরিবারে দেয় হেল, খাহ পরে যেমন সহল।

নে সময় সুসময় নয়,
নিকারা যত মিউ কয়।
গায়ে যেন বিষ লাগে, রেগো উঠে আর্গেভাগে,
বলে মাগি। এ ছঃখ কি সয়?॥

ভোষা কাগি হয়েছি পাগল, আর কি করিছে বল, বল?। কটিতে কৌপীন পরা, মাতার চুলের ভরা, রাজা আঁথী সদা চল চল।

नेशकी नाहका

()) (तन्या प्रहान् कलकन)

यस्थित ।

কবিতা।

शत शत भूतराकिः, अनाम यतिन काँगीः। अपन हनानीः आर्थ आर्हि शानि, कि कदिन मर्कनानीः॥

कारता कारता भत् क्रूं ि । । अयि इना त्वा क्रूड़ी । कानि टात क्षत भाग रेक्स पूनः काहा कि क्रस्थत क्रुड़ी । ॥

কি হৈল কি হৈল হাচ!
পড়িলাম খুন নায়।

একে নারী বধে, পাপ উর্জ অংশ,

ই খুন মান ধর্ম যায় ।

সেকি মেকি কেন কেন?,
প্রেয়সি! সাহস, হেন?।
হৈলে দোৰ ৩৭, হতে হয় খুন?,
আপনি সুর্জি যেন?।

⁽३) कशक्ल, -कशहर ।

***CHR*

বিশা কৈন করি রোম।
বাৰার কি দিব দোব।
পোড়া দেশ ছার, পোড়া দেশাচার,
ভারত ককের কোব।

(क्षांछत्र मधावकी यहांचामान, क्षांसास वर्षे वृक्षः)

(>) (मारक्यती, त्राम्बिक्शानिनी, नर्ख मुक्त शिरतामनि, उक्कविलान), कृतरम्बन, अवः रटक तक्क् लहेता आजुनाग्निक्टक्रमा कीविजीवरमनः मन्नारक्मारक्मा जेनानिनी स्माहिनीत क्षारक्मो

সাহেৰ্যী। (জোধাৰিতা ও চকিতা)।

ধন ধর পুরবারি।।
গলায় বসিল ফাঁমী।
এমন সলানী, আগে নাহি জানি,
কি করিল সর্বনানী॥

हांत्र दियानिनी। (इस्कः)।

আলো আলো মর ছুড়ি। এবনি হনা লো কুড়া। আনি ডোর গুণ, দাদা হৈল খুন, আহা কি নপের কুড়ী?॥

⁽১) भारती, मेन्ह, युर्डा, यामी, देवत बद्द देखविनादमत अध्याद्भी। संग्रमसङ्गे ब्राम्पानीपादित भाष्ट्रधानवीनी देवान शृह्द भारतीत। पूरमस्त्री, अदिस्के सुरुगत छाता।

मंगडी गारेका

नर्सम्बद्धाः (त्राक्र महास् ७ दिश्वकारन्)।

कि रिश कि रिश शत!, अफ़िलांग चून मात। अरक माती बरद, भाग फेंब करव, बन भान वर्षा यात।

अविगात । (अताक रुग्या)।

শৈ কি ? দে কি ? কেন ? কেন ?, থ্রেয়সি : সাহস হেন ?। হৈলে দোল গুল, হতে হয় খুন, আপনি সুৰুদ্ধি খেন ?।

कुरदभक्त । (इक्जि, विहक्त ଓ जीज हरेश)।

র্থ। কেন করি রোধ, বাবার কি দিব দোষ। গোড়া দেশ ছার, গোড়া দেশাচার, ভারত কটের কোণ।

পূর্যকার। (পাবে দৃষ্টিপাত করিয়া সবিধারে)। রেঁচ। উত্তর্জন ?।

प्यादिनी (वहेन्स भाषात बेन्सू में ध्यांत्र कतिया तामन कतिए। कतिएक प्रशंक)।

হা ৷ এ হডভারিনীর সংসার আক্রেমের স্থা সচ্চো -्रात जाना गर्मात सूर्वाहेस् १०। (अल्पन्ट न्यू पृष्)। श् 'বিশ্বাড়া। কোনার খনে কি এই ছিল। হে অগদীখর। এই' ছাৰ্গিনী, অসহা সন্ধিনী বস্ত্ৰণ ও পতির চিত্র বিরহ এঁকান্ত तहा कतिएक ना शास्त्रिक्त अहे अकर्त्वरा शांत कर्त्व अवर्त हरें एक एक -- खेबकारन आन विद्यांत्र कब्रिएक एक एक एक एक ক্পৰাৰ্! ভূষি দ্যাম্য, বেন ও নামের সহিমা থাকে। श्रामि कई कामारक मातव कतिया कामाव निकट कमा आर्थ-দা করিতেছি। যেন স্মরণ রন্ত একানে আর কিছুই চাই না। (क् मत्रायतः । मशा कतिता द्वतन अहे इस्तित्र भाग शक्ष इहरिंठ सिकांत कतिया भाराके द्यामातः ए मीनमाथ - अतिसाहि "অপঘাত মৃত্যুতে বড় পাপ হয়ণ (রোমাণ ও গার শিহরণ) দেখ্যে ঠাকুর! আবার এ অসারীর বেন দে পার্পটিও না इंग्न, এই किया मिश्र। (क्ल्कान क्षाम क्षिमा) (इ ठीकुत ! क्रिसाहि "मञ्चा जन्म वड़ इलंड सम्भा" जाडवर महिसा आह अक्षात त्यन मञ्चा (नश्रीहै, अहे करत)। सनि श्रीत हहै, बारत त्यम अक जी शांकिएक खना जिताहरू मेंडि मे। इस । यनि , बार्ती हरे। उरव दियम व्यक्तित और ध्री बिवार भाउनी चल्लवास 41 46 T

र व्यविकाश । शिष्टक शावन मीनवरका। शिष्ठ, कृत्रश क्षाकाद इन्- क्रांड्, क्रांथ माहे : क्रिक्टर्नक्रीन ध्यम क्रकारक । अक्षेत्र टेव व्यव्यक खीद शिक्ट मा इन क्रहे आपना। व्याद्ध-शिक्ट, द्वानी महित्र इन- क्रांक क्रांत्र- क्रिनारक जिनारक जिनार করিয়া কাল খাপন করিবে, তব না পাই, নাই নাই, তথাপি বেন খানর মত একটা বর পাই ঠাকুব।—বনে বনে নেডা ইব,-গাছের ছাল পরিব,-গালিত গাল পাইবে,—নিরিগুছা বাধ গুছ ইইবে,-শালায়মান নব নব দুলাবেল জ্নীতল শালা স্ট্রেন,—দিলিওক্ত বালিশ করিছা প্রিকে গায়ন করাইব-ভালাতেই মুগে শাল করিবে, হে ঠাকুর। তথাপি যেন পতি, মতিনীর পতি না হন, অবলার গতি পাটরেছের যেন কংশী না থাকে, সাধ্বী স্ত্রীর পান্ম ঘন প্রির প্রেমবন যেন মতিনী হতে না বাল। লোহাই-নেছাই-দোহাই-জন্মানি। এই ডিকা দিও, নচেধ এই ব্রীজ্ঞার পাপ ভোষার হঠকে ঘা মার নছে।

ক্রেমনাথ। জানি মনে জ্যানেও ভো কথন তোমার নিয়মের জনাথা করি নাই, বরং তাহা প্রাক্থানে বজা বরিলা চলিয়াছি, পতিকে এক নিমেষের নিামন্তও ভাভজি করি নাই-স্থান্থও পরপুরুষে অভিক্রচি জামানাই। যদি সে প্রস্থাপথ জ্ঞান করিভান, ভবে কেন এ পাণ কর্মা করিব, এরং তবে কেন ভীতা হইমা ভোমার নিকট এত বিনয় করিছে হইবে; যে জন্য এই আত্মহত্যা করিতেছি, পরপুরুষ বিশোষ্থেও তো আপাততঃ ইহার জনেক ছঃখ দূর হইবে পারিত । না, না, ভা ভাল নয় ঠাকুর! ভাহাতে ভোমার নিরম লক্ষ্মন ক্রা হয়। সে পাণ জীলোকনিপের পদ্দে নামানা পাপ নয়, জ্ঞার পাপ। যত দিন চক্র সূর্য্য থাকিবেন— যত দিন দিন যামিনী হইবে, তত দিন পর্যন্ধ কানিনীদিগকে সেই মহা-

পাত্তকজন্য ছন্ত্র কন্ট ভোগ করিতে হয়, সন্দেহ নাই, ছে
লগনিবস্তা। আমি লাহস পূর্বক বলিতে পারি তদপেন্দা
আত্ত্যা উচিত ও নিস্তর পুলোর কর্মা, বরং বিষ পান,
বরং উদস্বন, বরং উর্জ হইতে নিপতন, বরং জল এবিশি
বরং দলভ হতাশন প্রবেশ দারা আত্মহত্য করা ভাল,
তথাপি জীলোকদিগকে পরপূর্ববের মুগাবলোকন করিতে
নাই। এ বিষয়ে শান্ত্রেও গুরুতর নিবেধ আছে।

। কণেক চিন্তিভার ভাগে দ।ড়াইয়া।

হা! এত বিদ্ধ করিতেছি, স্বরা করি কেউ দেখিয়াঁ
কেলিবে। (রক্ষু ধরিয়া উর্জনুতে, রুডাঞ্চলি । হে জনদীশ্বর!
হে ভূডভাবন! হে দরামণ! হে নর্কান্তর্যামি: তুমি সর্কান্তর্যামি: তুমি কর্মান্তর্যামি: তুমি সর্কান্তর্যামি: তুমি সর্কানি: তুমি স

(कनकाल क्रांपन स्वित्रा)

হা পিডঃ। হা মাতঃ হা জাত্বর্গ। হা ভাগনীগর। হা আন্দ্রীয় স্বজন। এমন সময়ে কোমরা কোথায় 'রহিলে, শেনকালে তোমালিগের সহিত একবার সাক্ষাৎ হইল না, এই খেদ রহিল। হা। তোমাদের মোহিনী এই জন্মেরমত বিধায় হয় কোথার বাইতেছে, একবার আদিয়া দেখিলে

সপত্য নাটক শ

मान । हा ! किंगता विलिक "जीमामित माहिनी अि भार विद्या, वड़ स्थीत, निवानिन मूर्य होनि वांशिया निह्याद्व कि कथाण नाह ।" हा ! अत्या अत्या, तम अत्य, अकवात मिर्देश पाड़, क्षिमामित देन स्थानित मिर्देश क्षिमा एक विकास कि किंगा एक स्थाप अववत्र मिर्ने हिलाह हा खान अववत्र मिर्ने हिलाह हा खान अक्षात स्थान हा हा भव अववत्र विर्वे हिलाह हा खान अक्षात स्थान । स्थान क्षात क्षात

হা তেন্ত্র বলিতে "মোহনীর গড়ন খানি কি ক্ডেল। হাত তুলি যেন পালের মুনাল। মুনখানি যেন আহক্টো পলালুল। আহা। অভানী, চকু তুলি যেন ভরিনী হইতে হবল করিয়া এনেচে। চুলগুলি যেন চামরের মন্ত। কথা গুলি কি মিউ মিউ!—মন মধুমাখা, কোলিলের কুছ্ হানি জিনিয়াছে। আহা। এ সময়ে ডোগরা কোখায় রহিলে দেখিলে নাল ভোগাদের সেই সক্ষান্ত হানিরী, এখন আনার কেমন এক নূতন মুন্তি খাবন করিয়া শানের বটর্কে বুলিতেছে। সে তোমানের নিকট আর ঘাইবে না, তোমরাও আর তাহাকে দেখিতে পাইবে না, তার মানবীলীলা নাম হইলা, তার পভিরত উল্বাপন, আসি-য়া দেখিলে না?।

হা। তোমরা বলিতে "যোহিনীর কপালটা ভাল, গেমন হোক একটা চাকুরে। ভাতারের হাতে পড়িল, দশধানা অলকার প্রতীকার পরিয়া মনের খেদ মিটাইতে পারিখে। আহা। এ সময়ে তোমরা কোথায় । ভোমাদের সেই ভাগা বভী মোহিনী গলদেশে কেন্দ্রন অলকার পরিতেছে দেখিলে নাই। (রজ্ব প্রতি ক্ষিণাত করিছা, রোদন করিতে করিছে)। অলকার প্রতিক্রি ক্ষকে তোমরা বলিয়ালিলে, ডোমরা বজন ও গুরুজন, তোমাদের কথা মিখা। কেন ক্ষেণি শ এই দেখ ভোমাদের মোহিনীর জ্বন্ধারই প্রতীকার ক্ষণ, ব্যোক্তি প্রতিক্রি বিলে, ডোমাদের মোহিনীর এই তে নরীতেই পৃথিবীর সকল সাথ বিটিল। হা নিষ্কুর অদৃষ্টি তোমাকে নমন্বার দি।

। कर्पक ठिल्ली कहिता, धकाल रेपमी तुमाचन कविरक मी लाजिया।।

হা মিঠুর সভিনি। হা নির্দিয় সামি। হা, পারাণ হাদং শশুর। হা ভাকিনি লাশুড়ি। হা বাশেরি ননলি। হা পোড়া পাড়া পড়ান। ভোমরা আর মোহিনীকে কটু কহিও না। মোহিনী ভোমাদের কত উপকারিনী, এবার নিশেব জানিতে পারিলে তো?। এই দেব, মোহিনী প্রবাস্তপনে কোনা-মিসকে নিয়কক ক্রিয়া গেল। আর কি উপকার করিতে বলা, বল ?।

(क्टब्क हिंछा कतिया)

হা দেবর ভূবনেশ্বর। এ সদয়ে তুনি কোথায় বহিলে।
আহা ! চাঁদন্ধে একরার "বড় বৌ, বড় বৌণ বলিরা কি জার
ডাকিতে হইল না?। আজ কোনার নির্দির বড় বৌ তোমাকে
কানী দিয়া কোথার চলিল আসিয়া দেখ। হে প্রিরতম !
আজ হইছে তোমার অঘণ্ড ভারত হইলং তোমার যে ডাকিনী
না, শে ছবন্ত বোন, জানার কাছে যেরপ ছবন্তপনা করিতে,

यशकी महिन्द्र

ভার তাহা করিও না, করিলে ক্রিনারে বিজ্ঞর ক্ট হইছে। তাহারা কি তোমার সে কাব্যার সহিবে।। আর, আমার নিকট "মা মাণ বলিয়া শেষন আসিতে, কি করিবে। ক্রুটকে বর প্রিকার! ছোট বৌর নিকট আল মবহি সেইরপ করিও। হা মাছ রে! তুমি আল অবি মাতৃতীন হইলে, সাব-ধানে চলিও। কেই কিছু বলিলেও তাহাতে কনাচ উত্তর করিও না। তোট বৌ, দলা করিয়া ভোমার এতি যে পর্যান্ত সমাবকার করে, তুমি ভাহাই প্রচুর মানিও।

্ছা আছা। বুক্ষে কেমন কেমন করিছেছে রেও আর তোকে মনে করিছে পারি না। ঘবে জল খাওয়ার রাখিলা আদিরাছি, জ্ল হইতে স্থাসিয়া জাত্রে তাহাই থাইও। বাছা। আমার মাথা গাও, জাসার জান্য জার রখা ভ্রত্তাশ করিও না, গাঁড়া হইবে, পীড়া হইলে ডোমাকে কে দেখিবে, বলও আর তোমার দেখিবার মাত্র নাই।।

((लाया विज्ञांगांगीटक (स)टम गरेगः)

সাছা। যাও,—ঘরে যাও, আর কেন এ অভারিনীর চারিদিকে "হাঁও মাঁও" শক করিয়া, ঘুনিয়া ঘুরিয়া বেড়াও, নারা বাড়াও বল । তোমার বিশুর গাঁও, এই তোমা-দিগকে ছাড়িয়া চলিল। যাও, বাছা! ঘরে যাও, এ শাশান ভূমি, বড় ভয়ন্তর স্থান, ঐ দেখা শ্রাল ক্রুরসের চারি-দিকে "হেঁ হোঁ" করিয়া বেড়াইতেছে, হার কিছুকাল পরে এখানে পাল পাল আগিয়া আমার মাংস শোনিত গাইরে।

मण्डी नाहकः।

বাঙা! যাও যাও আমি জীবিত থাকিতে পাকিতেই ঘরে

ं (पूर्यपूजन करिया)

বাছা। জামার ভ্বনেশ্রকে বলিও ধে আবি মাঁ ওর মলে সহে শাশান পর্যান্ত সিয়াছিলাম, সংকার করিছ। আসিয়াছি। আর, দাদা। মাও, ছোনাকে কাঁদিতে বার্ত্ত করিছা বিয়াছো। এবং আ্যাদিগকে অতি সাবধানে ঘর করিতে কত আশীকাদ করিয়া নিয়াছে। (মনর্বাত্ত স্থ-চ্ন্ত্রন পূর্বক বিভাল পরিভাগে এবং উল্লৈখ্যে রোদনা)। বাছা। যাও যাও, শীয়া ঘরে যাও, আবার কেন 'মাঁও মাওণ কর, আমার আর বিলম্ব নাই, আমার মৃত্যুর পর এ স্থান অভি ভয়ন্ধর কইবে। তোমরা আর এখানে আসিও না।

্থিই সমতে বটবৃত্তে এক টিক্টিকী ডাকিয়া উটিল, ডাহাকে শক্ষকরিয়া)।

জরে অনুরদর্শি টিক্টিকি ' ভুই আরু কেন এখন রুগ।
টিক্টিক্ করিস্ । নিষুর বরের সহিত যখন এ হঙতা
রিনীর বিবাহ হয়। তথন ভুই কোথায় ছিলি ?। ভোর দোষ
কি ? সকলি অন্যান্তরের ভপজার ফল '।

(এই সময়ে সউবৃত্যে বাতাল ৰহিতে লাগিল, তাহাকে লক বহিমা)।

় ও বাগু! ভূমি কি আমার আগু, প্রাস করিতে আসি-রাছ ?। ভাল ভাল ! ভূমি কি আমার প্রাণ বায়ুর সঙ্গী হইলে। বেশ বেশ! ভূমি এ অভাগিনীর প্রাণবায়ুকে সঙ্গী

मण्डी नाएक

করিয়া ল'ও ভাল ইইল, অভাগিনী একাকিনী কোণার। যাইত!।

(বটনৃক্ষের অধিষ্ঠাত্রী দেহতাকে সংস্থাধন করিয়া)।

হে বটাধিছাতি। ভোমাকে প্রনিপাত করি, এ ছভাগিনীর যেন পরকালটা ভাজ হয়, হে ঠাকুর। এই আদীর্কাদ কর, জগদীশ্বর দয়। করিয়া যেন এই অপ্রতি মৃত্যু সন্ম মহাপা-তক ভিক্ষা দেন।

(अरे विनिष्ठों के से में मिछ नगरम गटल तथन छोगाम)

भर्तम्बतः (ठाषाठाष्ट्री निकटि शिषा)। है। है। कि नर्त्तनाथः कि नर्त्तनाथः थ! काछ २७, काछ २३, ७ कि कत्तरः এমত অপकर्षा कतिएक नाह। (तनभूमांक देख्यू (योठन)।

স্বদেশর! (রোদন করিতে করিতে)। ভারি । ও কি । ই। হাঁ, মা! ও কি করিতেছ। স্থির হও, স্থির হও, এমন সহাপাপজনক মুঃসাহস করিতে নাই। (শৃথ বালুণ),

শোহিনী। (সৃদুষরে জৈদিন করিছে করিছে সকরণ) । ও গো। জোমরা আর কৈন আমাকে যন্ত্রণ দেও। আমি শে আর সৈতে পারি নে।

(यश्चत क स्वयंद्रक मध्यायन कृतिया क्रिक्टर)

ও গো! আমাকে ছেড়ে দেও, আমি এ প্রাণ আর' রাখ্ব না । (আকর্ষণ)।

্রকবিদাস। (আক্রেণ্লো)। আঃ : মর্ মরণ্: হিংসা-তেই মলোন আর কি ?।

মোহিনী। (কাদিতে কাছিতে কাজ্যরে)। ও লো: তুমি কোন আর এখনও আমাকে কল। এখনও ভোমাকে এক বার ভাল করো দেখ্যে ইচ্ছা হয় কেন।। তিকৈঃবরে রোহন।।

নর্বর স্থানর । (এবজ. উন্দেশ্যকে নথোচিত তিরকার করিতে ভূবনেশ্যা ।

করিতে ভাড়াইয়া দিখা)।

চল মা। চল, চল চল, ঘরে চল, ছিঃ মা। জামন কি
কবিতে আছে, তুমি বুদ্ধিমতী কুলনধু, এখানে লোকার্ন্য
ছইরাছে, আর এ স্থলে থাকিতে আছে। কলক হইবে, চল
মা। চল, চল চল, শীঘ্র চল, ঘরে যাই। (আকর্ষণ)।

সোহিনী। (উক্তৈংসরে রোদন করিতে করিতে)। ও গো।

তোমরা আর কেন আনাকে ছঃখ দেও।, আমি কোথ।

যাব। কেন্দ্র করো আর এ মুখ দেখান। (উক্তিঃসরে
দেখিন)।

न्त्र नाहक

सर्वात्राख । (डाहानिध्यत्र मलिहिन हरेग्री, मनिकटम)। कि > कि? कि अ महानश ! ज्यांगावंगे। कि?।

पूर्वतनगर। (विसर्व ७ जनक्कासाटर)। ्क्रम काहि सूच পোড়ান মহাশয় ৷ মাথা মুগু কি বলিব ৷ পিড়ু দোল বাল্য विवाद्भत कल अवनाउ।

स्र्यांकाछ। (कान गाफिया)। निः । कि यास् ता १ किছू-.हेट्डा वृक्त शीलांग ना

चूरमध्यः। आज कि विनित सङ्ग्यतः विनार जामन জাইদে, বুক ফাটির। যায়। পিতা, সামার স্যোক্তর অতি नीलाकारल निवाह मिशाहिरेका । भारत हे अयुक्त पाइकाम रूमटर त्य यशू मि मानात गिडास स्थादमाने हा हहेल : युड्याः তিনি আর একটা মনোনীতা কন্যা বিবাছ করিলেন। এবং रमहेंग्रीटफरें निकास नक रहेरतान । हेनिये मानात रनये आचा-तिनी अथमा खी। इश्नइ मिलनी यद्भवा नशा कविएक मा পারিষ। এবং পতির চির দিরছে একান ক্রমীয়া ও মংক্রা भूगा इहेशा अहे मुर्गरम वाशिएक आविवाङिक्त । छोहे विक्रियाम शिकु (माम वाला विवादक्त सद- अन्यक्ति ।

मर्स्तर्भतः (मष्टारात प्रवृद्धन करिया). आहा! खात्र কেন মুখ পোড়াও বল, আমি কি করিব - গোড়া দেশা-**धातहे नर्सनात्मत मूर्नीच्**त स्हेश**्छ**।

शामि निनिष्ठ आनि वटहें "वाला विवाह अकाछ अगावंह। বাপু! এই নিমিত্তই ভগবান মন্থ স্বয়ং লিখিরাছেন ৷ 🔆 🖖 ् जिश्मवर्षा वर्द्ध कृतार, क्षणाः पानण याविकीम । क्राक्षेत्रर्थाक्ष्मित्रर्थाः ता, धटकी नीमक् भवतः ॥ "

वाशू! आमता दाकान पश्चिक लाकः विश्वक्रम खरशंख .

आहि कर वहत्व क्षणा मद्भित ''त्रमार्थ कर त्य वत ख्राणूनि क्षणा मद्भानीका कतिया विवाह कतित्व। वत जिम वरमत दस्ता हान्भूवर्थ वस्था क्षणा करणा विवाह कित्रहा रूपा कर्णा कर्णा कर्णा वस्था रूपा कर्णा कर्णा विवाह कित्रहा क्षणा। कर्णा विवाह कित्रहा क्षणा। कर्णा विवाह कित्रहा कित्रहा कित्रहा कित्रहा क्षणा कर्णा क्षणा कर्णा कर्

আর, বাখু। তোমরা সে সব্কথা বল, সে সমস্ট আমার বিলক্ষণ মনে লাগো। গ্রমনোনীতা ধনিতাতে সন্তান সম্ভতির উৎপাদন কর্দাচ হয় না। আবাদের ধর্মশাস্ত্র কর্তারাও একথাটা স্পাক লিশিরা গিরাছেন।

" যদি হি জী ন রোচেত, পুনাংসং ন প্রানাদেরেং। অপ্রানাদাং পুনঃ পুংসঃ, প্রজনং ইন্য জায়তে। মতুঃ।

জী পুরু ের মধ্যে পরস্পর অঞ্জন থাকিলে বংশর্দ্ধি হর না। অতএন, বাছা! আর কেন মূপ পোড়াও।

আহা। এই ভ্ৰমনরে রাজা রামদোহন রায়কে সারণ হইল। হা রাজা মহোদয়। ভারতবর্ষের ছর্তাগাঁ নশতই কি তুমি অকালে নানবী লীলা কমরণ করিয়াছ।। হিন্দু ধর্মনাজ্যের মধার্থ মুমাই পরিপ্রহ ক্রিয়াছিলে।

দ্পভূী নাটক।

হা ! বাছা ভূগনেশ্বর । তুনি স্থামাকে কি তিরস্থান কর ? তেমার মাই এই সর্কনাশের সূল ।

ছুবনেশ্ব। তা বৈ কি মহালয়। পিত। মাতাই তো সন্ধ্যে হেতু।

্ হান! কি অছ,ত ফাল পড়িখাছে গ বলিতে হাদা বিদীন হা,— শাক সিন্ধু উদ্ধানত হইগ উঠে। অবে দ্বাচার দিশাচার। তুই দীর্ঘানুং হইগাই সন্দ্রী জাবত তুথিকে এক-কালে ছারণার করিলি। তোর কি আন বিদাশ নাই রে।। তোর প্রতাশে পাপে পরিপূর্ণ হ্ইল।। তার প্রতাশে প্রতাশে প্রতিশ্ব হইল।। হারে। তুই কি ভারতবর্ষকে প্রিচ্যার ক্রিনি না।। তোর প্রতাপে অর্থাহ ধর্মা হইল। উচিন্নাছে,—অপকর্মাই ক্রিব্রাক্রিলা সমাদরনীয়। তুইই পান্তকে অপান্ত, -থার্মিক কে জানামিক,—পুলাকে পাপ, সুমন্ত্রাকে সুমন্ত্রা করি-তেছিল

হা প্রিয় স্বয়ধর । ছংসময় দেখিয়া তুমিও কি আমাদের প্রতি এককালে প্রেছ্ সমর্থ ক্রিলে :— দয়াছ্ন্য শ্রুপে ? i মার কি তুমি এ প্যাপিত ভারতভ্ষির মুখাবলোকন ক্রিবে না ?।

外的

হারে ছুই দেশাচার!, করিলি রে ছারখার, তবু তোর না হয় সম্ভোষ।

र्भ मुंगी नाहिक ।

নোণার ভারত ভূমি, করিলি সাশান ভূমি, ক্রমে ভোর বাড়িতেছে রোষ। ি সর্ক্রশাল্লে এই পাই, ছেলো মেয়ো ভেদ নাই, ভোর মতে বিস্তর প্রভেদ। मखः (नहा शए दार्थः এ जिन क्रूवन (नाथः ছहिलाता गत्न शांच (धन ॥ এ দেশের শুভকর, ছিল এক স্বাহর, পলাইল ক্রমে ভোর আসে। যদি লে আনিতে চায়, ভোর ভবে আসা দায়, তেড়ো দিস্ ভাষ্যকৈ উল্লাসে। वालाकाटन हिन् विता, शबन्शव छित्र हिता, ं तत्र कमा। भिवस मा इहा তাহাতেট বংশ নাশ, ধন নাশ ধর্ম নাশ, अर्द्धनाम (मार्कत छेनश । পুরুষের। মত চার, বিবাহ করিতে পায়, मातीत कंगारन अंधरशीन। পতিহারা বালিকারা, প্রাণে সারা হয় তারা, আৰু মাহি পায় পতি কোন। ্ত তোর কেমন কর্ম। না বাছিদ্ ধর্মাধর্ম। মর্মা ভেদ করি।। কে বুরিবে এ চাতুরী, ধর্ম শাধ করি চুরী, निरक स्त्रम् जन्मात्रंत पात्री॥ শাস্ত্ৰ পৰ নিখ্যা হয়, ধন ধৰ্ম ধতি কয়। अ अर्थ प्रमान प्रमान एका क्वारह ।

দগভী নাটক

লোকের করিবা যাহা, অকরিবা তার তাহা,
হল গুল লাভ লাভ আছে।
পাতিয়া বঞ্চনা কাঁস, করিলি রে সর্বানাল,
নহিলে কি হল হেল সলা।
আনা ভোর কি কেঁতুক, তুল হৈল নারী শুক্
গালীর প্রধান হৈল মলা।
ভোবো মনে পাই নাথা, সোলা কৈল শোনা কথা,
রাজের নাড়িক রজবন।
ভাই প্রেরে ভোরে বলি, ভারে জনা নেশে চলি,
দাল বলি গাই জোর বলা।

वर्धकाछ। (किनिश्च वेर्धापुक ६६॥ मर्आनुमारक मरपाधन श्वेंक्)। महानश। और किए अल्लाकात किनिक महान रुकि।

নর্নর্পর (প্রসন্ধ বন্দে): ২।, মহাস্ত্র এখনু
আমার নর, দশলনের, রাখিল। মারিকে পারিকেই আদার।
অর্থনান্ত। (রাগভাবে)! এটা কেলিকে গড়ে নটে?।
সর্কার্শরণ হাঁ, মহালয়। সকলি দশজনের আনিবাদ।
অর্থনান্ত। (মুবভদিষা করিয়া)। হাঁ, হাঁ, বোকাগিরাছে,
বাও; আর বলিতে হবে না।

नर्तन्भर। (ज्ञान रहेश)। तकत महाभाव ? तक त्य विज्ञान

चर्णकार । विश्वक हरे नारे, इश्वित हरेगाम। नर्समुख्या (कन ? किन ? इश्वित हरेगात कावन कि ?)

मण्डी माउक।

ছর্মানার। (দল্জে)। বল কি গো। ছাখিতও ক্ইব না। তোমাদের গ্রামে নাকি কোম্পানি থেকে একটা কেলিজ বসিয়াছে।

দর্শকা। হা, হা, তার কি । বিস্তর যথে আমরা সর-কালের দরার পাত্র হুইয়াছি, ছেলে। পোলোগুলো মানুক হুইবার আশা হুইয়াছে।

ছর্গনান্ত। (মুখ নাকা ধরিয়া)। হাং বিল্পন । এত বড় ছবি সজি নোক হইয়া জাপনিও নৈ গভোর চালে বিচাচ্চন । এই চেন্ডো প্রামে সদের দোকান, জনীর আড়ভা, কর্নীর ঘর বরং ভাল ছিল। আপনকার টোল ছিল লবং। হোং — ভালভাকেও এই যে বিজ্ঞান থিকেন করিয়া ভূলিয়াছেন। যান ধানু । এপন বৌমাকে নিয়ো ঘরে যান। এত উভল। হইবেন না, ঘর করিছে গেলেই এমন কি? এরে চেন্ডেও অড়া হইয়া থাকে, মর সৈতে হয়। ভালিয়া কি ধান কথা লোপ কভো লান । ও বার ভালিয়াক ক্যানোত্ত নালাই জানিক ক্যান্ত। ওনিলে রাগ লাভ্যান্ত। আনক ক্যান্ত। ভালিয়াক ক্যান্ত। আনিক ক্যান্ত।

(शक्रामह क्षेत्र)

ত্ৰ্যকান্ত। (পথে ঘাইতে ঘাইতে, স্বগত)।
প্ৰা

ু এ কি দেখি ঘোর ক্ললি, ভাল মন্দ কারে বলি। সক্লি হইল একাকার।

स्मान एक हिन (हान) जाता व मानिल (शान) धमा कमा देश्हा छ।दश्रीत्र। যাহ্য থার মনে ভাঁম, বাধা ভার নাছি ভাষ্ণ 🕳 करत छाई गुक्त सह सहस्र। শাহি আর বলাবলী, উঠো বেল বলাদলী, क्लांक्ली महारहत मान् इ स्टेस बॉएएस विराह अल्या स्टार्ग खुटन दिया। আৰ বা দেখিতে লা কড়। মেগ্ৰেপ্তনে। নিৰ্বেপ্ত েল প্ৰেক্তাল গ্ৰেক্তাল (मर्था खराग कड़े नृक्षि हर । যে দিকেতে করি দৃটি, সৌগ গোলাখন সৃষ্টি, रत। दुवि असाकात हरवः फाइमारम दुवि जातनः मोराहाः माराम गातन युग्यद जाला एवं आरहा ছিল যত সুৱাল্য, হৈল স্ব কুৰাল্য, शाहरकारण माहि अंश्रांत । বাৰুগিরী ধ্রধাস ধোৰনাম বলকাম, বাজিয়াতে বজ্জাতীর পোল।। क्रिका भगाका गरः। ठारः। २,त वृष्ठ त्यः, किलाला अभिना कार्यन्त राली वाकना इंड खान, नवजीन मिहमान,

मार्टे क्रक मगरगत तन ॥

ঘারা সব বছ নোক, তার। সব বছ নোক, यम भाग इहेट्डाइ डाई। म्बर्थ अहे छिमालीलाः ही हे वाहे। या लीकाः ्यागारवंद गर्याक्त नार्धि তাই হৈল ধনা নোপা, ছুটিন ছটার ভোপ-भिन्ते भारते रिक्टा रकारमधा পিতা পুত্রে লহ ভাব, বছু গুলু নাহি ধার-নাই আর সংস্কারের নেশঃ ভেবে হুঃ ভাতি ভেদ, না বৃহিন আতি ভেদ, होता भए। कुकाइती शंता। ভাষ হয় ছাতি গ্ৰু সাৰে এক এপৰে ব্যঃ যাত সৰ সাংখ্যের ভেনিং। হায় হায় কৰ কায়, দেলে চাভি কেটো যায়-भाग माह याम किछहांनी ! মিতে ভার চলাচলী, ক্টগাড়ে গলাগলী,

नर्ताभूमत्। (भटण गहित्य गहित्य, क्रांक) :

এই কেন্ড আমিথিক মানি॥

कि छुत्र किनकात विन कात कार्छ। यूणिन ध्येहेर कुल शोलातित शोरह।

गण्डी नाएक ।

त्वम न्यू कि श्रृतारभटक भिनाद्यरह मला। পাপিষ্ঠ কৰিছে চেনা হিছে, রাছা, বল ৪ স্মার্ড লয়ে স্মার্ডিনাদ কবি হাম হায়। रिक करिया दश्य विधि मिलिएक छोड़ोत । व অবিধি বাঁড়ের বিচে কেন। প্রেসা ষেট প স্বয়মর নিশিক বলিল তাতে কেই ১৪ (भएकारमत (कर) यहः भिरतिक साई। কোন শাস্ত্রে লোখে ইচা দেখিছে না সাই ৷ ভবে কেন **করিল** যে এল গওলোল। বেদ বলিন্দ বাজাইতে ফকার্টার ভে'ল চ धारेत्व अरम एक श्रीकेटकी अल र्शाल कैल धन भाग भाग अधि शहा महा। नवर्षात्य मञ्जै विनी, डंहर्य महत्ता বিরি বিরি করি এক তুলিশার ভান। ८राष गाई (इस गाई ६९.५ ५०, ८४) প্রয়ন্ত লালিতে না পর্যবল্পন লেট । **७निकाड योगा**ल रहाहः भराषाः जाम। माना नामा नामा जूनियानन कार र সে কাছ সামান নয় অবস্থা: এই i णांशां इहिंगा अ यह। अन्तर कुलीम ध्यशीरह धता इड्झ कुलीन । मा अ गां वा कि एउट न के मैं इ ती ।। सारकं मारक छोटा तमन (मनीवत खाहा। নে তাল বেতাল যেন বেতালের মাচা।

पूत (हाक् रेंग जात कथात नाहि काय। नव शाला पूर्णहेर्त अवात हैरताल ॥ शिक कांत्र इंशामत त्रीक कांन (यह । नकरनत नव कन्नी घूठाहरत मिष्ठी। ^শদিন[া]কভ কর গভ হবে একাকার। ় কলিকাভা চেয়ে দেখ নমুন। ভাছার॥ সাহেব বাজালী আর নাহি যায় চেনাঃ উইল্মনী খানা আমি বল খান কেনা ? । পোটা কত যোটা মোটা বড় লোক আছে। शर्माशर्म ऋतिहात छाङ्कारणत कारक ॥ ভাষা বই ছোই হোই ঢাকের বাঁ দিক্। वास्त्र गाहे काएंग नाहे लाएंग नाहे फिक! কোথা গেলে মহারাজ জীরাখ মোহন ! তোমার ভারতভূমি হৈল কাঁটা বন। ় কি কর গে। রাধাকান্ত রাজা মহাম্ডি । মনেত্যাগ কর দেশে হইল ছুর্গছি॥ क्टों। हिंद्फा हिन्सू शर्फ कत शतिसात i (शाक्षरवार्श करें एंडार्श वाँहि ना रंग खाद । ুঁ হায় রে হিন্দুর কর্ম সনাতন ভূমি। **उद्दर्श का अक्टू कि अपन**्धि । বারে৷ জনে গোল করি ভোষারে হারায় ৮ मिश्रिक रकामात मना खीन रक्टि गात्र । , करव कृषि शूनकात हरेरव निर्माण। कड़ मिता क्षेत्रक स्ट्रेटन कर शह है

সপতী নাটক

উঠিয়াছে যে দেনি নিষদ গোলযোগ।

এ রোগ সুরোগ নয় সাংঘাতিক রোগ।

কৰি কম দিখা। নয় এই জুণ ঘটে।

যে কাল পড়োছে দেখ কি বিপত্তি ঘটে।

(অম্পন্ধ বন্দোগাখানের অভঃপ্তর)

(হরিপ্রিয়াও ব্রমনির প্রবেশ) (১)

হয়। (কর্ণাভ করিয়া আতে আতে)। ও মা! ঐ বুঝি পাড়াগাবানী পোড়ারমূখী পদী আশ্চে গো! আ মরণ্! কি পোড়া! মর্!—ওর আর গেয়ো দেয়ো কোন কম্ম নেই? কেবল ভ্জুক নিয়োই আছে।

হরপ্রিয়া। (সবিষয়ে)। কৈ ? কি পদী ? দেখো। ও যেন আবার ওখানে যায় না। খপ্পরা একে তো নেচে রয়োছেন। (দৌদানিনীয় প্রতি মুখ্তবি!।

(शबमूबीत छात्वम) (२)

পথ। কোথা রে হর! কৈ ? বৌ কোথা লো। ভোর। সব কি কচিছস্! আই। ! শুনেছিস্লা! জোঠাই কোথা গো!

ষ্রিপ্রিয়। ই (ব্যবভাষে)। থাক্ মা! থাক্, ও সকল কথা জার জামার বাড়ীতে জানিস্ না মা! একে মন্সা নিয়ে। ষর, তাল জাবার ধুনোর গন্ধ পেলো কি জার রক্ষা থাক্বে?।

रत। (राजकार्य हुन् हुन्)। (रैना नेक मिनि! अ छाइ

⁽५) अपूरदार्त्र मीछ। ও अतिनी।

⁽२) এতি বেশিনী আহ্বণ কন্ধা, বাসার্থা।

कि शिष्ठा छाई! खता अकि आभाव तृक्षे। यन छत् छत् करता छेर्छछ, विराव कि तृक्त्र शाहे। तीन! मर्कनानी कमन करता शतान पड़ी पिरत शा!। आमि इरता अमन धांखाङ्क अमनि आंमर्की पिरत श्राम। कञ्चम आतं कि मूथ प्रत्युम।

(कुरदल्ल खरवेष)

ছুধর। (আফোশে)। মা: তোমানের ও গব কি ২ই-তেছে গা। হর বুঝি কিছু জানে না? পদ্ম। তোর কি জান গপ্প করিবার জায়গা নাই? আর বুঝি কিছু কথা পাও। না?।

(कामनेक बरमानिधारप्रत खेरवर्ग) ।।

কমশহর। (সকলকে সংখাধন করিয়া, বিরাগে)। ভোমরা সব চুপ্করনা গা!— চুপ্কর, ও সকল কথায় তোমাদের কাষ কি, বল দেখি।।

(অন্তঃপুবে গলান দড়ীর ক্থা চুপ চাপ, নকলেব প্রস্থান) প্রমুখী। (তথা **স্ইতে প্রে**স্থান করিতে করিতে, মনে সনে);

शिक्शिय।

MA I

পোড়া দেশ বান্ধালার মুখে দেই সুড়ো।
বেছো বেছো গড়িয়াছে চতুর্মুখ বুড়ো॥
আর যত দেশ আছে পৃথিবীর মালে।
বন্ধার সুখ্যাতি করা দেই খানে সালো॥

সপতী নাটক ৮

যে শুনি সরার মুখে সে দেশের (১) কথা সে দেশ পড়িলে মনে, মান পাই ৰাথা। विस्मिग्ठः ছেলোর। यथन পড়ে वहै। ৰক্ষুই লাগে না ভাল পুধ ডাহা বই। आहे। देत क्या हिन्द नव क्या। **७निरल ॐ४त** यस ७७। इंट वार्थ 🛊 भारत नाई यक गाई मन्हें नगान। সবাই সমান জুপী সম ধল মান ॥ পিঞ্চরে থাকে না বহু গুহুমের নারী। কি সুখে কটোদ কলে আছ। শরি মরি। विवास्त्र किमन यूनाई पूर्तियम। ভনিলে সক্তোষ জ**্মে দুরে** যায় ভ্রাঃ কেশন সুন্দর করে ছাছার বিহার। কেমন গখীর ভাব অন্তরের ভার॥ त्कमन सून्यत नत काखिमा (नक्। मा इस मान्यह ज्या मा इस मान्यह ॥ कियन सुल्रत नह शादीत अवतः। না ইয় বংশার তথ্য বা ইয় সংশার ব किमन सुम्मत महा विदाशिक तथा। नां इश खनाथा उथा नां इश खनाथा। े किंगन सुमान नात माती प्रभारको । मा इस मरदर्गात ज्या मा इस मरदर्गात

⁽১) ইংগ্র একৃতি।

्राप्तिक क्षांक भव गर्त स्वन्। अम्मरणात्र लाक जव निर्मुत प्रवर्मन ॥ जित्तरण क्रायम नाह नर्वनाहे यथ। এদেশেতে छूथ गारे मर्कमा प्रदूध। সেদেশেতে লেখাপড়া ওক্ষম জপ এদেশেতে পর্ছিংসা তপস্থির তৃপ্র (अरमरण्डां अगरखार नर्तमारे लाक। এদেশের লোকে যেন সদা পুত্র শোক। পরছেব পর হিংসা পর প্রভারণা। পরদার চৌর্য্য শাঠা কেবল যত্রণ। ॥ এ দেশেতে যত দেখি নাহি কোন দেশে। এতে কি মনের সুখ হয় পোড়া দৈশে॥ ष्मञ्जूथ এদেশে দেখি প্রধান সম্পদ্। আত্ত্যা এ দেশেতে যেন মৃক্তি পদ। ভাতারের মুখ বেন জাকাশের কুল। ব্দার গর্দ্ধে এ দেশেতে মান্য করে কুল ॥ স্বামির সঙ্গেডে যেনু শক্তে ব্যবহার। কদাচার এই দেশে স্ভূর্য সদাচার॥ ্মহাপাপ এ দেশেতে মহাপুৰা গৰি। ज्ञ क्या क्या गम এ म्हा धनी। असनी भूक्त त्वन अ सम्बन्ध त्यरहा। • এ দেশের মেয়ো বরঃ ভাল ভার চেয়ো। मिवानिमि वहिएक्ट् जन्नरथन वज्। (मर्थ) अरना जना छाति छट्न क्रे क्फ् ॥

मणजी नाउँका

कात नाहि गर (नरह नाहि तर शान। किश्वा य अन यत तम् श्रुनानि ॥ हार विश्वनाथ! कृषि अगन निष्ठंत। ्रहाश्त अख्त नाहि नग्नत अक्टूत। তোমার জাকার বিশ্ব তুমি বিশ্বনয়। ভোমার এপাকপাত উচিত তো নয়। প্রকৃতির নঙ্গে তুমি পরামশ করি। ষ্পবশেষে করিরাছ এই কারিগরি॥ ভোদার প্রকৃতি ধিনি ভাল আনি তাঁরে। প্রধান কুহকী তিনি কে চিনিতে পারে। করিয়াছ এই কাণ্ড জার সমে যুটো। गादि कि जागादि विश्व हदस्य मुद्दी। কবি কয় কুল কন্যে। কিন নিন্দা গাও। হবিশা ছাড়িয়া বুলি থানা খেতে। চাও 🕫 । दिलीत जक मराखा

ভতীয় সহ।

-95444-

(জরশঙ্কর বন্দোপাধ্যারের অন্তর্গেন্ত) (সৌদামিনীর প্রবেশ্ব)

(কাদখিনী, নিতখিনী ও চঞ্চলার প্রেনেশ)

চক্ষণ। (সৌদামিনীকে সমোধন করিয়া, হান্যবদনে)। কি লো নড় বৌ! কি কচিস্? কই লো। বড় যে তোর গাট। কালো দেখছি:—হলুদ্মাপিস্নি?!

নিত্যিনী। (কাদ্যিনীকে গণ্ডোধন করিয়া, জিব কাটিয়া, বিশামে)। ও দিনি! ও না! চলী কলো কি মা! কালো বজ্যে কি গো! (চক্ষণাকে সম্বোধন করিয়া) ও লো! ও যে তোর ভাচারের নামে ভাসে লো! ভোকে যে নালো বলুভে হয়।

চক্ষণা। (বিরাগে)। যা ভাই। তোর ঐ বড় দোব;
কথার কথার ছল ধরিস্, ঈস্। কুলীনের ঘরে আবার
ভাতারের নাম থত্তো নেই? মত্ত্রের, কি আমার পরকালের ভাতার রে। মগ্যে সাক্ষী দেবে লৈ ব্যে ভ্রের
গেছি যা।।

নিভবিনী। (শোদানিনীকে নথোধন করিলা)। ও বড় বৌ!
বড় যে ঘটা দেখছি লো। বাজনা হলো। বনের গাছ হবে।
আবাব শুড়ে পাছি নাকি ইন্সরিজী বাজনাও আস্বে!
ভূমর দাদার এ ব্যের যে বড় ঘটা শুঞ্চি লো। হর দিদী জো
অধ্যিকী ভাল দেগ্ছি। ভোর ব্যেতে ভাই। অন্যে কি
আমিরাও লাতে পারি নেই। "ব্রোল দেখেনি ভাত, কুকুর
দাখে নেই পাত্র।"

কাছিনী। (পুথিনী ভাবে)। ছুর হোক নোন ও কথার ভার কথা কৈতে ইচ্ছে হর না! 'কারো সাগে বালী। কারো ছুপে ঢিনী '' দেখো বড় ছুঃখু হয় ় তোরা কি জানুবি বল্ভাই ? যার জাতে ঘা। সেই জাড়ে পেরেচে !। ঘটা হবে না কেন বল বোন ? এ ব্যে ভূথর দাদার হাতে কলমের ব্যে : এতো পৈত্রিক ব্যে নয় ? যে যা হোক্করো নার ব্যে ; চুপ্করো থাক্তে, হবে ।

দোষামিনী। (চলের মালে বলা ভালাইতে ভালাইতে, বাম পামের বৃদ্ধ অনুণী ধারা খুমি খুঁছিতেই, অধোবদনে, মনে মনে)।
হা! যাহ। ভাবিয়াছিলাম, হভ ভাগিনীর পোড়া কপালে ফি
ভাহাই ঘটিল! এখন কি করি।—এই প্রভিবানিনীরা ডুলীন কন্যা। জন্মে কখন স্বামির মুখ দেখিতেও পার মা।
উহারাও আমাকে উপহাল করিতেছে;—না করিয়েই বা
কেন? আমি উহাদের কাছে ভাভার ভাভার করিয়া ভাভারের বড় অহংকার করিভাম! হা! এখন যে মুখ তুলিয়া
কথা কহিতে পারি না।

্ কা নিষ্ঠ্য পতি । ভোপার কি এই ধর্ম কর্ম ! "বিশ্বাস ঘাত করিলে ! ।

হা ভারতবর্ষের ধর্ম। ভোষার বিচিত্র কর্ম কিছুই वृत्विएक शांति ना। श्रूक्ष सांकि यक है का विवाह कतिएक शीरत ? मात्रीनिरगत राजाहै महाशांश। (क्नकान हिंछा) हा ! ভাহা ইইলেই বা কি হইত। শদিই সে বিধান চলিত থাকিত, তথাপি কি এ মর্মান্তিক ছঃখ দূর ছইত দ একটা কুকুর বিড়াল পুষিয়া যদি ভাহাকে ভাল বাসা যায় সেটা হাড. ছাটা ব্ৰৈন নে ক্লে এত হয় যে আর প্রাণ থাকিতে অন্য कूकूत विजान श्रविए हेन्हा इत ना !- त क्राम्डे-वयन अङ् मर्माखिक कृश्य इत्र! ज्यम अ धः १ शत कथा कि कहित्।। (খামিকে লক) হা। নিষ্ঠুর। লোকে ছটো বিবাহ করে वर्षे, किश्व এक घष्टे। करत ना, शांभरन शांभरन गांतिश থাকে; আর, প্রথম পক্ষের স্ত্রীর সহিত হঠাৎ ব্যবহার পরি-ত্যাগর্ভ করে না , ছই দিক্ রক্ষা করিবার চেটা করে। হয় তো ক্রমে ক্রমে তাহা করিয়া লইতেও পারে। (ক্রমনাল চিন্তা) हा निकूत ! एटामात भरन कि এই ছিল ? जूमि य जामारक -अक् मूम नानित्व। अमून कतित्व। अकवात एम्योक मित्व मा। स्नामि स्टाप्नं कानिकाय ना। हा। अथन अ कि साबि ভোষাকে পাসরিতে পারি? জামি বড় পোড়াকপালী! না रहेरेल जामात त्कन अ छर्मना रहेरत हा! अमृत्छ गतन উঠিল রে নির্দর!!!।

मनादी नारेका

. १ १ । १८ १८ व्यक्तिवास ।

weeks and the second

विधि, विस्थि यंज्यम । २। শৃত্তিলেন যত রত্ন এই ত্রিভূবনে। ভাবি, পাত্রীপাত্র মনে। ২। पिरवार (म म्य हाई अक अक मान। শুনি, পুরাব প্রমাণ । ২। গজ রত্ন পুরক্তরে করিলেন দান 🛊 নাম, ঐয়াবত তার । ২। তরু রত্ন পারিজাত দিয়াছেন আর 🛭 फेटेक:,-- खाराः नाम यात्। २। এই অশ রত্ব রত্ব ২ইল ভাঁহার। হংস, যোজিত বিমান। ২। अ तुङ्क त्रकाद्य विधि कतिदलन मान ॥ महा, - शब नात्म निधि। २। **এই** त्र**क शरमभा**रत निर्शास्त्रम विधि। विधि, मग्राद माश्रह । २। कि@हिक्मी याला तुजु পाইल गांगत्॥ मशा, উপজিল जाँश। २। সেইরপ পতি রজু দিলেন আমার ! भारक, तुक रकरछे यात्र। २। **তবে কেন এ ছর্দ্রশা हৈল হার হার।**

अनुस्ति साम्बर्धिक <u>।</u>

नरमः क्षीतिकामः भावि । २ । रहेगांव भंगी अब, हेन्द्र नम सामी। ्र कालि, कि मना कामात। २। হায়ুর বহিয়া পড়ে বাষ্ণ বিষ ধার। ें भूषः छुलिव दक्षरानं। २। अकारी आवाद कुला नाहि विदुर्गन । হদি, জানিতাম হেন। ২। যন্তনে পরাধ তবে সপিতাম কেন। अभि, भाषरख कीदन। १। **काफ गांव रेक्श चर्य जा**मन (दोमन । জীব, যত কাল জার।২। **হই**রা রহিত্ব তথু শোকের আধার॥ मूट्य, शृशकांत कनि। २। শুনিয়া হাসিবে সব ভাগাবতী ধনী। गांध, हिल यह शत्न। २। अकळ इहेल जानि दिशाएत गरन t खाना, मिडनीत रुष ।-२। _-ভূগি নাই তবু হই ভেবে জ্ঞান হত। ভাহা, ভুগিব যখন। ২। ভাষিরা না পাই জালা হইবে কেমন। चाह्न, इके लोक एउ। २। পাইরা স্থানাথা হল করিবেক কড। किरम, वैक्रिय रंग मात्र। २। काविश (म मव काएंग कार्रंग श्री । পতি, এবন নির্মান।
একবার ভাবিল না সবর্দ্দ অভুরা।
করে, হোই হোই লোকে। ২।
কত ভার সই বল সারা হই শোকে।
কবি, করে হার হার। ২।
সতীত্ব রাধিয়া চলা বড় সোর দাস।

'নিজ্বিনী। (কাদবিনীকে সংখাপন করিয়া)। চ ভাই।
'জামরা নাম ঘরে যাই; আন্ধ কন্ম বর; বজু বৌদার ভাতাবের বো, দুটো আমোদ আন্দাদ কর্বো; রাভিরে জল
ইমতে যাব: কুট্যু সাকাল্ কত নোকের সঞ্জে কত আমোদ
হবে। ভাই বুলি বড় বৌ আন্ধ কথা কর্না; কায্কি
লোন।—'' মানু বা নেই মানু, ভোর বাড়ীতে মেজ মানু ? গ
তা কি ভাল নাগে?।

(रमगडतीत व्यरमम) (১)

क्या। (अवसीन्त नगरन शंनाम करके, कांगियनी, निक्षिनी क क्षणार्क मरश्रिन किया)। (जामद्रा अरमक्ष्मा। (वर्ग करतकः ; लाहे कांन्रक क्रिय्न विन कांचाद्र कांक्रक गाव नांकि ; मिनी ठीक्कन, मा ठीक्क्सन, रक्षणारमद्र भुक्रम क्रिकन। वांगा क्रा लोका, अथनक क्रिष्ट केंक्स्य स्टब्स्न क्रिका नि ; अथनि

⁽১) সোলামিনীর পিতৃত্ব হইতে আগতা দালী। কেনার আর কেউ নাই, কেনাই লোলামিনীকে মাতৃৰ করিয়াছে। ক্সা বাৎসলা করে। লোলামিনী ক্ষোকে মাব্যকান

শাবার বার ব্যালা পড় হব, বাও না না । এই ব্যালা কাষান পাতনা গ্যে, সর উজ্জুগ স্কুল করে সকাল সকাল সেরে নেও গ্যে; ভোমাদের দাদার ব্যে, ভোমরা কর্বে না ভো কে কর্বে বস্থ।

চদশা। নামা। আমরা খরে যাই; যার বাড়ীতে কক্ষ্র-সেই যার আমাদের সঙ্গে কথা কর না; আর কি থাকতে, আছে?!

निष्धिनौ। वर्षे का शा आभता कि आग्नि असिहि, ना, कथन इनून गाँगिनि ?!

ক্ষো। নাম। অসম কথা বলোন। তামরা সর বুজ্দার মেয়ে; বুজ্দে পার না কি মা। ও কি আজ্জাছে বে তোমাদের সজে সাখোল কর্খে: ও মরো রয়েছে। যাও মা। যাও; তোষরা সব আমোদ আলাদ কর গো; ওকে আজ আর কিছু বলোকাষ্নি।

> श्रिक्तारक मान्य भारती श्रिक्ता श्रिक्त । (विवारकत प्रिक्त भूषिक्त भूषिक्त ।

(ङ्खानिरगत गृंद)

বেচারাম। (১) (নিধিরাম (২) কে দম্বোধন করিরা)।

ানলে '—ছঃশারা; ভূই ব্যাথ্যাই বামুনদের বাড়ী
চাক্রী করেয় মরিস্? (কণকাল চিন্তা) না, ভো শালার

⁽s) · (e)

⁽a) mag (

भगडी नाउक ।

कारक वन। इत्य मि: जूरै वड़ त्यं श्रामक त्निक, ও नकन मिथ्ड शांतिम् नि।

निधित्रोष। (बाइलाएन)। कि त्त छाई। कारक वर् ना ? वर्ग्विनि ? त्त्राम्। ट्यांनीलाटक नमाधात्र (शटन मि। क्षित्रांबड़ी बारमार)।

বেচারাম: (হাডাহাতী করিতে করিতে আছলাবে অর্কউক্তি)।
 ছা ভাই! ছা ; বয়ি বয়ি ; বয়ি রে!-লা।।

निधिराम। (हैं) व भाका।

(बहाबड़ी हाड़ाशड़ी)

বেচারাম। আফ্ আন্তিরে কি কানিস্ট। নিধিরাম। কি রে ভাই ?।

বেচারাম। তুঃশা ! — দিনী ঠাকুর বরা সব জল ইগত্তে যাবে যে রে। দেখেছিস্ পাঁরগাঁর একটা কেমন দিনী ঠাকু-অন এয়েছে!।

निकाय-(बाकास्त) हिं। हो, त्यारे छ। ता:-

বেচারাম। মুই ভাই। একটা বড় বুলি করে। একেছি। (বৈচলশানা হইতে)

আয়শকর। (জ্জাদিগের প্রতি)। কে আছিদ্রে।।
নিধিরাম। এত্তে যাজি।

গপতী শাটক ৷

🦟 🔑 ু(লিধিয়ামেয় প্ৰদ্ৰ) 🐇 🦠

(असः भूत)

(কুল কামিনীগণের মনে মনে সভোষ)

অভিনায় ৷

PE I

कि जानक निर्मित्यार्श क्रूरपात्र नगर। স্থিতি অইব জল কোলাহলময়। क कात हारित उद्घ काथ। त्राय किया। আনন্দে করিব আজি বাসনার সেবা,৷৷ পিঞ্জরে থাকিয়া বন্ধ যত কট পাই। (यार्श योर्श मुद्र यार्थ एम सम वालाई। সাজিব সুসাজে আজি যাব বেশ্যা বেশেঃ बनाननी भनाभनी **एनाएनी (नर**व॥ বাসর আসরে বটে মঙ্গ- আইছে কিছু। কিন্তু সে একাকী বর মেয়ে থাকে নিছু॥ **ভাগাदल जाला यमि मिद এकवात।** ভাগাড়ের মধ্যে শত শকনী সঞ্**রি**॥ এ নয় সেরগে গুধু রমণী বাজার। পুরুষ পরেশ আছে হাজার হাজার॥ 🗀 বিশেষে ধাছার সঙ্গে আছে যার মন। ्रा कि कडू ह्रिएग्राम्स **दू**र्यांग अमन १॥

লইয়া ফুলের ভোড়া ভোড়াঞ্চলা হত। হোই হোই করিভেছে দাজিভেছে কভ ॥ হেরিয়া সে সব সাঞ্জাল নাহি বয়। मत्न कति कात्व किंव ग इस छ। इस । ্তাপর্য কাম কুণ কি গৌদের রেখা। 🐰 ति ति मिर्देश राम मन्द्र ति में। । मुत्थ मृष्ठ मृष्ठ शास्त्र कार्त्त मधुरत । ष्पाकारगत सारक राग विकाली छेनत। त्य काम त्य क्षेत्र भह, त्म काव त्म खांच। स्थार्कात कात राम कठ छिल्हाम ॥ এ বড়ী ওবাড়ী যাব পরিয়া ঢাকাই: ঢাকাই কেবল মাত্র কিছু না ঢাকাই 🗓 🕬 मार्टिश मारिक तृह मनाज खिलिट्य यथन। দেখিব দেখাব বং রসাল তখন। পরস্পার পরস্পারে মারিক চাপ্ত। ্কি ভানন নে সময় রুসময় যদি। कार्ष्ट शिकि जीचि शिद्ध वाट्ड (अमननी थना ता हिन्दूत धर्म धना काठत्र। নাহি হেরি কোন দেশে আনন্দ এমন।। र्षाम्छ। मिशा (थम्छ। नाह नाटह रकान रमटन)। বলিহারি দশুবত্ বাঙ্গালির দেশে ॥ (শীভাপর) (১)

(১) কন্তা কর্ত্তার বাসপ্রাম:

मण्डी नाहेक ।

(ज्ञोमिकिक प्रदेशोशीधारक माख्यश्री) (১) । (ज्ञोमीक क्षारमण) (२)

নানী। কোঞা গো যা ঠাকুরুণ! কি কচ্চ? বো বাড়ী, সব চুপ্চাপু কেন?।

ভবমোহিনী। (৩) কেও :—রামী এলি, আয় মা । আ<u>র</u> ;ে ভোকে যে ডাক্তে গেছে রে। এত গৌণ কেন ?।

রামী। পোড়া কপাল। রামীকে আবার ডাক্বো কে

না! সে আপ্নিই আনে, আপ্নিই যায়। হোগ্মা।

তোমরা সব যে ভাল বাস, হেন্ডেং ছটো কথা কও, ডাই
ভাল।

ভবনোহিনী। সে জি রে ! গুমা ! জমন কথা বলিস্ নে । শুনিস্ তখন, শামীর বাপ ভোরে ডাক্তে গেছে।

রামী। হোগুমা। হোগু। তোমরা সুখে থাক, সে সর্ গেছে কোথা। নকলি হবে। তুমি কি ডেমন গিমী; ভোমার কাছে কি কিছু বৈতে পাবে? তবে? এত ভাড়াভাড়ী কেন ডাক্তে পাঠিয়েছ?।

ভবমোহিনী। তোরে ভাকবোদা গা ! ভোর বোদের বোদ ও মা ! ভোর। অমদ করে বিষ্ণে থাক্লৈ কি চলে ? ভার

⁽১) কন্থা কর্ত্তা।

⁽२) नाश्राखनी यक धनी, धन गाम अनुस निखंद केड आहम छात्र । जनवर्गा नाहे।

⁽७) जान निकलक जी।

मण्डी नाहेका

জানার দোল পালের বর: ভোর হাতেই গোড়া, তুই না এলো কি কোন কিছু হলে?।

রাদী। (হাসাবদনে)। বটে তো! আমার বোনের বা, আমি আদ্বোনা তো আর আদ্বে কে; অবিাশ্যি অবি-ঝিল তা যা বল্তেছ মা। তা সভিা কথা। লোজ পকের বর জব্দ করা, না, ঘোল ঘাঁঢ় জব্দ করা। তা হোগ্না! রাদী তোমার এমন মেয়ো নয়, যে, যাছ আবার উঠো ঘান খাবেন, ভার কি যৌ রাখ্বো? দেখাে তখন, যাছ গোলাম বন্যে খাক্বেন—ছেরার মত সদ্দে সন্ধে থাক্তে চাইবেন।

ভব। তোর কণানে তাই হলেই বাঁচি, রামি: সেই আঁশীর্কাদ কর্! ভেবে আর বাঁচিনে: তিনি কারু কথা শুন্লেন না, মেয়েটাকে দোজ বরে কলেন, ভেবো ভেবো রেতো ঘুমুতে পারি নে!

রাসী। তার আবার চিত্তে কি । সব হবে, এখন যা বা চাই, তা সব এনে রেখেছ তো?।

ভব। তাই ভোমাকে ডাক্ত পাট্য়ো ছিত্ব না! আমরা ভো ও সব জানিনে; কি কি কত্তে হবে, সব্লেনো রাখি, সমুধ বিষুধ গাছ গাছড়া কি কি আন্তে হবে বল?।

রাবী। আর এমন কিছু আজে হবে না; রামী মন্তরে না কন্তে পারে এমন কন্মই নেই, তবুও অন্য অন্য সামিপ্রী গাছ গাছড়া কিছু চাই; তা এই আনিও। রাজা ধৃত্রোর দেঁকড়, চিভের কেঁকড়, এয়ো জীব বৰ্গলের মৃলা, তেপশ্তের পাতা, এই চারটী সামিগিগরী আনায়ে রেখো। আর যা যা চাই, আমি আন্বোতখন।

আর, হাই পাঁমলা, ঝাল ঝাড়া বাটা, এ সকল তো ভানই। এ সর একটা মাকু, জার, একটা কুলুপ আনিও। আর, বল্তে কি মা!—ভাতার সোহারী এয়োরানীর এক্ট্রিক দিনক্ডা চাই, এই হলেই হৈল, আফি এবন আলি। আস্-বো তথন। আমার কি এক জ্বালা মা'—শতেক জ্বালা! ভার পারি নে। হাদে কি পোড়া মা! আবার ও গাড়ার চাট্যোদের ছোট বৌ টো নাকি ভাতারের কাচে শুতে চারা না! তাই ডাক্তে এয়েছিল। (কিছু, দুর গিলা পুনর্বার আ-দিয়া)। জা মরণ্! পোড়া কপালী আসল কথাটাই ভূলো গেছলোম গা! হা দেখ মা! আন্তন খাকীর তক্ডো কড়ী, ভার, একটু সিঁদুর আনিও।

(तांशीत काशान)

(विशास्त्र शांकि)

(विवेष्ट् गर्चा)—

(রতিকান্ত কুলার্গবের প্রবেশ) (১)

রতিকান্ত। (উপন্থিত ঘটক ও ব্রাক্ষণদিগের উদ্দেশে) প্রাক্ষন-বেজ্যো নমঃ; (জনেক ঘটককে সংঘাধন করিয়া) অহছ কুল দেপক ভটাঘা! সব চুপ্চাপ্ কেন ছে! এ সামান্য নোকের কন্যের বিবাহ সবা নছে? এ সবায় ইন্দ্রী, চন্দ্র, বাউ, বরুণ,

⁽³⁾ Apr 1/2 mallow 10 mg + 12 mg + 12

गभड़ी अधिक ।

কৃতির প্রভৃতি দিক্পাল সকল আসিয়াছেন, কেবল ফরাল আসিতে বাকী ছিলেন, তাই শক্ষা উপস্থিত। এই স্বায় কন্যেরত্বি কুলভিলক দতে। ভোকা বদান্য মান্য ধন্য গণ্য

- तोम्बना (मदन मदन) "श्रद्भात विवश्री । करना एकन कतिशा
- মট্টে মার্ক মন্ত ওব নওয়া হইরাছে, তাম কমুর নেইণ শা-ভিলা শিরোমূণি জ্ঞীলঞ্জীমান্ জ্ঞীযুক্ত রাম কিন্ধর বাস্বাহাটীয়
- মহাশয় মহোলয় মহাআ মহাপ্রতাপ মহাপ্রতাপদক্র রায়
 বাহায়য় কুলীন কেশর, আপনার উপয়ুল পায়ে রাপয়ে
 ক্রিতীয়া প্রীয়ুতা প্রীমতী প্রীলা কন্যা সম্পুলান করিবেন।
 আল কার আনদের পরিসীমা কি। ঘেন, বলাল ঠাকুর
 নিজেই আসিয়া মট্কায় রসিয়া দেখিতেছেন। অহে কুল
 দেপক। কুল বানীশা কুললকার ভট্তায়া তেলেয়া কুল
 য়ংকীত্তন আরম্ভ কর।

" অন্দিদ্ধাচ যে জীবে, যে চ দক্ষো কুলাগুৰে।"

রভিকান্ত। (উহাদিশের বচন পাঠ শেষ না হইতে হইডেই দক্তে) বিলক্ষণ ! ভোমরা সব ভুলিয়া গিয়াছ হে, ওটা এ বিবাহের কারিকে নয়, পুনর্কিবাহের; এই আমাব সঙ্গে এ বিবাহের কারিকে বল। (ঘটক সরে)।

"শ্রানানল দগাহি পরিত্যক্তোহি বান্ধবাঃ"।

गणडी माडका

क्रिकेट (१)। विशक्ष । ७ कि एक छो। नत एक, এই आंभाद जाक दल। (पष्टेक बदह)।

"বাহুছোঁচ মিণাল মাস্ত কমলং ধন্মিন্য শৈবালকং কাস্কারা স্তম চক্রবাক যুগলং।"

कून पर्छ (२)। (मरख) आ:, अ कि ? भगा न। हरेतन अकि। नवां करण इस ना। अकि वन्छ, आंगात नरम यहा। (परेक परत)।

" अंनमः श्रीकृत (स्वडाई।

" নত্বা তং কুলদেবতং খলু সদাং সন্মান সে হংসতং, যাতং ভক্তি বিশেষত। কুল সবা মাত্যে সদা রোদিতা। শ্রীমান বান্দঘটীয় কাদিক মহাবংশাবলী বেক্তি তে।, বন্দে তৎপরিবত্ত কমাণ বিধে মিত্রো গ্রীবানন্দকঃ॥

জাদিতক পরীবন্ত, আত্মা দেবনোকে পুরা। চট্টেন বধূ রূপেন, মকরন্দেন ভেদিতঃ॥

नृति १ इ. तत्मत्र इ. य. नहीं स्वाम, मिताम, मिताम, जिथाम, विधिताम, विभिन्नाम।

গাধিরাম নিংসস্তান, কানীবাদে রাসনীল। সাত্র করেন।
দধিরাম বর্ণত্রাত্মণ হইল। অধিরাম বিবাহের পুর্বেট্ট মদ্যপানে প্রাণ্ড্যাগ করে।

^{ं (}५). घष्टेकः ।

⁽२) घटेकः



्र विधिता हमत क्या तिल्लान मत्। रिन्तितामहे नर्भ किनव वथार्थ वर्भधत समिताहरू

ভাঁহার ৭ সন্তান। ধন পুত্র লাফী বাভ। (রাম কিন্তারের প্রবেশ)

রাম কিছর। (গলবজ রুডাঞ্জলি, লকলকে সংখ্যাসন করিয়া। বহাশার। রাজি অধিক ক্ষরাছে, লগ্ন উপস্থিত। আছ হয় তে। কন্যা পাত্রস্থা করিব।

चिक्क गण कन्यायां व अ वत्रयां व गक्त

হাঁ মহাশর । 'গুভুজু শীব্রং' প্রপাত লই। গম্ম ক্রুন্

(অন্তঃপুরে শব্দনি, বর এরেশ) (বাসর জাগরতের অনুয়ান)

(कूणवडीपिश्वत मरम मरम गरखांव, क्लाम कूत्रभगिष्ठ कृण-कामिनीत अधिखात)

ক্ৰিতা:

আহা মরি কি বিচিত্র দেশের জাচার।
এদেশে বাসনা পূর্ণ না হয় কাহার।
ভাবে বারা সভী রক্ত সভী রয় ভারা।
আহে অপরূপ কর্ম নিয়নের বারা।
বারা ভাবে গ্রহে রব, পাব গ্রহ রূব।
কিন্তু ভাল বাসে পরপুরবের মুধ।

कारमंत्र कातन जारह कक्को टेकोलका। 🦠 বাসর আসর আর অল সহা ত্লাঃ चून योगा, श्रृजि सामाह लट्या (चना । स्रत्यत सागत जरे। कुनजीत दाना। कश्चादथ रयमन स्रद्धत स्नियम। বেই রূপ এ সব আচার প্রিয়ত্য। बना धना विधिकर्छ। मूनि महामि । ভাল মন্দ সকলের ক্রিয়াছ গতি॥ यम तथात्र यम थीत करवत मानत्म। গরনারী রহে পরপুরুবের স্থে क्ष्म करह हूँ हूँ हैं कि नाहि हिं। বাঘিনী বৃষ্ভবর জকস্থানে শোয় ছ শাস্ত্রকার যত আছে তত আছে মত। বুরিতে না পারে কেই স্থমত কুগত। क्ट दरन अ कर्म कतिए चारह माना। त्कर कर ना कदित्व इस छमूः काना । क्र दल वर्ग भाइ छित्र अक द्वारन। क्रिक् राम् । जारा नम् अर्थ । अरे शास्त्र भ पूर्व रहाक् रा नव कश्राम किया कन। शक्ति वरतव शाद्ध कवि माना हला। विक त्वाचि के यदब्द मुख्यानि छोता। कांत्रव या मदन माहि तम अपन महिना । যদি হয় সে মুখ শার্ম ক্যাক্র। रिष कथा जिनि विक इम दन अवस्

व्यविता स्टेश छत्व यथियात विकास **७**निव ना हामूक् नगुक् विवा विष । हकूः मूपि कतिव त्म मूर्व स्थानाम । অভাগা পতির রাগে বায় বাবে প্রাণ। मा इत ना द्वर घटत वर्षि (तना इतेता। हेश्तां तांधारक वांग किया गांत गांता । 'भूनिरनटि नियाहैव दिमार्थाः माम । তা হৈলে ভো পুরিবেক সব মনস্থাম। ' মনোমত জন পাব, ধন পাব কত। मियानिनि जारगांप अस्यास तर तर । कीका रेहरल वर्ष कर्म गर याम जाया। मिए किन एन्तु है रहेता कूँ जा भाषा পিঞ্জের থাকিয়া বন্ধ কট পাই কত। কি ফল করিয়া ছাই পতিব্রতা বত। মা হয় সুচেকা তথা, যে প্রকার রোগ। গুহন্তের গুহে থাকা একি কর্মভোগ। কপালে কুৰপ পতি দিলেন গোঁসাই। বর্ঞ থাকিব একা তারে নাছি চাই ! ভাগাবলে পাই যদি প্রিম রসময়। ना शाह निकास क्रिम, ना शाह नवता क् लात क करण भारह मना छई पत्न। व्यमुख शहल छाउँ चौचित्र मिलाम । क्रक्रम हर्रच हर्रच गाँवशन दश शर्मात्र लोक्फा वीर्थ भरतत्र नगहे।

नियानिनि पद्म इहे विसिन्न खालाय।
हात होत एए तो एक तो वृद्धि आर्थ थात ॥
कित वर्ष कृष्यकि कि स्थितिक कर्म।
वि स्थात गर्के कार्य कृष्य क्रम।
(वाका शिक्किका विस्त, क्रोटित क्रमण क्रमण

ें कठि कर वज् हर्रण बर्रिक् नीतर। भूकी त्वरका यात्र क्रांस ना तक क्षेत्र मृत्। সারগ্রাহী রসিক পঠকগণ বড় 🖂 🦠 क्रमा कति यम व नाहरकं रन् तुष्म রিটোবভঃ বার ধন চার অত্মতি। करम यमि वार् जात माननिक शिक भूतवात अ ताहेक यमि इत हाला। त्नर्गत हमी डि किह मा श्रीपित होंगी है किंख बरन गरम तत् अहे हर जिल्ला क्राकित्यत (करने निष्क मात्री एनेएका का ्राम्ब बाहात सर्गा कृति और रचना। लार कि कहेत शामक हैम्बिएवं किता। त्यबारम त्य जारि कार्ट क्रुणियादह त्यांच টুটিয়াছে রস ভাব বুটিয়াছে লোক । कृषिशाद्य अनीमः प्रचेकाती । ল্টিরাছে কার্যলভা চাতুরী **ভাতুরী** ৮ युक्तिहरू गांदका स्टबंब बदबायंत्र। गरिताल कुषारिक स्म एक्सी

हीं जार कवित्वत देगहां विश्व । होंगे जार अमें नाह नाह वर्क छार । विहोत वादात वादा वाकी नाहि तद । तिबात गारांचा बीते कहि बाज स्ट्रा इकि देशन हमें: जात नहें म अगत । तोकिक मध्याह छटन मा तहित्य जात ।

> ্ (ক্ষর শক্ষর বংশ্যাপাখ্যায়ের বহিবাদী) । (রামন্ত্রক ব্রক্টারির প্রবেশ । (১)

রাষত্রক। (উলালে) দীর্ঘনিখান পরিকাণ পূর্বক সংস্কৃত ভা-বায়)। হা রামচন্দ্র হা পর্যান্দ্রন্থ কঃ কুত্র ভো গ্রহাত্র-মিন্। অতিথিঃ কুথাত্তি। হয়। (ছা রামচন্দ্র হা প্রশান্ধন্। কে কোথা লো। কুথার্ড অভিধি আদি)। (বাধছাল পাছিয়া উপবেশন)।

सत्र महतः (रेश्वरकान हरेक वहिनंत हरेता, प्रश्नेत)। है। एक हर का वाहे । यथार्थ कि । (नित्रीकन)। हैं। एक बाही ना इट्रेंक शास्त्रन ; विलक्त क्षास्त्रांकिः (निधरक्रि)। (धार्माक)। (शानीहै। नमकार।

त्रामञ्जाः (वाक्रजाद्यः मृश्यः छ छात्रामः)। क्याः विकारिः त्रिः (कृति कि खीवनः)। (क्यान्यः है। धन्तानः)। नातास्यः। नाताम्यः। (महत्य स्टलाखाननः)।

कार नका (क्किकार)। जिल्ला मुकालम (कार्गाह क्रिका क्षेत्रक कारा स्केटको या अकार्यमन स्टेस ?।

⁽s) APPER PROPERTY.

वातामखाः । श्वाबंध क्षिणालां नमर्मन धरिकां धाराम श्वीमहः । छेगानीनक भिनारमम् भूरः विद्याल एकण्याचारः श्वीमहः । छेगानीनक भिनारमम् भूरः विद्याल एकण्या (मण्डि चानि उर्धानम् श्रेतं गीन कति गात्राभी हरेल चानिरहिः श्वाख्य क्षिणाच्य मन्त्रम् ध्यमस्य चानास्य चार्यक्रितं विद्युष्टिः चापि छेगानीन । छेगानीरम्य निर्वास चानिश्च चार्यनकात्र कि छेनवात्र प्रसिद्ध (१)

আয়াগালি বিদ্ধি বিশ্বেশ্ বেল্। বেল্। বেল্। বাল্লের বাল্লের বিদ্ধিত বটেন। (প্রকাশ)। ভাল প্রান্তির প্রকাশনার। ভাল, গোলাই। এফাদে কুরা নির্ত্তি প্রভাল করিতে আজা হউক। পরে আলাপাদি হইলেই ভাল। মহালর। আপনাকে একটা কথা জিজ্ঞানা করি। আপনি কি আনাদের এই বন্ধ দেশ চলিত বাল্লা ভাবার জালাপ করিতে পারেন না । ভাহা হইলে, আম্রা আরও তিন্তি পাই।

রামরক। (ঈরৎহারাবদনে, বাড় লাড়িতে লাড়িতে)। ই। জনশ্য: গুরা। তোৰার ইছো: ও এক্ষেবা থিতীয়ন। (নির্মেণ প্রকাশ)।

(अवहातिक (कांबम नेगानिक)

শাস্ত্র । বোসাই। আগনকাকে গ্রহত্তপুর্ব জপুর বীসপ্পতিশালী মহা সন্থানী দেখিতেছি। বোগ হয়। আগনি প্রাকৃত মহাত্র সা হইতে পারেন। সর্বশাল্লপারদ্দি সূত্র বুলি সংখাত্র হইবেন। সন্ধেদ নাই। বাহা হউক, আগন

⁽b) विश्व निविध सम्बद्धाः स्वत्यकटान् अकियानी ।

मनाड़ी नाहिल

ছার এথকার লায়ানাতিশ্বীন অবস্থার্তর অবলম্বনের হেতু কি? অমুগ্রহ পূর্বক যৎকিঞ্চিৎ পরিক্রম স্থীকার সহকারে ভাহা প্রকাশ করিলে, বিশ্যবিক্রম সংসারাজ্ঞাতিনুর্বা মাদৃশ ভাতি ভাকিঞ্চিৎ কর, সংজ্ঞাখনা অভাজন সনগণের জ্ঞানো-দ্য স্ক্রোবনা; ভাহাতে নরাধ্যেরা চরিভার্থ হই।

त्रामद्रकः। (मतरशानित्क, मिनारतः)। महानदाः मृद्याकास्त्र मिन्न मश्मर्थं काठ्यं काण्यान य नद्राध्यम् निवयः य श्रमश्-मिश्माः नद्रः, काठ्यं काण्यान य नद्राध्यम् निवयः य श्रमश्-मायामं कित्रकाहमः, काहाः निकास क्रमश्मराम नरहः, श्रमान वैश् विम्रशाम् विनिष्ठं भावितः । का या इक्षकः, अक्षर्यं महा-महामिश्मर्यं विनिष्ठं भावितः । का या इक्षकः, अक्षर्यं महा-महामिश्मर्यं व्याव स्वावः, मश्मातं माद्रकृतः, क्रम्बिम नाधुका महामरात পविकृत्वं अश्मराक्षितः हिन्नाहे स्वापि व्यावनकाद मिराद्रं निकर्षे स्वामातं स्वायम्यकः स्वास्त द्वास प्रश्मराम्य वर्णन कित्रितं श्रम्यतः इत्राव्हः, ख्रम्याः कृष्टार्थं क्रित्रकं स्वाख्याः इत्रः।

" সুদৃশ্য বিশ্ব বলরের **অন্তর্কতী এই বে চ্**র্ভাগ্য ভার-

রেন্দারির কণা শেব না হইতে ইইতেই)
রাধাপতি। (বিজ্ঞান, ব্রক্টারির প্রতি)। চূর্ভাগা কেমন ? ॥
রামব্রক্ষ। (গল্পে, এবং বেদে)। হাঁ। জননী ভারতভূবিকে বড় ছর্ভাগা বলিতে ইইবেক; না ইইবে, এতকালের
পর ধর্মাক্রই, আচারপ্রই, দরাহীন, মারাহীন, বাক্রজাল মার্ক্র
সম্পত্তি প্রন্ন পাবপ্রপরিপূর্ণ। ইইবেন কেন? জনন বস্থ
গত্তে এত কুলাজার কুসন্থানই বা ধরিবেন কেন?।

ৰাষ্ট্ৰেৰ। (ভজিভাৰে)। গোৰ্মাই! আপনি কোন্ ভোৰীয় ব্ৰাহ্মৰ ?।

নামরক। (লাকেপে, ননিকেল এবং গণতে)। মহালন।
তাহা আর কিজাসী করেন কেন ? তবেই বা আর এ অবস্থা
দেখিতেছেন কেন ? মাতামুগু কি বলিব ? বলিতে হৃদ্যা
নিদীর্ণ হইয়া খান্ন। রোদন সম্বর্ণ করিয়া রাখিতে পারি না, বিদীর্গ কেনী; তার আবার মহার্থী কুলাম; শান্তিলা
শিরোমনি মহাআ। ভট্টনারারণ বংশ প্রবাহ।

রাধাপতি। (সকলের মুখ নিরীক্ষণ করিয়া অনান্তিকেঁ)।
ইণা মহাশার লোক দেখিতেছি যে।। (ব্রক্ষারিকে সংখাধন
করিয়া)। মহাশার। জাপেনি যে প্রকার পরিচয় নিতেছেন, এ
তো বংশামান্য জনের পরিচয় নয়? খদিই এমত হইল,
ভবেই যা, আপনকার এপ্রকার অবস্থার হেতু ফি? কিছুই
তো অনুধাবন হয় না? এরূপ কুলমর্য্যাদা খাকিলে সংসার
আলেমে বিলক্ষণ সূধ সম্ভোগ সন্তাবনা।

রামরক। (দক্তে)। হা। হা। বিলক্ষণ সুথসজোগ সন্থা-বনা। হা। সাংসারিক সুখ কাহাকে কহে, আদৌ তাহাই আপনারা অবগত নন্; অন্তান অবস্থায় আমিও এই প্রকার ভ্রমজালে অভিত ছিলাম; বস্ততঃ আপনারা নিশ্চয় জানিবেন, বর্তনানে বল্লালী কুল মর্যাদা লোহশলাক। (বল্লম) স্বর্প হইয়া লোকেরদের অন্তর্ভেদ করিতেছে।

ভাষার এরপে ফুর্দশা কেন হইল? তাহা এখনও কি নহাশরদিগের হাদরক্ষ হয় নাই, এত কথার পরেও কি জাবার সহাশরেরা বৃদ্ধিতে পারিকেন না; জারও কি স্পাই

मन्त्री महिक ।

করিয়া বলিতে হইবেক।—"বিবাছ? বিবাছ? সকল দো-বের ও সকল ছঃখের জাকর ভূমিত বহু বিবাছ?'। হাব !

919

कहिएक त्त्र. गर कथा बरत इस्तान्। कुँ क् भिना पानिशाष्ट्रि अधार्य तहन ॥ .এখনে। ভূনিছে সেই অংশ্র জনল। উচিত সাছতি পেয়ে। কৈতেছে প্রবল। এক। আমি করিয়াটি শত পরিবয়। পরিধাছি কবিগালা ছেলো খেলা নর। इतिकात जात श्रम्भाशत मध्ये। কোলা ন। করেটি পাপ পাপী নরাযুম। যেখানে বেখানে আছে শ্বন্ধর খালয়। এতে কি নিস্তার পাই তালে। য আলোয। হায় জগদীপ! তুনি কি করিবে গতি?। চিছিয়া হইত্ নার। পাপিষ্ঠ তুর্মতি। कू नीन जनक वड़ कू वृष्डिजनक। न। टेहरण कि तां इहा महान दनक है। শত নারী অধিকারী একণতি খনে। कांक कि कुलान इत सूर्थ इत यटन ? ॥ नेक्टें एग धन विना विकल नंदनात ! यात्व कि तमनी हाटडे छटडे हाहाकात?॥

THE RESERVE THE PARTY AND THE PARTY. मीर

कान शास्त्र 🕓 ক্ষা ক্ষা প্রতিমানে । ক্ষাঞ্জিক বিশ্ব ব্যথা। 🧸 🐃 নাই কথা।

করে। তলে যায় গড়াগড়ী। ্রান্তন -করে চোর। বরে চোরা পরিবয়। না করে সম্ভাগ ভারা সোঁজ। লোক নয়। अमिरकरक दहरन मनांद्र यक नहे। দাড়াইলে একত সন্তান সম হই॥ नण्भरकं भकरम आए इन श्रद्भक्त। নামী, পিনী, মানী, ভগ্নী, এশ্বপ সঞ্জন। সুরে যকে সুপিঞ্জীর পিশু সমন্তর। ভাইকীর সজে হ্য কুল পরিণ্য॥ য়। হোক্তা হোক্কিন্ত পাপে না ডরাই। विवाह वानिका करता छमत खताहै॥ কত নারী কত রূপে রাখে কুলমান। কত করে৷ গভে ধরে কভ**ই সন্থান** 🖟 ্সহন্দ্র পুত্রের পিতা হইলে কুলীন। ় তথাপি রৌরবকুণ্ডে হইবে বিলীন॥ কেবা কার পিভা ভার: কেবা কা<mark>র</mark> স্তুত্য কুলীনেতে চেনা দায় এবড় আছুড়?। क्लीरनत वार्वा इस अन्तर्वत वारा। (इटला यनि दादा करन मूर्य मारत थावा म

মণতা নাটক।

বালকে ভংগিয়া বলে কুলবতী বামা।
বাবা নয়, বাৰা নয়, ও বে তোর শামা॥
বিশম অধন্ম জাল, এ বড় সঞ্চাল।
ইহুকাল পরকাল খার ছুটা কাল॥
সংগারির প্রতি পর্মা ছুইলে বিমুখ।
তাতে কি কখন হয় সাংসারিক সুখ॥
এ সব ভাবিয়া আমি সন্নাসির কেশে।
দেশে দৈশে ভ্রমিতেছি যাহা হয় শেষে॥

প্রতাপ। (শুনিয়া দুঃখিত ভাবে)। রাম রাম! বল্লালী কুলকাগু এমনি কুকাগুই বটে; হা! বল্লাল কি পাপিছ নয়ায়ম রাজাই ছিলেন! স্থাই কে কি বিষর্কাই রোপণ করিয়া নিয়াছেন। একণে ব্রজাচারি মহাশারের কথা শুনিয়া চৈতনা হইল।

বাস্থের। (বাশুভাবে ব্রহ্মচারিকে সম্বোধন করিয়া)। বটে বটে! বটে ভো মহাশর! বড় উপ্তম আজ্ঞা করিভেছেন। রাধাপতি। (বিশত হইয়া)। তবে ভো ভুইলাল নারকী লোক:।

রামত্রক। (জিল্লাগ্র দংশন করিয়া) না, না, না মহাশয়।
জ্বান করা মুখেও আনিবেন না; পাপ স্পর্শ হইবেক; মহারাজ বলাল (সন, অবতার বিশেষ ছিলেন; তাঁহাকে সাকাৎ
ধর্ম বলিলেও বলা ঘাইত। তিনি মহামহোপাখ্যায় পণ্ডিক
জ্বিচন্দ্রণ মহারাজ চক্রবন্তী ছিলেন।
জ্বভাপন (বিরাধে)। পশ্বিত রাজার কি এই কর্ম।

्चान्याकृतः। (च्याक्चारवः)। भूतं स्हाक् एकः ना हतः, ७ जेव थानारमङ्गाना काय मारे। जागारमत तम कान उ।? क्थांत कथात अथनि अथन मुनाननी উপস্থিত इहेता পড़िया म्हिन का गानिनदक विकीताम् विनशा छिठित ; क्रीं e হঁকা বন্দ করিয়া ফেলিবে, বাড়ীডে তো খাবেই না। এক কালে কুটুছিতা পর্যান্তও পরিত্যাথ করিখা বসিবে, এমন্ कि? अद्यादत मूथ मधारमधी अशिक्र मा । नव कानह ভো ; এ পাশিষ্ঠ কাণ্ডে বী বিউড়ী পর্যান্তও পরিভ্যাগ হয় : এমন পোড়া দলাদ্লী,—তাই লইন। কাবার কে চলাচলী করে, বল 🖓 ও সব, যেমন আছে থাকুক, যেমন চলিতেছে চলুক, অথবা, যা হয়, হউক গিয়া দাক্, মরুক্, ও সব কথান স্থামানের কাথ নাই, হলাল বড় লোক ছিলেন ঐ কথাই चाला। " উচ करता वीथ हें, वर्ष्ण वर्ष्ण प्रश्च द्वा ।" अहे নিমিত্তই তে সর্কানাশ ঘটিতেছে ; ওদের অমুককে বকলেই খিজীয়ান বলে, কেন ?--কি মনে নাই ছে? আমৱাই যে কড দিনু তার নিশা করিয়াছি। ফলতঃ ক্রমে ক্রমে লোকের চকুঃ कुणि एक इं अनिय सम जात त् अधिक मिन तहित्व गा, কেবল বুজা কটা মরিবার অংশেক। মাত্র।

প্রতাপ। কাস্ত হও ভাই ভুমি। এখানে ভার কে ভাছে? বেল এত ভয় করিতেছ। এক্সচারি মহাশয়ের মঙ্গে ছট। তর্জ বিতর্ক করিতেছি বই তো নয়?। না হয় এক বরিয়াই হইরাম, তাতেই বাস্কুইন বি

कार्यका दन तक वह वह के का नाम तह खोदे । तहन

गंगरी माठको

ख्या लाक अक किन्, बाद बाबत खिन जरन अक निक् कि अकारत तान कतित ? हो बाख खिनम ताना करदन मा ?।

রামরক। ও সব কথা থাক্, একনে যাত্বা বলিতেছি ভাইতে মনোযোগ করুন্ মহাশয়। মহারা বলাল সেন এ কর্ম মন্দ কর্দ্ধ করেন নাই, বরং ভালই করিয়াছিলেন। কিন্তু তিনি বত ভাল হইবে বলিয়া করিয়াছিলেন; একনে কার্যাগতিকে জভোধিক মন্দ হইয়া উঠিয়াছে বলিয়াই যা বলুন। বলাল মহোদয়ের অভিপ্রায় বড় ভাল ছিল, এশন জানরা আপনারদিগের দোষেই আপনারা গ্রুখে পাইতেছি বলিয়া যে মহাঝার দোক করিনে করিতে নাই।

রাধাপতি। ব্লালের কি অভিপ্রায় ছিল মছাশয়।।
রাধরক। তাহার অভিপ্রায় ছিল রাজ্যে মহাপাপকর
কন্যা বিক্রন না হয়। প্রজা সকল সাধু সদাচার করে। এমন
কি ? রাজ্যে বিন্দুমাক্র মহাপাপ সঞ্চারও না হইতে পারে
ইহাই তাহার আন্তরিক ইচ্ছা ছিল।।

আজাপ। এখন বে মহাপাণের জ্যোতঃ বহিষা মাই-তেছে?।

রামরক। হাঁ ভাই বলিতেছি, মনোযোগ করুন্। রারাপতি। (মনোবোগ পুর্মক)। ভাল, আজ্ঞা করুন মহাশয়!।

নাম্যক। হলাল নেখিলেন " রাজ্যে ভদ্র সম্পূর্ণ। মধ্যেও মহাপাপকর কন্যা বিশ্বার চলিতে লাগিল। একে কো শুকা বিশ্বার পাশে নিভার মাই। রাজা নারকী কন । বাজা জানিক ও হারবার হয়। তাহাতে আবার নহানিকরর নহুরা নিজয়। তুলার নিজ্ঞানাশ আলকার তিনি মহা নশ্বিত হইলেন এবং কিনে রাজ্যমধ্যে এই কুপ্রথা এক কালে রহিত হইয়া ঘায়। তাহার সহপায় চিন্তা করিছে লাগিলেন।

প্রতাপ। কেন? আবার ভার একটা এত চিন্তা কি? তিনি ভো চক্রবন্তী রাজা ছিলেন, আইন করিলেই ভো নি-ক্তিম্ব হইতে পারিভেন।

রামরক্ষা (হান্য করিয়া)। হাঁ। ঐ কথাই তো বটে। ত ঐ সমই তো সর্বাদানের মূল ,— ঐ ভরসাতেই তো এক্ষণ-কার লোকেরা পৌন্তলিক ধর্ম্মে এককালে কলাঞ্জলি দিওে বিষয়াছেন।

ুৰাধাণতি৷ সে কেমন মহাশয় : পৌত্তনিক ধর্মা লোপ ক্ষতে বসিয়াছে কেন

রামরক। রাজনিয়মই বলুন, অথবা পৌজনিক মর্মা নিয়মই বলুন, এই ছয়েরই এক মাত্র মূলোদ্দেশ্য লান্তি বংস্থাপন এবং চিত্তভদ্ধি, এক্ষণকার লোকেরা ইহাই নিশ্চর স্থান্থির করিলা, ক্রন্মেক্রমে সর্ব্যপ্রকার সম্পূদারই স্ব স্থ পৌজ-লিক ধর্ম একেবারে পরিভাগে করিছেছেন, বলেন, পর্মে-মরের অভিপ্রেত কার্যাই শান্তি; সমুচিত রাজনিয়ম প্রচার কার্যারালাই ভাষার স্থাপনা করিবেন এবংবিদ্যা সক্ষোপরি-কর্ত্ব স্কুতরাং লোকের চিত্তভদ্ধি করিব, ভবেই আর পৌত্তিকিক ধর্মের আক্ষাক্তা কিন্তিক ? ভাল স্থান রাজ নিয়ম প্রচার ইউক ও বিদ্যা বিস্তার ইইতে থাকুক, নমুখ্য বিদ্যোপার্জন করুন ও রাজনিয়ম শিরোধার্য করিয়া চলিতে থাকুন; দেশে শান্তি স্থাপন ইইবেক এবং চিততকি,ও জামিতে পারিকে, তাহা ইইলেই তে। ধর্ম উপার্জন ইইবেক এবং করাত লাভ অবশাই ইইতে পারিকেন, সংশয় কি, ধর্ম্ম আর কিছুই নয়, পরশেষধের প্রভিপ্নত সংক্রিবার নামই বর্মা; আর, বভাগে রুপের নামই স্কাতি অথবা মুক্তি। একুমাত্র পরমেশবর জাবির ভাগত, পাহার স্মারন করাই উপান্তার

প্রসংগ । (সংস্থানে)। বেশ্রেণ্ (বেশ্ জ্বা তো : ভাজা সভাজান কথা সহাশ্যা

সংগ্রেক্ষণ হাঁ। এক একোর বেশ্কথা বটো এটা যে বছ মন্দ্রকান নর ইছা আমিও স্থীকার কবি। কিন্তু মহাশার। একালে একটা নীচ কথা গনে হইল। ছোট কোকেরা বলি-া, পাকে ''নে ওতে বালি,—নাদার ভরসায় বামে শ্না '' এ ছুইটা কথাও ভো বড় ভাল কথা। বিষ্ণুশন্মার, সংগ্রাহ্ হইকেও ভো নীতি কলা বলিতে হয়।

জনশকর। (হালিকে হালিতে)। সে কেমন মহালহ। হাঁ, ছোট লোকের। এ ছটা কথা বড় ভাল কথা বলে বটে। এ ছটার ভাহপর্য্য কি?।

রাশবিদ্ধ এখানে এ ছুটা কথার বাংপর্যাই এই বে কেবল রাজনিয়ম হইতে কখনই ধর্ম রকা হয় না, আরু, বিদ্যা পদা-র্ণেরও সর্বত্ত সন্তাব হইতে পারেমা, বরং প্রায় স্থানেই অত্য-ভাভাব লক্ষিত হয়, ইহা পর্মেশ্বরের এক প্রকার অভিপ্রাস

मश्राहिक !!

विकास तिविष्ठ इहेरवक। अञ्चार महाभारतता अकर्य विस्तृत्ता क्रिक एक्स एक्सि, गर्वक महाक महिल प्रमा तका किस्स इहेर थाएत । असन एक अस्तिक आहि स्थारित वालितियस श्रिक इहेरज्ञ शारत मा कर्जुक कर्ता स्थार शताएज्हे तिहितारह । असर दिलात विस्तृत अम्पा अस्ति । अस्ति आण्डात अस्ति शारत अस्ति । अस्ति ।

門樹 (

লোভ নোহ কাম ক্রোধ, করে নাক উপরোধ, পলাইল সম্মশোধ, যারা ছিল জ্ঞান রত্ন ঘেরি গো, যারা ছিল জ্ঞান রত্ন ঘেরি॥

ফুটিল গ্রনেধ পথ, সুগন্ধি সংসার সথ।
ছুটিল সকল হয়, জ্ঞান পথে হইমু গথিক গো।
জ্ঞান পথে হইমু পথিক।

জ্লাঞ্জনি দিয়া কামে, যাইতে আনন্দ বামে, ু ষ্ট্লাম পরিণানে, নিজ্ঞান পথের পথিক গো, নিজ্ঞান পণের পথিক।

ভেবে দেখ মহাশিষ, সংগার বিরপেষয়, একপ সকলে নয়, নরসোকে কতরপে নর গৌ, নুবলোকে কতরূপ নর। বরং মনে অভুমানি, অন্তানী হৃইতে জানী,

ক্রং মনে অন্ধুমান, অন্তানা ২২ তে জানার শ্বল্যা কানি, অনিদ্যা সংক্রা চরাচর গোর অবিদ্যা সংকুল চরাচর র

· 神寶可能界 可[何][四][4][[[]][[]] 神報[[[]]]

(क्षोणमिनीय नमनाशाह)

ं दक्षस्त्रीत शहराण ।

क्या। (आश्वात नश्रमाक मृहित्य पृहित्य अदः तोनामिनीत हाकत सन भूक्षिण मूक्षिण मूक्ष्रियः)। अर्थ गाः। अर्थः। আহা ! সারা ইকো বে মা ! আর কেঁদোনি ! । হায় ! সেছে রে ! যাত আগার ! ভোকে ন্যে আমি এখন কি করি ; কোথায় যাই ; এমন করে । কি মাহু যে বাঁচে ! হা ! পোড়। কপাল । ভোর কি কখনই সুখ দেখুতে পেলোম না রে শাঁ (ধব বরিত ধারার রোদন) ।

সৌদামিনী। (আরও অভিমানিনী হইয়া দরদ্বিত ধারায় রোদন করিতে করিতে, মনে মনে)। ছা প্রন্মা! তোমার কি এই কর্মা! আমি দিবানিশি যেমন ধর্ম ধর্ম করি। তুমি, এই কি তেমুনি ভাছার ধর্মারকা করিতেছ! হা! ভোমার দোষ কি; সকলি অদুক্রের দোষ। ভোমাকে কি থলিব; অদৃষ্টকেই ভংগনী করিতেছি।

হে অদৃষ্ট । তুমি অদৃষ্ট । যদি তাহা ন। ইইতে । ওবৈ কি স্বহুডো তুলিলা এই বিষপান করিতাম । এমন নির্দ্ধ , নির্দ্ধের হুডে জন্মের মত আত্ম সমর্পণ করিতাম,—না, এত কফি পাইতাম ।

(আপন শ্বামি ভূধরকে মনে করিয়া)

হা। জন্ম বিফল হইল রে নৃশংস নিষ্ঠুর। তুই অতি
পানগু মূর্থ। না হইলে প্রাণ ধরিয়া কখন আমার এছদ্ন।
করিতে পারিস্। তুই গুরুজন। ইহ্কাল তো নই করিলি।
আাবার পরকালও নই ইইবে বলিয়া তোকে অ্যুর অধিক
্রিলিডে শক্ষা হইতেছে, মনের ছংখ মনেই রহিল।

কেম। (ছুনি শব্যা হইতে সোনামিনীকে কোলে আকর্ষণ করিতে করিতে)। ছিঃ ম। ছিঃ! অসম কল্তো আছে। কি কর্মো বল; যেমন তপিকা। করে। এসেছ; ত। কি ভার কাউকে ভূপনে হবে । প্রজ্ঞাপ না হলে সভিনীর হাজার ভূগনে হব না। যা হবার তা ছো হংগই গেছে । তা তোমার নাও কি ; আমিই বা কি কর্মো। বল! প্রথম ভূমি একপ্রকার নিশ্চিনী হলে । বাচা। বার্মেরর ভোমাকৈ একপ্রকার নিশ্চিনী করেছেন। কি কর্মো। তামকর ভোমাকৈ একপ্রকার নিশ্চিনী করেছেন। কি কর্মো। ভূমি লাকের ঘরে জন্মছ, পূলি দশা করা প্রকারে ছাই। গাল লাভ, পারকালে ভাই। গাল লাভ, আর ইন্টা কেন্তার নাম লেও, পারকালে ভাই। ল্লিন ড্লিন প্রকার ক্রেনা। গাল কেনে ভ্রমি ক্রেনা। গালিন ভূমি মাকেই ব্যক্তিন। গালন ক্রেনা। গাল্ড প্রস্কলো। গাল্ড প্রস্কলো।

स्त्रीमानती । (स्वपञ्चतीत प्रका श्रियाः आग्न क्रिए क्रिए)।

७) महासा । तृश्चि (शास्त्राक्ष्मात्व क्ष्मांत्राव तक्षमांश इत्याः।।

तेशाः ज्ञांस ज्ञान ज्ञास्ति विश्तमान । स्त्राप्ति काश्विक काथ (सह साः हज्ज नवत नगरन शास्ति होति।।

(स्रोक व्याह स्वामन)।

ক্ষো। (আশ্রেণানিতা হবিছা) 'কেন - কেন বা। সেকি? আরিকে অচ্ছেদ। কেন হলো। ঠাকুর গণ্য খল নেক নাকি? প্রমান বাব কোণ। মান কি কাল পড়োছে বান গ্রহ কেও যে জার বিখেন রইলো নেই। তিনি কি বলেছেন ? বল তো?।

। भोगामिनी व्यवसायका ।

ক্ষেম। কেন ? কেন ? কেন যা! আমার কাছে নজ্জা কি ? বল না ? সব ভেঙ্গে বল ভো ? আমি তাঁর গোলাইপথ। জাজ শেখাব এখন, তিনি বড় গোলাঁহের বাটা গোলাই হয়েছেন,—বাব্রী কেটেছেন, দাঁতে মিশী পরেছেন, লা-পোর। পায়ে দিয়া বেড়াছেন, পৈতের গোচ্ছা করেছেন। আ মর্মিন্ধে। শিপ্ডের পালক বেঁদেছ?।

সোণামনী। (অধাবদনে।। ও মাণ আর বল্বো কি
মাণ তাঁর লোম কি। পোড়া কপালেই তো সব্ করে। রেথেছে।। উনি আজ চারিদিন হলো আনাকে সম্ভর দিয়েছেন।
নিত্যি নিত্যি ডাক্তে না ডাক্তেই আরিক শেখাতে আ্সেন, সে দিন তে, কাণে এক রকম একটা মন্তর দিয়েছিলেন,
এখন আবার রোজ রোজই যে কত রকম মন্তর দেন, তা ভার
বল্বার নয়। আমি সব বুজেছি মাণ আমার অমন ধন্ম কন্মে
কাম্নি। আমি অমন গরু মেরে জুত দান করে। পরসার্ক
থেতে পার্বে। নেই। এই ঠাক্রগ্কে বল্ আলাকি
আর শেখাতে হবে না, আমি সব মন্তর শিখেছি, ভারা,
আমার হাতে মালা পোনে খোলা তো দিয়াছেনই, আবার
কেন পরকালটা নফ কন্তে বদ্লেন। (রোজন)।

ক্ষো। (সংক্ষিয়ে)। ব্রী: গোসঁ। কি সর্কনাশ মা। সৌদামিনি। বলিস্কি?। রসো রসো। আমি তাঁর এখনি বিহিত কতেছি। কি কলিকাল মা: হা সর্কনাশ।

विथान

き

हांश धर्मा এकि कमा मर्मा हम (कन। शृथिनी श्रुतिम शास्त्र कफ कित स्थम।

मश्बी नाउंक।

य निकार यहि हाई य निक स्थन। वांडा। मम विहरणहा छुधु कि लेटन । नगूरल निर्माह रहेल नम्म बल जरू। न। द्वति ऋङ्गा कृष स्ता शम भग्न । চৌৰ্যা হৈল তৌৰ্যা সম কোলা আয় হিত । মিলিয়া গিয়াছে সৌহা ক্রিণার সহিত । নৌর্যাভাবে পরিপুর্ন সভের মানস। ধর্ম্ম ক্ষেত্র ধরিবারে কে করে সাঞ্চন ধ পুরন্তীরা পৌষ্য পণ করি পরিচার। লইয়। নাগগভাব কর্মে বিহার। ধদি কেহ থাকে গভী পতি খন লয়ে। কি ছরম্ভ কলিকাল গ্রাসে শণি হলে। সুখের সঞ্জি ভার ঘটার শারেব। •কান্দিয়া কাটায় কাল নাছি পায় ধব 🛊 স্তিনী বন্ত্রণা জার যে সহ উৎপাত। একে একে কলিবাল করে সূত্রশ**্**ত॥ পুণা ধন গণাকরে নাহি কেছ জার। ধরণী হইল এক পাপের আগার॥ नाती भात नत यनि हिन काहाकाही। क्यनि आनिन धर्म नाहि राहावाही। পর্মাধর্ম বোধ নাছি নাছি পাত্র বোধ। হাজার হাজার আছে এরপা ছর্কোর॥ এরপ অনেক আছে আধুনিক জানী। रमरक्रक नरम आमि वड़ बक्कानी ॥

जनश्कात हेन्सिस सूर्यंत अस्तारम । थामार्थामा विष्ठांत हाजिया त्मन जात्म । মুদের সাপট জার চাপট কেমন। लम्भातिस भिरतामनि ना द्वति एकम् ॥ বিখেতে ভাদের নাই আতা সম জান : বাহিরে বডাই কত কত রূপ ভাল ॥ পরত্রহথে ত্রংখ বোধ না করে বারেক। ম**মতার বলীভূত ন**। হয় তিলেক। কুকাণ্ডে বন্দাণ্ড কিন্তু দেখে একাকার। পরদারে মনে করে জাপনার দার॥ প্রধন পাইলে স্বধন বলি লয়। कालकरन अकारकरण जार्गामित अस्म হায় হায় একি পর্ব দেখি ভ্লস্তুল। জলেতে কুন্তার ভয় স্থলেতে শার্ক র পাছে কেউ দেখে শোনে ভাই সে সতৰ্ক। ধর্মের বিতর্ক মদে নাছিক সম্পর্ক। স্থান সার সময় মাতুক যদি পায়। भाभिएकता **७८व कि भएर्फा**त गुथ हात?॥ র্মণী আপনি যদি না করে যতন। কার সাধ্য রকা করে সভীত্ব রতন 🛚 এত দিনে ধর্মা তুমি ধর্মা নাম হরি। ় করিয়াছ পলায়ন লীলা সাঞ্চ করি॥ 🖠 ্ ভারতে করিতে রাজ্য বাস্ত্। নাই ভার। ছাড়িয়া গিয়া**ছ ভাই** রাজ্য অধিকার ॥

नगड़ी भारत

এখন রাজত্ব করে অধন্ম রাজন। **जाहे এड मनः**गीड़ा পाइ अकालन इ তোমার অমাতা খিনি সভা নাম খার। তাই বুৰি ভার দেখা নাহি পাই আর। অর্থবের খলিবর অসতঃ রঞ্সঃ अन्नातात्क कविशाह क्रम्यन सम्ब ভতোর উপর স্বামী এছবার নন্। (क्छ) दात श्रामित शक्कि जावम्ब । ধনিতার প্রিয় নন বনিতার পতি ' প্রতির প্রেখনী নয় জন্ম। ছণ্মতি । ভাই নগ ভাই, ভাই (এ), দীব ভাই। পিতা যাতা গুরুষান স্কি গেশ গাই। नारमाधिक त्वारश कर मा भाविक सूप। महा भगागात ला. स्याई विदुध । ्यारक **आ**त्र क्यांग्राज गंकिक मर्द्रकोछ। गाहिक मश्तकाठ (लातक सर्वहिक मश्तकाठ॥ (भारकारम अस्ति)

লৌলামিনী ৷ (হোষন ক্রিতে ক্রিতে খনে খনে) ৷

হ। আমার মত ক্রতাগা রমণী বিজগতে নাই। সামী দিতীয়বার দার পরি এক করিলেন। সপানী থক্তনাই আমার জীবনের প্রধান উপভোগ ক্রল । ক্উক, ভারাতেও ক্র করি না। বেমন আরাধনা করিয়া আসিয়াছি ভারাই কুগিছে ক্রতিক। অন্তর শাশ্বজী ননদ প্রভৃতি পতিকুল ক্লনের ভারতাপরাথে এককালে বিবনরনে, দেখিয়াছেন। পিতৃক্ল নির্দা । এক। ভালা হইতেই বা কি হইতে পারে?।

হার! এ সকল সহা করিয়াও কি দ্রীর পরম ধন সতীত্ব ধন রক্ষা করিছে পারিলাম না। কার্যদীপরের মনে কি আছে জানি না। সতিনীকে ভাগিনীর নাায় জ্ঞান করিতেছি। শক্তব শাশুড়ী নমদ প্রভৃতি প্রক্রিল স্বজনেরা যাহা আন্তঃ করিতে-ছেন ভাহাই করিতেছি। হে লগদীপর। এ পাপীয়সীর আবার কি পাগ দেখিলে। 'যে, এখনও এত বিভ্যনা করিতেছ।

নির্দিয় শশুরকুল-স্থানগণের নত, আনি এখনের মত লাংসারিক সুখে এককালে জলাঞ্জলি দিয়া, কেবল দাসী-হত্তি করিয়। কালক্ষেপ করি। ঠাকুর। তাহাই করিভেছি আবার এ অপরাধিনীর কি অপরাধ হইল।

শাশুড়ী অত্যতি করিলেন মন্তর নে গোর্গাইয়ের নিকট
পূজা শেখ, ভত্ত লোকের বরের মেয়ে এক একবার আরি
ক করিবি; এই অত্মতি আমি সৌভাগ্য চিব্র স্থীকার করিয়া
লইলাম। যদিও বাল্যকালে বাংসলা উপভোগ করিতে
পাই নাই; যৌবনেও যৌবনদশার চরিতার্থতা লাভ হইল না;
প্রত্যুত বান্ধ ক্য ব্যবহার করিতে হইল, তথাপি আমি অগত্যা
দ্যুতর ভক্তি পূর্বাক ভাহাই করিডেছিলাম। হার! কি
পোড়াকপাল। ভাহাতেও আবার এই গরল উঠিল।

গোলাইয়ের নটবর বেশ দেখিয়া, আমি প্রথমেই বলি-গাছিলাম ঠাকুরাণি! জাণনি আমার মাতা, জাপনিই আমার কর্ণে মন্ত্র প্রদান পূর্বক কুলা করিয়া আহিকটী শিখাইয়া

সপজী নাটক।

দেউন। হুর্ভাগ্যক্রমে তথন তাহা করিলেন না; এখন এই ছুর্কিপাক উপস্থিত, এনিকে শুরুত্তকি বড়, এনকল শুনিলে বে তাঁহার। বিশ্বাস করিবেন এমতও বোধ হইতেছে দা, প্রত্যুত জামাকে তিরস্কার করিবেন। হার! কি পোড়াক-পাল! এ, জারার কি ক্লোল উপস্থিত হইল, গঞ্জনা ভয়ে প্রাথ থর থর করিয়। কাঁপিতেছে।

ে কে ঠাকুর । আর কেন : ইংগ্রাভ : লাও লাও । এখন এন্সভারিনীকে হয়ায় মৃত্যু কর :

क किश्वाय

v 31 1

িছ: ব কর কার কাছে, এখন পরাব আছে।
দিবানিশি ভাবি পাছে, হারাই সতীত্ব স্বচ্ছ নবি হে।
হারাই সতীত্ব স্বচ্ছ দবি।

ভূচ্ছ করি সর্কা ছেখে, ছংখেরে মানিয়া তুখ, নিবারি সুখের ভূখ, জান তো সকলি ত্ণগণি ছে;

লাম তো নকলি গুণমণি।

সন্তিনীর বালাপালা। মানি মনিম্ম মালা। নে বর্ধ ভাল ফালা। এ যে দেখি বড় স্টানাশ হে।।

अ य (मृथि दङ् मर्कामाम ।

সভীর সর্বস্থ খাছা, চোরে চুরী করে ভাষ্য না ছেরি ট্রার বাছা, শ্না ছরে ভূতে করে বাস ছে

খুন্য দরে ভূতে করে বাস।।

বারেক সদয় হও, আসি ছটো কথা কও, ি এ বন্ধে ভিসেক রও, ভবে যায় ভূতের উৎপাত হে।

তবে गास 'ভূতের উৎপাত।

ক্রজন সমুদ্য, তাঁদের এ ধন নয়, ' কি জনে। ত্ইবে ভয়, কেন এত কর পক্পাত হে।

কেন এত কর পক্পতি ৮

ছুরাশয় গুড়জন। করিভেছে নিপীভন, ভূহে অবলার ধন, প্রাণধন! কর পরিত্রান ছে। প্রাণধন! কর পরিত্রান।

় সক্ল উৎপাত হর, সতীর কল্যান কর, ওহে কান্ত দ্যাকর । দোহাই দোহাই রাখ মান হে। দোহাই দোহাই রাখ মান্॥

সপতী লাটক।

শুনিরাছি শান্তে কয়, গুরু নিন্দা ভাল দয়, শক্তে শধোগতি হয়; সভএব মনে পাই ভর ছে। শভএব মনে গাই ভয়।

কিন্ত শাবিগৰ কন, ওৱা যদি দেখি হন। বলিবৈক সে হচন, ভাই বাল প্রাণে নাগি গন্ধ হে। ভাই বলি প্রাণে নাহি সয়।

হুক্ষলীকা ভাল বটে, গোস্থানির শাস্ত্রে বটে, শকিস্ক কিছু পাপ ঘটে, ঘদাপি না হই সাবধান ছে। হলপিটানকৈ শুনীবধান।

ধনি হয় কাঁচা মেয়োন পাশতে গোঁসাই পেয়ে।, সন্মাৰণ্ম লব খেয়ো, ভাছার। না পাল পরিত্রাণ ছে। ভাছার। না পায় পরিত্রাণ।

গোসাই ক্ষাই প্রার, ক্রাবধু ধরে খায়, ধর্মপালে নাই চাস এছে। দেখি বড় ছোর দায় হে। এছে। দেখি বড় খোর দার।

ছুংখ কই কার ঠাই, দেশে আর হিছু নাই, কিন্তুপে নিস্তার পাই, দেহ ছাড়ি দেহী না পলায় হে দেহ ছাড়ি দেহী না পলাব॥

কে দেয় ইহার সাজান নিজে গোখাদক রাজান মনস্তাপে হই ভাজা, প্রজাকুল আকুলক্ষয় হে;

প্রজকুল আফুলছালয়।

এ সময় দয়মির!, থদি তব দরা হয়। তবে সব দিক রয়, দুর হয় এ বিবশ ভয় হে। দুর হয় এ বিষম ভর্ম

সপতী ব্যক্তি।

1 5

(হরিঞ্জিয়ার শলনাগার) (হরমণির প্রবেশ)

हित्रमृति। (इतिश्रिष्ठारक मध्यापन कित्रा, नाइश्कादत)।

मा! खरनित्र गां। घर खरनित्र न मर प्राथी प्राथा जाती विकित्त या। खरन खरने मरनमा। ७३०, मरन बैंट्या निः।

खावात এको। कान् करताहन। (क्याप्त गका कित्रा)। मत्

कित्रा भागी। दाश् करना भारत श्रीरात करना करित्रा।

यात मा। "मा मरत कीरात करना, की मरत नारक्षत करना है।।

হরিপ্রিয়া। (সবিয়াপে) মিরুক্ মেনে। ক্ষেমী ভাই। এতক্ষণ আমাকে জ্বাছেল; অামি অম্নি গায়ের রাগ্ গায়ে মেরো মেরো, চুপ্করে) বৈলুম্, আর কিছু বলুম না।

ক্রমনি। ব্যবভাবে)। কিছু না বলাও কি ভাল হলোচে? গোনাল ভলে এখন ছলো উট্বেন; মনে কভ ছঃখু
কর্মেন, আহা। তিনি কি এমন লোক গা। দেখলে চকুঃ
ছুড়োয়, এই যে আমি.ভাঁকে নিমে কভ রালি পর্যান্ত কভ
মন্তর শিখি, কভ উপকথ, কই, ভাঁর মুখের পানে চেয়ো কভ
শান্তরের কথা শুনি এত কি চল্যে থাকি? কর্মে। কি বল?
শোষ্ট ভাজিলেই ভূঁই শ্যাংশ ভাকের কথাই পড়ো রয়েছে;
তা হলেই কি এত চলাতে হয় গা। না, এত নেকে হাসাতে
হয়! আমরাও তো সব হলোম কুলীনের মাগ্ খামী কেমন
সামিন্ত্রী, কাল কি ধল ভাল করে চথেও দেখি নে! আমরা
কি জার পোঁদেকাপড় দি না গ্রাং মা কাল্ ক্রাটাই না!—এত
কেচকো কেচকো উঠি! "নেরের কুকুর পাতে ভোলে!!!।

• • हिल्लिका हुপ कर या। ও, या कर द दक्क यद ।।

आसामित आत ও कथ'ए०ई काय नि। कछ। छ: ल आरोद

दक्षात हरनम । ওব এই गाल । निर्देश भारति । छ।

हि॰ নেডেই ফেটো খলে। । पूर्य होत । निर्देश खात छ।

प्रका छोला लाएन गा। । अ आर्यक प्रमुख होति । निर्देश ।

लि। हिला विर्देश विर्देश ।।

('क्ष्य (गारिन (क भरतातन करेंग्र') । -)

भणि (जान) मा नामाइ , १ ५५ छल गान ता । जामाइ , १ ५५ छल न न स्थानी ता । जामाइ । जामा

. रशिक्षक्ष भाषांत्राचिर क्षामा । (४)

वित्रक (क्राफ्रांकि राष्ट्रक । प्राप्ति । तार्थः । (क्राक्षा व क्रिक्षः । क्रिक्षिप्रास्त्र कर्यावन प्रक्रिक्षः । दक्षांथा (भा जिति स्व । (क्राचा (क्राचा । ६० प्रक्रिक्षं करिया) विदेश (क्राक्षा (भा । क्रिक्ष्य (क्राक्ष्या) । उन किक्स्यताक्ष्यः । (बीक्ष्याम सर्विष्ठाः) ।

হারপ্রিষা। (বালভাবে)। এসে। এসে। এগোরাই ' এসে। বসে। বসো। (আসন আলান পূর্বক গলতত্ত্বে প্রশিশাস)।

⁽১) ভূধর বাবুর নববিবাহিতা পদী।

⁽२) अद्भ (मानाय)

ं इत्रपन्ति (हाना रनतन्)। अहे या लानिके मामान (नेक्नक्रकारक नरक व्यक्तक निम्ना कृमिया क्रिया अनिशां) ।

कदं ; मानमशि ! हित्रमचात्न तांथ । (हामा वन्दन उनदन्त) ্ इत्रम्ति। (हाना दगरन)। মান্মরীর যে বড় মার্ল শুতে পাচি ; গুরুভক্তি কেমন দেখ্ছ? ৷

विका (विकेशमारमान)। त्रांद्यः द्वांद्यः (इटन मा-े सूत्र, এখনও বড় বুদ্ধি শুলি হয় गाँहे, इहेरट, क्रायह इहेरट। े " সৰুরে মেওয়া ফলে। । '--- "তথ্য ভাত ফুক দিয়া খেতে क्षा । । । । ।

े रहिलियो। (रिहक्तकार्य)। इतः करें ? श्रीमीन्नेटक राम कल निनि गा! कथा (भारत) रहाएनत कि जात कि हुई मेरन थोटक ना :। वटल ' नविष्ट् थाएक तरक, वृक्ते मन्त्र मह मुक्त ।!!!

श्वयनि । (जनिमार्य)। अभा। वर्षे का। जूला महाकि ला। কই ? আমার পৈতে লাও। (ফল গছানত্রত, হাতে হাতে ফল यक चुत उ किए अधन)।

্রলিক। (রোধাধগাত্তি হাস্যবদনে হরর চক্ষে চকুঃ মিলাইয়। জনাতিকে) বিভা !!! — চোরের রাত্রিবাস !!! (কলগ্রহণ পুর্বক क्षकारण्)। (अगमति। अनमा रू७; (स्तरक मह्नाधन कतिमा) लिका। रम्भन होटक होटक कल मिटन। टिमिन होटक होटक है रुश शोहरत । १००० विकास विकास विकास

্ ছরিপ্রির। (বিরাগে)। ছর । ওাকি ক্রচ্ছিন্ গা ? ভোরে

कि अकवादत वरहा इत्र मा ११ । एहा है श्रीमारक निज्ञा कन एम अग्रामा।

रतमि । ज्यास्ता एक है तो । कन त्राप्त ?। (क्या क्षाप्ताम)

রশিক। (হতে ২তে কল এ২৭ করিয়া)। একো, কুফে মতি হউক। (আশীর্কাদ ক্রিয়া গ্রন্থান)।

রামরক। (জয়শকরতে সংখাধন করিয়া); ইা, কি কহিভেছিলাম মহালয়? (কণেক চিভা ফ্রিয়া)। ইণ।— আর
আপনারা ইহাও চিজা করিয়া দেখন, সংসারে সকল লোকৈই কিছু এককালে এমন বিছান হয় না যে বিশারপ পুস্তক
দৃষ্টি করিয়া ঐ শ্বরিক নিম্ম সকলই অবগ্রু হইতে পারে
ও তদত্বামী হইয়া চলিতে পারে। ইহাও জলংকর্তার এক
একার অভিপাম বটে, সংশ্রু কি? তবেই স্থির করুন,
পৌত্তালক ধন্মের সার্থকতা আছে কি না।

প্রতাপ। ভাল মহাশর । পৌত্তলিক ধর্ম নিয়নের বিল-ক্ষণ তাৎপর্য্য আছে সাই বুঝিলাম । কিন্তু জিজ্ঞাসা করি, এই পৌত্তলিক ধর্ম্মনিয়ম, সম্পূদাম ভেদে ও দেশ ভেদে পৃথক্ পৃথক্ হইবার তাৎপ্রয় কি ?।

রামত্রক। হাঁ, জিত্যাক্ত বটে । কিন্তু উত্তরকশেশ ছির-চিত্তে চিত্তা ও বিনেচনা করন, থাদ এক বিষয় উদ্দেশে পাঁচজনে স্বতন্ত্র- পাঁচটী রচনা করা ধার, তবে কি সেই পাঁচ টী রচনাই সমান হয়? সকলেরই উদ্দেশ্য ছির থাকে বটে, ফলিতার্থ, পুক্রিয়া অবশাই পুভিন্ন হইয়া পড়ে। শাত্রেওনি-র্দেশ আছে 'ভিন্নকিটি হিলোকং, ভিন্ন ভিন্ন লোকের ভিন্ন ভিন্ন প্রকৃতি। ভার, দেশ বিশেষে আগুস্থাপক বায়ুরও গতি বিশেষ আছে, ইহাও উহার এক প্রধান কারণ হইতে পারে।

খারু। ভাল ব্রহ্মচারি মহাশয়: পৌত্তনিক ধর্মনিয়ম মান্য করিয়া চলা কি ভাল । ভাহাতে কি জগদীশ্বরের আরা ধনা করা হয়। এবং সুকৃতি জম্মে।

শারশকর। (হান্যবদনে)। ও কথা আর জিজ্ঞাসা করিতে

ইইবেক কেন হে? ব্রহ্মচারি মহাশয় ইতঃপুর্বের তে। ইহাই

সিদ্ধান্ত করিয়া রাখিয়াছেন। তহহ! কি আশ্চর্মা। নহাপুরুষ ব্রহ্মচারি মহাশয়ের পুনাদে দিনা জ্ঞান পাইলাম।

গরাৎপর পরক্রক বিশ্ব বিরুচক।
বিতীয় রহিত সনাতন প্রোচক্।
গড় বলং জোড় বলং বল জুপিটর।
বোদা বলং জালা বলং বল বা ঈশ্বর।
সকলি তাহার সংজ্ঞা তিনি বিশ্বময়।
কি ফল করিয়া বলং বিফল সংশ্রয়।
কেহ তারে জিয়োভা জিয়োভা বলি স্মরে।
কেহ বা জিয়োভা নামে সদা বেব করে।
অজুত তাহার মায়া ছায়াবাজী সম।
কায়াবাজী করে জীব বহে শুধু ভ্রম।
বীক আর ক্রক নামে ভেদ জ্ঞান বার।

সপতী নটিক।

• পুরুষপ্রধান তিনি পুরুতিপুষান। রচিতে প্রকাণ্ড বিশ্ব বছরূপ ভান॥ * त्राया नात्म वाया विभि करिनधाति औरमे ৰীতা নামে প্ৰকাশিত৷ পুথিবীর কেমে **ঃ** ्रद्र**र्**गिटन दरन दरन दरकाहेहः ताली । मकान शास्त्रत कुल करम जरण गरिन क्रमत्कत श्रीर् छ। ४ क्रमत्कद श्रतः। 'রামরপে রাববের করেন উদ্ধার। বার বার কভ বার কভ জীচ, ভার। কে যাইতে পারে পার, অপার সংসারঃ क्त जल त्वाभ विद् वाधूनशी चिनि। मा कित्म कोहारत किन्नु मन्त्र वर्ता किमि । किह वर्ष वाफी छोत्र त्रमादम शास्त्र त्कह तक्षेत्र महायामी महत्राम गाउम । কেং বলে তাঁর বাস জুডিয়। নগর। কেহ বলে জালম পিছন ধ্রাধ্র । **कर्** वरन प्रशिष्ठि श्रुतीयाश आवि। জগরাথ নামে তিনি উড়িযার স্বামী। কেছ কর সেতো নয় তাঁছার নিলয়। कालीयार्हे छात्र मरभ मन। रहना इस 🕒 কেছ কন তিন হন পঞ্জাবের পজি ৷ া धतिहा नानक नाम करत्र गर्माडि ॥ ः . ः

"का मेश का गर रिकि आहेत जन कहा। · ্তৈরৰ ভাঁহার লাম ভোটাত্তে নিলয়। 🦠 । নামাগুরু নুট্যু তিনি মন্ত্রমূর্তি ধরি। ভরান ভারক্রকা মর্ত্তে অবভার ॥ किश वरने इसनारथ विदारसम जिनि। সে দেশে আমার বাস তামি ভাল চিনি। কেছ কম তাতে। নয় কানী তাঁর বাস। কেছ বলে গড়া কিয়। প্রয়াগে নিবাস। কেছ বলে আকাশে বিকাশমান তিনি। बच अन आता यक होता लोगतिसी। अहेबाल । ल'क मत कहारा दिदान। कक्ष किर्माप किनि नियान कि यान । যাহ। বলি এ সকলি ভাঁহার কিনার। মনে লয় বিশ্বময় তিনি বিশ্বাধার। পশু পদ্দী কৃটি আৰ প্ৰতম্ব ভূমাস। সকলি তাঁহার জাজ সর তার রজ। মর্কে এ দকল মন্ম করিতে এচার। **इंडेग्डिटलन निरल**्मन अद्हात। मीयकारा जिनशूर्वा जतान् जातक। ত্রিদশপ্রধান তিনি ত্রিতাপ হারক 🛊 . केरेकारण कितिस्ति । द्वरमत উদ্ধাत । . इहेल धर्ती शार्य धर्मात्र मक्षात्र ॥ 👵 🦠 ্দীননাথ ছিথীয় ুরূপেতে অবকরিন 🔬 ভাষের কারণ কলে প্রতে ধরা ধরি।

দপত্নী নাটক।

কর্মভূমি রক্ষা হেজু কুর্মারাপ ভারে। **ब्राह्म भ** सरत्न कहें। धत्रीत **छात**ा । বিশাল ব্রাহ্নাণ ব্রাভয় রাণ। উদ্ধার করেন বিশ্বরূপ ধর্মকুপ। नुर्मिष्ट आकाव डिमि कतिहा योकाद । **হিরণ্য কশিপু ববি হবেন ভূভার** দ र्यालक इरमन किनि इड्डा वामन । 'র্মির্পে ক্রিছেন রামণ নিশ্ন॥ श्रेष सहश् करत युनानिक शरा কোন রূপে করিলেন করিও সংহার। গোকুলে গোপের গুঙে কার রুণ পরি। करहम भानना नाना ष्याश भारते भारते ॥ वृक्षत्य वृक्षित करतन (७४१८७२) क्कि खारन खोहात उहा अंदर अध्य সম্ভল প্রামেতে বিভূষণার জালন। किक्ताल नाह यात कर्यन आभार কে চিনে ভাছাম বল কে চিনে ভাঁধায়। एकाकाराकी सर वासी अधिस्थिति सामह যার বার কভ বার এইরূপ খেল।। এ থেলা খেলিজে তাঁর নাহ অবহেলা। এ সব দেখিয়। জীব ভাব ব্ৰ ভাবে। मातारम शहन कंट, ङानी हत्व उत्या थामा। थामा विष्ठांत आहरतं यह आते। विनार विस्तार इस असान विस्तार ।

े भटका लाक नव नम् नात एता। सरक् क्रिक्ट है नाल मात्र धर्मा नरहा। ^र मण्यु नाश्च समा इश्च पूरशत ज्ञाकत । क्रमासारम इरव जात मध्याद गार्शत ॥ ं कामाथा निश्तकात किया नत्मक नश्मा । कत भन विमुद्धन इहेरवक का विषे अधि कि विषे विषय कि विषय कि वि द्था ध्वर दशक्य काठे द्वा खरम। ধরিয়া করালন্ত্রি এই বিশ্বপতি। সুফুতি বৃথিয়। অন্তে করিবেন গতি। শেষের সে দিন বড ভয়ক্ষর দিন। একবার ভাব মন হট্য়া প্রবীণ।। ু **ভাই বন্ধু মূত দা**রা ভারা নর কেই । यख्डे एकम कत मा त्राव এ प्रहा আৰীয় স্বজন কেছ সঙ্গে নাছি যায়। সুকুতি নহায় তথা সুকুতি সহায়।

> (নেপথে) মহানুকল কল) অভিগ্ৰায় :

> > OF !

क्षा । अ मा । तम कि । तम कि । मस्तत्न तमा । कार्ष अमि माहे, अमम वालाहे, तमानीत मस्त्रात देशका तमि॥

দশতী নাটক

মর্মন্পোড়ায়ুণী, এত জি ইইলি ছুখী।
 সতিন কি জার, ছর নাই কার, ুল

পান ম। ভূমি কি কিছু খুকী।

কি হলো রে সর্ক্রাপন ও লা। তুই কোথা শান্দ। পর না ধর নান বারণ কর নান এখন আছে গো বুকি শাস ?॥

তত্ত্ব কা করেন রাজা। কে ইছার দের সালা।। বাবারে কি করে, করেই বা ধরে ছংধানলে ধ্ইরেন্ডি ভাজা।। (অফশস্ব চলেন্ডান্ডার ধড়্কি পুস্করিনী)

(इतिव्यक्ताः स्वमनि, रक्तासरी व छत्रभरवत्र (१) क्षर्यकः) 🦈

ধ্রিপ্রিয়া। কেলাধ বিশ্বনে)। ও মা : ও মা ! সে কি ন সে কি ! সকানেশো মেয়ো একি । কাণে শুনি নাই : এমন বালাই, সোনার সংসার হৈল মেকি।

হরমনি। (আফোশে লস্তক্ডমজি করিতে করিতে)।
মর্মর্পোড়ামুখা, এত কি হইলি ছুখা।
সভিন কি আরে, হয় নাই কারে।
আন মা ভূমি কি কিছু খুকী ?॥

(३) क्षत्र वायूत कनिड

(क्यों। क्रिकेश्यदत (त्रोहन कतिएक कतिएक)।

कि देश दि नर्समान, अ मा। जूहे काथा पान् । बहु मा बहु मा, नाहन कह मा, अनम लाह्न का दूवि बान ? ॥

्ष्याम्यः (वियास्त्रः)ः

ত্র না করেন রাজ।, কে ইহার দেয় সাজা। বাবাবে কি কব, কতই বা সব, ছংখানলে ইইভেছি ভাজা।

(अग्रमंक्रतित विद्यांति)

(4

ব্ৰহ্ণারী। (কর্ণায় উদ্ধৃত করিয়া, অরশক্তকে সংসাধন পূর্বক বিশ্বায়ে)। কিঞ্জ কিঞ্জ করিয়া, অরশক্তকে সংসাধন পূর্বক ক্রেন্ড। কিঞ্জ কিঞ্জ করিয়া, অরশক্ত পূর মধ্যে এ গোল কেন্ড।

(मकरण ठकिंड ७ डेडकर्व)

জয়শন্তর। (চকিত ভাবে)। কিন্ত এ (সকলকে সম্বোধন করিলা সম্বদ্ধ)। মহাশাশ্যর। বসুন্, আমি আসিতেছি। (শন্তঃ ইয়াভিমুধে ডাড়াভাড়ি প্রেখন)।

(पांचिकिक महाविक्र)

लिमामिनी। (मेनावें निनाल महीस्थान), कन्मी रख मतन-कि थातात त्याननं कतिएक कतिएक चन्छ । हा ! शक्ति मूच छाहि-जिन ने । क्षान ने ते ता मुख्य था कि बार्स का बार्स का लिस

मर्ग्डी नाउंक

লাগিলেন, এবার ধধন চাক্রী স্থলে গমন করিলেন, কথার কথাটাও বলিয়া গেলেন না। হা 'পোডাইপালীর কপাল! অতঃপর প্রাণনাথের বহন দক্ষিত্ততে আরম্ভ ইইল বে। হায় হায়! আরও কি এ পাপিক কীবনের ভার বহন করিতে আছে ।

পতিরভা ধর্ম, নারীমাতিয় পরম ধর্ম। ছবিক কি?
অবসাবলীর তাজাই বল, তাজাই বুনি, লাজাই ভরনা, তাজাই
রূপ, তাজাই প্রন, তালাই যৌতন এবং তাজাই ইহু পর্জ্র
পরিজাণের একমাজ (২ড়। শাস্ত্রে নাল, গল, গল,
কুন্দ, ত্রিবং সূক, গল, গলিই ইউল না কেন? একাজ্র
মনে তাজার শুন্ধা কারতে পাবিলেছ নারী, নরজোক জন
করিছে পারে, শংশর লাউ। হা। এ ছুভ্রিনিল, কলপেন
লভ পতিরত্ব পাইয়াও শতু কলিতে পাবিল না। হার হাল।
কলংস্কা বিদীত ক্ট্রা হার। ।।

হা! কাত্ত, হতভাগিনীর প্রতি দেরপ একান্ড বিমুখ দে থিতেটি: আব, পৃথিবীর বেপ্রকার ভাকের বিকল্প ভাব দেখি, ইহাতে সভীত্র রম্ব রকা কবিতে পারিব, ইহাও বি-শান হইতেছে না। অতএব এই দণ্ডেট মরণ আমার পাকে মঙ্গলকর!!!।

হ। শুনিরাছি অসবাত মৃত্যু হইলে মহাপাপ হয়, কিন্তু ইহাও আমার বিলক্ষণ বিশাস হইতেছে পর্মা রক্ষা নিমিন্ত অধর্মা করিলে সে অধর্মাও ধর্মাধিক হইবেক, সংশ্য মাত্র নাই। না হয়। আমার এ অধর্মা, প্রমেশ্বর অবশ্য ক্ষা করিবেন! আনি নেরো মাত্য। তথানি আমার এটা বিলকণ বেলে ইইতেছে, যে, সতীত রক্ষা করা পরমেশ্বরের অভিপ্রেড, সন্দেই নাই। অতএব আমি তাহার অভিপ্রায় রক্ষা
নিমিন্তই অবঘাত করিতোহ। (কণেক চিন্তা)। আত্মরক্ষা
করাও তাহার অভিপ্রেড বটে। কিন্তু বিধেচনা করিবেছি,
যিনিই সতীত রক্ষা করিতে না পারি, তবে আর আ্রারক্ষা
করা কইছের, শেষে কি ছুকুল হারাইয়া অকুল মহাপাপ
সাগরে ভানিব।।।। না, না, সে কথা কিছু নুষ, অথবা
ঠিক্ বুরিতেই পারিতেছি না, যাক্টক, ঠাকুর। তুমি এ হতভাগিনীর এ মহাপাপ ক্ষমা করিও। ক্ষমা করিও।। ঠাকুবা ক্ষমা করিও —ক্ষমা করিও।। গোহাই। গোহাহ।—
লোহাই। পতিত পানন, সনাতন।।।।।

(हिर्मु अगस्छन्नरक मर्द्यायम् ७ हाम्म)

জরে গঙীর জলপায়ি কুভীরাদি জন্তুগণ! আমি পাপিনী।
তোরা পাপ ভয়ে আমাকে স্পর্শ করিতে জনিচ্ছা করিল্ না।
আমি জন্মান্তরীন পাপে পাশিনী বটি, কিন্তু ইহ জন্ম পাপ
কাহাকে বলে, জানি না। যদি ভাহাই হইবে, তবে কেন প্রাপত্যাগ করিব বল্ পাপ স্বীকার করিলে এখনি সুখ হুয়।
পাপিন্ত লোকের আমার যৌবন পান করিবার নিমিন্ত অঞ্জলি বান্ধিয়া চতুর্নিকে কিরিভেছে ।।। হা। কি হইল কি
ইইল। কেন সংসারে আনিয়াছিলাম। জন্ম বিকল করিলি
বৈ নির্দ্ধি পাপিন্ত নরাহম। । (পত্তিকে উন্দেশ রোদন)।

(जुन्तीम प्रयत्त अवत्ववदक जिल्ला किन्ना)

হ। গাড়া ভবদেব। এ সময়ে তুমি কোপয় রহিলে। তোমার বড় বৌ লক্ষের মত নিলায় হয়, একবার দেবা দিলে না। হা। বছে, তুমি জ্ঞানসান হইয়াছ। গুনিয়াহি, সকলে বজা লেলাপড়ায় মৃতিমান হইয়াছ। গুনিয়াহি কামানক বজ ভাল বালিতে। মা না কলিয়া হালিতে। হাণ এখন ভোকে সন্দ ফ্রালে বক লাজিন গায় যে রে। তুমি আমাকেশা বল্লিতে বলিয়ান ঠাকুরকীব কাছে কত গালি খাইয়াছ। হা। গুছি। এ হতভাগিনীর সন্দে কল ছাগ পাইয়াছ রে। এন মন্ত্রা একবার ভোমার চাঁদমুল দেখিতে পাইলাম লা। ।।।।

হ। বিজ্ঞা তুমি জানার জাম। কাবিও লা 'এপন, তুমি
না বোনের প্রিল হইতে পারিবে ' কক্ক বৃতিল, তাঁহাদের
অকুগত হইলা ১লিও '। (ক্ষেক টিয়া) বলং তোমার
সকল আগদ দূর চইল ।!!

হে জগদীপর ' আমার মা, বলে, ভাই, ভরিনী পুভৃতি পিতৃক্ল সজন জনমত্র নাই, (কণেক চিন্তা)। যে এক ভাই আছেন, তিনি কণন কাকেন মূলেও ভাষ্ট্র করেন না। অভ-এন এখন আমি এই মনে করিজেছি, অনেক দিনের পর ফেন বাপের বাড়ী চলিলাম দেখো সাক্র। তুমি জগভার পিতা, বেন আমাকে জনাদর করিও না, দোহাই। দোহাই!—দোহাই নিশ্বপিতা! রেন পথেও কোন বিঘুনা বটে!!!। (লোদন);

मण्डी गाँउका

ि(एमनाटक उत्भाग कतिया)

मा 'र्ष्ममा भा! जामि एकमिएक साकी निया हिन्छाम ! जामात विद्या निया हिन्छाम ! जामात विद्या निया कामीवाम कित्र !!! (कर्षक हिन्छा)। जामात जवरम दर्ज कि इ निम् लाने!! (सामन)।

ेश्! अरेवात भृथिवीत नकत सूर्य कलाञ्चल निवास ! : *

(शरण कलानी श्रामान)

(ठीव इंदेरक)

ক্রিপ্রিয়া। (উলৈপেরে)। ওরে '- একি সর্বনেশো মেরো রে ' দেশ বাঁধাতে বস্তেছে!!। আ মর্।ও কি লে।। ওঠ্ ওঠ। 'অ।!- নতীর দাত বৃদ্ধি, ছিনালের ছতিশ বৃদ্ধি।!।।

হর। (আজেশে)। মর: এ কি করে রে । আ মর্।
খাগুত। আবার একটা সোগ্ ভুলেছ। কটার বাড়ী মেরে।
থমের বাড়ী পাটাব না !! বিষ ঝাড়বো এখন, জানুন।।।
মা। বাবাকে ডাক্তো গা।।। ' আপনার বেল। আটি।
অবিটি, পরের বেলা দাঁত কপাটা।।।

ভবদেব। (উচ্চৈঃম্বরে রোদন করিতে করিতে)। ওয়া। ভূই কাথা যাস্গো!!!। (জলে কম্প দিতে উভত)।

हत। (আতাকৈ ধরিয়া ব্যস্তভাবে)। রোস্না রে। আগে। বাবা আসুন। তুই কোধা থাবি — যেঁ। — কি মা রে। মহানা মালী।।।। • কেমা। (উঠকাপরে রোদন কবিতে করিতে)। ওমা! তুই কোপা সাস্ গো! কি করিলি বৈগে।।।।

(অলে কম্প প্রধান)

खत्रभक्ता ं रायमात्म भ्रवेशवानासि स्थानमः कतिएक क्तिएक स्वास व्यम्भश्चमान भुक्षिक विविधक्राण भाष्ट्रमः क्विएक क्रिएक स्कृति क्या क स्वराहरवत भार्तियाँ तमृश्य भ्रवेशकानग्रन, भारभारन तमा अवश्चिक क्वितिएक स्वाप्तम् ।

ইং । ৭ব (বাম্পাকুল লোচনে বহিন্ধাটিতে আগ্নমন)।

र कृतीः खंका **७ अथमजान राष्ट्रा**र्न ।)

श्रीक श्रेष

১ ম, আ

41 8	36 1	मुडा ।	श्राप्ति ।
: विकास	वर्निटर	\$	\$
आन्दिनि!	প্রশ্বিনি !	ş	, 5
ंदग	दन	5	•
द ्धिं य	ब विंग	ف	24
अन्मिति !	প্রবাছনি গ	in.	· •
ঞ্ছসড়	Mètà	**	**
विश्वभ	निश्मय	*	· Ar
জোৎখালোকে,	(स्राध्यानम्य होता:	-	_
	ংগ:কে		17
নখ্ •ং	७ इन	5;	\$ 2
भक्रान	व्यक्ता।	\$ 5	4 4